Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

# दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 64 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, बुधवार 21 अगस्त 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

**सुविचार**

हमें पर द्रव्य को नहीं आत्म द्रव्य को मुख्य बनाना चाहिये।

Let's us concentrate mainly on substance of self instead of other substance.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

## संक्षिप्त समाचार

### केंद्र सरकार ने लेटरल एंट्री का फैसला लिया वापस, यूपीएससी को भी भेजा पत्र

**नई दिल्ली (आरएनएस)।** यूपीएससी में लेटरल एंट्री और इसमें रिजर्वेशन नहीं दिए जाने के विरोध के बीच एक बड़ी खबर सामने आई है. केंद्र की मोदी सरकार ने इसको लेकर एक बड़ा एक्शन लिया है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देश के बाद अब भर्ती का विज्ञापन कैंसिल करने का आदेश दे दिया गया है. बता दें कि इसको लेकर विपक्ष के साथ ही सरकार के सहयोगी दल भी लगातार विरोध कर रहे थे. बता दें कि लेटरल एंट्री के जरिए सीनियर ब्यूरोक्रेसी में एक्सपर्ट्स की नियुक्ति वाली व्यवस्था पर लगातार सवाल उठ रहे थे.

### दिव्यांगजनों के लिए रोजगार मेले का आयोजन आज

**रायपुर (आरएनएस)।** रायपुर विशेष रोजगार कार्यालय, अमेरिकन इंडिया फाउंडेशन और दिव्यांगों के लिए नेशनल कैरियर सर्विस सेंटर जबलपुर के संयुक्त तत्वाधान में दिव्यांगजनों के लिए रोजगार मेला व उपयुक्तता प्रमाण पत्र 21 अगस्त को सुबह 10 बजे से शंकर नगर स्थित बी.टी.आई ग्राउंड में आयोजित किया गया है। 10वी उत्तीर्ण अस्थिबाधित एवं मूकबधिर दिव्यांगजनों का साक्षात्कार के माध्यम से विभिन्न पदों पर भर्ती की जायेगी। उसी दिन शिविर में नेशनल कैरियर सर्विस सेंटर जबलपुर द्वारा दिव्यांगता का परीक्षण कर विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु उपयुक्तता की जांच कर उपयुक्तता प्रमाण पत्र जारी किया जायेगा।

## भाजपा की सदस्यता अभियान कार्यशाला, छत्तीसगढ़ में सीएम विष्णुदेव साय हुए शामिल

**रायपुर (विश्व परिवार)।** भाजपा के सदस्यता अभियान के तहत एक कार्यशाला मंगलवार 20 अगस्त यानी आज कुशाभाऊ ठाकरे परिसर स्थित प्रदेश कार्यालय में गई इस कार्यशाला में राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह के साथ ही भाजपा प्रदेश प्रभारी नितिन नबीन, मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव, क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जम्वाल, प्रदेश संगठन महामंत्री पवन साय उपस्थित रहे।

जानकारी के मुताबिक बैठक का सबसे अहम मुद्दा नए सदस्यों को लेकर लक्ष्य तय करना। पिछली बार जितने सदस्य बनाए गए थे, उससे ज्यादा का लक्ष्य रखा जाएगा। भाजपा के अभी करीब 37 लाख सदस्य हैं। अब हर बूथ के लिए नए और पुराने सदस्य मिलाकर दो सौ का लक्ष्य रखा गया है। मिली जानकारी प्रदेश में करीब 25 हजार बूथ है। ऐसे में सदस्यों की संख्या 50 लाख के आसपास हो जाएगी। प्रदेश सदस्यता अभियान समिति के संयोजक अनुराग सिंहदेव ने बताया कि, राष्ट्रीय संगठन ने तय किया है कि, इस बार नए सिरे से सदस्य बनाए जाएंगे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 1 सितंबर को पहला सदस्य बनाकर सदस्यता अभियान प्रारंभ होगा। जानकारी के अनुसार छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को पहला सदस्य बनाएंगे। आगेजानकारी भाजपा सदस्यता अभियान प्रभारी सिंहदेव ने बताया कि 2014 व 2019 में प्रदेश भाजपा की कुल सदस्य संख्या 31.45 लाख थी।

## कोलकाता रेप-हत्या : सुप्रीम कोर्ट ने गठित की टास्क फोर्स, डॉक्टरों की सुरक्षा के लिए करेगी सिफारिश

**नई दिल्ली (आरएनएस)।** सुप्रीम कोर्ट ने कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में ट्रेनी महिला डॉक्टर की रेप के बाद हत्या किए जाने के मामले में को सुनवाई हो रही है।इसमें मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की तीन सदस्यीय न्यायिक पीठ ने घटना पर खेद जताते देशभर में डॉक्टरों की सुरक्षा पर चिंताई। इस दौरान कोर्ट ने डॉक्टरों के लिए सुरक्षा सुरक्षा की सिफारिशों के लिए राष्ट्रीय टास्क फोर्स गठित करने का आदेश दिया।

मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ ने कहा, यह अपराध अस्पताल में रेप और हत्या से संबंधित मामला नहीं है, बल्कि यह पूरे भारत में डॉक्टरों की सुरक्षा के प्रणालीगत मुद्दे से संबंधित है। इससे महिला डॉक्टर काम पर जाने से डर रही है।उन्होंने कहा, हम एक राष्ट्रीय टास्क फोर्स का गठन कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि वे वरिष्ठ और कनिष्ठ डॉक्टरों के लिए सुरक्षा उपायों के लिए देश भर में अपनाए जाने वाले तौर-तरीकों की सिफारिशें दें।

सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई टीम से 22 अगस्त तक स्टेटस रिपोर्ट प्रस्तुत करने को भी कहा है। कोर्ट ने कहा कि रिपोर्ट में शुरुआत से लेकर अब तक हुई कार्रवाई की पूरी जानकारी होनी चाहिए।इसी तरह कोर्ट ने कहा, हम इस तथ्य से बहुत चिंतित हैं कि पीड़िता का नाम पूरे मीडिया में है। उसकी तस्वीरें और वीडियो पूरे मीडिया में वायरल हो रही है और यह बेहद चिंताजनक विषय है। यह कानून का उललंघन है। कोर्ट ने कहा, ऐसा प्रतीत होता है कि अपराध का पता सुबह के समय चला। इसके बाद प्रिंसिपल ने इसे आत्महत्या दिखाने की कोशिश की और माता-पिता को शव तक देखने की अनुमति नहीं दी।

### कोलकाता कांड को लेकर सुप्रीम कोर्ट का आदेश, सोशल मीडिया से हटानी होगी पीड़िता की तस्वीर

**नई दिल्ली (आरएनएस)।** कोलकाता रेप कांड को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सोशल मीडिया से पीड़िता की सभी तस्वीरों को हटाने का आदेश दिया है। याचिकाकर्ता ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के मुताबिक रेप पीड़िता की पहचान को सार्वजनिक नहीं किया जा सकता है। उसके बावजूद पीड़िता की तस्वीर सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर है। सुप्रीम कोर्ट ने कोलकाता कांड मामले में खुद संज्ञान लेते हुए आज सुनवाई की। अदालत ने घटना से जुड़े कई पहलुओं पर सवाल खड़े किए। सुप्रीम कोर्ट ने घटना की जांच कर रही सीबीआई से 22 अगस्त तक स्टेटस रिपोर्ट मांगी है। इसके साथ-साथ अस्पतालों में डॉक्टरों की सुरक्षा के लिए एक नेशनल टास्क फोर्स भी गठित करने का आदेश दिया। आज की सुनवाई में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि ऐसा लगता है कि अपराध का पता सुबह-सुबह ही चल गया था, लेकिन मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य ने इसे आत्महत्या बताने की कोशिश की। इसके साथ-साथ अदालत ने कहा कि जब आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के प्राचार्य का आचरण जांच के घेरे में है तो उन्हें कैसे तुरंत किसी दूसरे कॉलेज में नियुक्त कर दिया गया।

## रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच यूक्रेन जाएंगे पीएम मोदी, जेलेंस्की ने दिया न्योता

**कीव (एजेंसी)।** रूस-यूक्रेन के बीच युद्ध अभी भी जारी है। दोनों ही देश एक दूसरे पर हमले कर रहे हैं। इसी बीच भारतीय विदेश मंत्रालय ने बताया कि पीएम मोदी जल्द ही यूक्रेन यात्रा पर जा सकते हैं। रूस यात्रा के लगभग दो महीने बाद ही पीएम मोदी का यूक्रेन दौरा बेहद ही खास माना जा रहा है।

पीएम मोदी पोलैंड की भी यात्रा करेंगे। पीएम मोदी 21 से 23 अगस्त के बीच दोनों देशों का दौरा कर सकते हैं। विदेश मंत्रालय ने कहा है कि पीएम मोदी यूक्रेन के अलावा पोलैंड का भी दौरा करेंगे। बता दें कि पोलैंड नाटो का सक्रिय सदस्य हैं। रूस के साथ संघर्ष के बाद पीएम मोदी की यूक्रेन की यह पहली यात्रा होगी। ये यात्रा इसलिए भी खास मानी जा रही है क्योंकि पीएम मोदी 45 साल बाद पोलैंड और 30 साल बाद यूक्रेन जाने वाले पहले प्रधानमंत्री बनेंगे। कीव में प्रधानमंत्री मोदी और प्रेसिडेंट जलेंस्की की मुलाकात होगी। पीएम मोदी पोलैंड के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति, इसके अलावा यूक्रेन के राष्ट्रपति से मुलाकात करेंगे। पीएम मोदी ने इससे पहले रूस का दौरा किया था। जहां उन्हें रूस के सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किया गया था।

## सभी सरकारी अस्पतालों में किए जाएं सुरक्षा के कड़े इंतजाम

**स्वास्थ्य परिवार कल्याण मंत्रालय का निर्देश**

**नई दिल्ली (आरएनएस)।** केंद्रीय स्वास्थ्य परिवार कल्याण मंत्रालय ने आरजी कर मेडिकल कॉलेज में हुई घटना के मद्देनजर एम्स सहित सभी केंद्रीय अस्पतालों को पत्र लिखा है। सभी अस्पतालों को सुरक्षा के व्यापक इंतजाम उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए हैं। पत्र में कहा गया है कि चिकित्साकर्मियों के साथ अपराध मंजूर नहीं है।

पत्र में यह भी कहा गया कि निजी अस्पतालों की तुलना में सरकारी अस्पताल मरीजों के लिए सुलभ होते हैं। इसी वजह से निजी अस्पतालों में आपराधिक कृत्य अधिक होते हैं। ऐसे में यहां सुरक्षा के उचित बंदोबस्त करना अस्पताल का दायित्व बनता है। इसमें लिखा है कि जिस तरह से पिछले कुछ दिनों से चिकित्सकर्मियों के साथ हिंसक व आपराधिक कृत्य की खबरें प्रकाश में आ रही हैं, उससे स्पष्ट है कि मौजूदा सुरक्षा-व्यवस्था अपर्याप्त है।

पत्र में निर्देश दिए गए हैं कि अस्पताल के प्रवेश व निकासी द्वार पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं, ताकि आने-जाने वाले सभी लोगों की गतिविधियों को कैमरों में कैद किया जा सके। अगर कोई अप्रिय घटना कैद होती है, तो अपराधी को तुरंत पकड़ने में मदद मिले।

चिट्ठी के मुताबिक अस्पताल में निकासी और प्रवेश द्वार साथ ही सभी संवेदनशील परिसरों में भी कैमरे लगाए जाएं। इसके अलावा परिसर में सभी प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मियों को पर्याप्त संख्या में तैनात किया जाए, ताकि किसी भी अप्रिय स्थिति पर समय रहते काबू पाया जा सके। साथ ही कहा गया है कि मरीजों के साथ दो ज्यादा तीमारदार को अस्पताल में प्रवेश करने की इजाजत न दी जाए। वहीं, अगर कभी इस बात का पता चले कि कोई मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति अस्पताल में है और अंदेशा हो कि वो किसी को नुकसान पहुंचा सकता है, तो उसे तत्काल बाहर किया जाए।

खत में उचित प्रशिक्षण के भी निर्देश हैं। इसमें सलाह दी गई है कि अस्पताल में तैनात सुरक्षाकर्मियों को समय-समय पर उचित प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाए, ताकि अगर कभी ऐसी स्थिति पैदा हो, तो उस पर आसानी से काबू किया जा सके।

## पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की 80वीं जयंती पर प्रधानमंत्री मोदी, मल्लिकार्जुन खरगे और राहुल गांधी ने दी श्रद्धांजलि

**नई दिल्ली (आरएनएस)।** देश के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की आज 80वीं जयंती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और राहुल गांधी ने पूर्व पीएम राजीव गांधी की 80वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्व पीएम राजीव गांधी को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि देते हुए एक पोस्ट किया। उन्होंने लिखा- हमारे पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि।

वहीं, कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने पूर्व पीएम राजीव गांधी को याद किया। उन्होंने कहा, आज देश सद्भावना दिवस मना रहा है। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी, भारत के महान सपूत थे। उन्होंने करोड़ों भारतीयों में आशा की किरण जगाई और अपने अभूतपूर्व योगदान से भारत को 21वीं सदी में पहुंचाया। उन्होंने आगे कहा, मतदान की आयु घटाकर 18 वर्ष करना, पंचायती राज को मजबूत करना, दूरसंचार और आईटी क्रांति, कम्प्यूटरीकरण कार्यक्रम, निरंतर शांति समझौते, महिला सशक्तिकरण, सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम और समावेशी शिक्षा पर जोर देने वाली नई शिक्षा नीति जैसे उनके कई सुखद कदम देश में परिवर्तनकारी बदलाव लाए। हम भारत रत्न राजीव गांधी को उनकी जयंती पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इस बीच लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी अपने पिता की 80वीं जयंती पर नई दिल्ली स्थित वीर भूमि पहुंचे। यहां उन्होंने पिता राजीव गांधी को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने एक तस्वीर एक्स पर पोस्ट कर पिता को याद किया। उन्होंने कहा, एक करुणामय व्यक्तित्व, सौहार्द और सद्भावना के प्रतीक। पापा, आपकी सीख मेरी प्रेरणा है और भारत के लिए आपके सपने मेरे अपने, आपकी यादें साथ ले कर इन्हें पूरा करूंगा।

कांग्रेस नेता केसी वेणुगोपाल ने पूर्व पीएम को श्रद्धांजलि देते हुए कहा, मैं पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न राजीव गांधी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। हमसे बहुत जल्दी छिन जाने वाले वे एक दूरदर्शी व्यक्ति थे, जिनके सुधारों ने भारत को 21वीं सदी के लिए तैयार किया। अपने एक कार्यकाल में उन्होंने इस बात का उदाहरण प्रस्तुत किया कि भारत को किस तरह से विभिन्न क्षेत्रों में संचालित किया जाना चाहिए, चाहे वह विदेश नीति हो, रक्षा हो, आर्थिक सुधार हो या लोकतंत्र को मजबूत करना हो। उनके मूल्य हमेशा हमारे कार्यों में हमारा मार्गदर्शन करेंगे और उनकी कमी हमेशा महसूस की जाएगी।

## बहनों के आगमन से गुलजार हुआ मुख्यमंत्री निवास

**रायपुर (आरएनएस)।** छत्तीसगढ़ में रक्षाबंधन का पर्व इस बार खास बन गया, जब राज्य की महिलाओं ने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के प्रति अपने स्नेह और सम्मान को एक अनूठे तरीके से व्यक्त किया। महिलाओं ने मुख्यमंत्री के लिए विशेष रूप से राखियां बांधी, जो न केवल भाईचारे का, बल्कि उनकी सुरक्षा और कल्याण के प्रति महिलाओं के गहरे विश्वास का भी प्रतीक हैं। रक्षा बंधन पर्व पर आज प्रदेशभर से मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय को राखी बांधने बड़ी संख्या में आई महिला बहनों से मुख्यमंत्री निवास गुलजार रहा।

मुख्यमंत्री को राखी बांधने आई महिला समूह की सदस्यों ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की सरकार राज्य में महिलाओं के सशक्तिकरण और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए लगातार काम कर रही हैं। उनके इस समर्पण को देखते हुए हमने सोचा कि इस रक्षाबंधन पर उनके प्रति अपनी भावनाओं को विशेष तरीके से व्यक्त किया जाए। राखी बांधना तो एक परंपरा है, लेकिन हमारे लिए यह एक संदेश देने का भी तरीका है कि हम उनके नेतृत्व पर विश्वास करते हैं और उन्हें अपना भाई मानते हैं। इसलिए महिलाओं ने मुख्यमंत्री का 'थैंक यू विष्णु भैया' वाली राखी बांधकर आभार व्यक्त किया। इस राखी के निर्माण में शामिल महिलाओं ने राखियां बनाकर यह संदेश दिया कि वे उनके द्वारा किए गए कार्यों की सराहना करती हैं।

## कांग्रेस विधायक दल ने बनाई रणनीति, 24 को प्रदेशभर में कांग्रेस का प्रदर्शन

**रायपुर (विश्व परिवार)।** हाईवोल्टेज सियासी ड्रामे के बाद बलौदाबाजार पुलिस ने देवेंद्र यादव को गिरफ्तार कर लिया। उसकी गिरफ्तारी के बाद प्रदेशभर में सियासी तूफान आ गया है।इस मामले को लेकर कांग्रेस 24 अगस्त को सभी जिला मुख्यालयों में प्रदर्शन करेगी। बता दें कि इस बैठक में कांग्रेस के बड़े नेताओं सहित विधायकों भी शामिल हुए। बैठक में नेता-प्रतिपक्ष डॉ. चरण दास महंत ने विधायकों से चर्चा की। वहीं इस मामले में कांग्रेस ने सड़क से सदन तक लड़ाई छेड़ने की घोषणा कर दी है। विधायक दल की बैठक के बाद कांग्रेस विधायकों ने रायपुर सेन्ट्रल जेल पहुंचकर विधायक देवेन्द्र यादव से मुलाकात की। जेल प्रशासन की ओर से नेता प्रतिपक्ष डां.चरण दास महंत, पूर्व सीएम भूपेश बघेल, पूर्व मंत्री रविन्द्र चौबे, उमेश पटेल और विधायक लाल जीत सिंह राठिया को देवेन्द्र यादव से मुलाकात करने की इजाजत दी गई। बाकी विधायकों को देवेन्द्र यादव से मिलने की इजाजत नही दी गई।

राजीव भवन में नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत की अध्यक्षता में सभी विधायकों की बैठक बुलाई गई। मंगलवार की सुबह 11:30 बजे से कांग्रेस कार्यालय राजीव भवन में हुई। इस बैठक में सभी विधायक बुलाए गए थे। इस दौरान बैठक में सरकार को घेरने की रणनीति तैयार की गई। उनकी गिरफ्तारी के खिलाफ कांग्रेस पार्टी प्रदेश में माहौल तैयार करने की कोशिश में है। विधायक देवेंद्र यादव की गिरफ्तारी के खिलाफ कांग्रेस सड़क से लेकर सदन तक की लड़ाई लड़ने की तैयारी में है। बलौदाबाजार हिंसा मामले में भिलाई नगर विधायक देवेंद्र यादव की गिरफ्तारी को लेकर प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों में बड़ा प्रदर्शन करने वाली है। कांग्रेस 21 अगस्त को ये प्रदर्शन करने वाली थी, लेकिन 22 अगस्त के कार्यक्रम के कारण इसे आगे बढ़ाकर 24 अगस्त कर दिया गया है।

## देवेन्द्र यादव की जमानत याचिका खारिज, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा हुई पेशी

**रायपुर (विश्व परिवार)।** बलौदाबाजार हिंसा मामले में गिरफ्तार भिलाई नगर विधायक देवेंद्र यादव की न्यायिक रिमांड को कोर्ट ने 7 दिनों के लिए बढ़ा दिया है। जिला सत्र न्यायालय बलौदाबाजार में जज अजय खाखा के समक्ष वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए सुनवाई हुई, जहां कोर्ट ने विधायक देवेंद्र की जमानत याचिका खारिज कर दी। साथ ही उनकी न्यायिक रिमांड को 7 दिनों के लिए बढ़ा दिया है। अब वे 27 अगस्त तक न्यायिक हिरासत में जेल में बंद रहेंगे। विश्वस्त सूत्रों की मानें तो भीम रेजीमेंट के एक बड़े पदाधिकारी के पुलिस को दिए बयान के आधार पर विधायक देवेंद्र यादव की गिरफ्तारी हुई है। जानकारी के मुताबिक बलौदाबाजार हिंसा मामले में विधायक देवेंद्र यादव की गिरफ्तारी के खिलाफ कांग्रेस सड़क से लेकर सदन तक की लड़ाई लड़ने की तैयारी में है। प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों में 24 अगस्त को प्रदर्शन किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि राजीव भवन में कांग्रेस विधायक दल की बैठक हुई। बैठक के बाद गिरफ्तार भिलाई विधायक से मिलने पहुंचे पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने प्रदेश सरकार पर देवेंद्र यादव को धोखे से गिरफ्तार करने का बड़ा आरोप लगाया है। पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि, देवेंद्र ने बताया है कि, उसे स्नढ्ढक्र की कॉपी नहीं दी गई है। न ही बताया गया है कि, किस अपराध में उसे गिरफ्तार किया गया है। देवेंद्र को जितनी भी नोटिस मिली वो धारा 160 के तहत थी, जो गवाही के लिए होती है। गवाही देनी है, यह कहकर पुलिस देवेंद्र को ले गई। उल्लेखनीय है कि, देवेंद्र यादव से मिलने कांग्रेस के विधायक भूपेश बघेल, चरणदास महंत, रविंद्र चौबे, उमेश पटेल समेत करीब 15 विधायक सेंट्रल जेल पहुंचे थे।

राजीव भवन में नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत की अध्यक्षता में सभी विधायकों की बैठक बुलाई गई। मंगलवार की सुबह 11:30 बजे से कांग्रेस कार्यालय राजीव भवन में हुई। इस बैठक में सभी विधायक बुलाए गए थे। इस दौरान बैठक में सरकार को घेरने की रणनीति तैयार की गई। उनकी गिरफ्तारी के खिलाफ कांग्रेस पार्टी प्रदेश में माहौल तैयार करने की कोशिश में है।

## महाराष्ट्र : बच्चियों के यौन शोषण मामले में भड़की हिंसा, स्कूल में तोड़फोड़

**बदलापुर (आरएनएस)।** महाराष्ट्र के बदलापुर इलाके में एक स्कूल में छात्राओं के साथ यौन शोषण के मामले ने बड़ा बवाल खड़ा कर दिया है। गुस्साए लोग सड़कों पर उतर आए हैं और भारी विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। बदलापुर रेलवे स्टेशन पर भी प्रदर्शनकारियों ने कब्जा कर लिया है, जिसके कारण कई ट्रेनों को डायवर्ट करना पड़ा है। प्रदर्शनकारी बदलापुर स्थित स्कूल के बाहर हजारों की संख्या में लोग इकट्ठा हो गए हैं और पुलिस को उन्हें नियंत्रित करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। पुलिस ने स्कूल के बाहर आंसू गैस के गोले भी छोड़े और कुछ प्रदर्शनकारी स्कूल के अंदर तोड़फोड़ करते हुए नजर आए हैं। स्कूल की खिड़कियां, डेस्क, बेंच, और कुर्सियां तोड़ दी गई हैं। यह विवाद तब शुरू हुआ जब मुंबई के ठाणे जिले के बदलापुर में एक स्कूल के लेडीज टॉयलेट में दो 4 साल की मासूम लड़कियों के साथ यौन शोषण की घटना सामने आई।

## राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार प्रदान किये

**दिल्ली (पीआईबी)।** राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने आज (20 अगस्त, 2024) राष्ट्रपति भवन के सांस्कृतिक केंद्र में आयोजित एक समारोह में राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार-2023 प्रदान किए।

इस अवसर पर सम्बोधन में राष्ट्रपति ने कहा कि 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए खनिज उत्पादन में आत्मनिर्भर होना महत्वपूर्ण है। उन्होंने यह कहा कि मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सरकार राष्ट्रीय भूविज्ञान डेटा रिपॉजिटरी पोर्टल के माध्यम से भू-वैज्ञानिक डेटा के एकीकरण, खनिज संसाधनों की खोज और खनन में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) और उभरती प्रौद्योगिकियों के उपयोग जैसे कई कदम उठा रही है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि ये कदम हमें अपनी प्राकृतिक संपदा को बेहतर ढंग से समझने और उसका उचित उपयोग करने में सक्षम बनाएंगे।

राष्ट्रपति ने कहा कि सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ते हुए भारत नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। बड़े पैमाने पर स्वच्छ ऊर्जा को अपनाने के हमारे प्रयास इस लक्ष्य के अनुरूप हैं। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हरित परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण खनिजों और दुर्लभ पृथ्वी तत्वों जैसे खनिजों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि राष्ट्रीय महत्वपूर्ण खनिज मिशन की स्थापना से भारत को आत्मनिर्भर बनने और आर्थिक विकास और हरित परिवर्तन के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण खनिजों की मूल्य श्रृंखला को सुदृढ़ करने में सहायता मिलेगी।

राष्ट्रपति ने कोलकाता में राष्ट्रीय भूस्खलन पूर्वानुमान केंद्र की स्थापना पर प्रसन्नता व्यक्त की। यह पूर्वानुमान केन्द्र भूस्खलन की आशंका वाले सभी राज्यों के लिए पूर्व चेतावनी बुलेटिन जारी करेगा। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हमें अपनी प्रणालियों को इतना सटीक और विश्वसनीय बनाना होगा कि भूस्खलन और बाढ़ जैसी आपदाओं से कम से कम क्षति पहुंचे।

राष्ट्रपति ने कहा कि भारत का भूवैज्ञानिक इतिहास इसकी चट्टानों, मैदानों, जीवाश्मों और समुद्री तलों में दर्ज है और हम इसे अपनी भूवैज्ञानिक विरासत कह सकते हैं। उन्होंने युवाओं से भू-पर्यटन और भू-विरासत स्थलों के महत्व को समझने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि भू-पर्यटन लोगों को भूविज्ञान के क्षेत्र में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने का माध्यम हो सकता है।

राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार की स्थापना भारत सरकार के खान मंत्रालय द्वारा भूविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धियों और उत्कृष्ट योगदान के लिए व्यक्तियों और टीमों को सम्मानित करने के उद्देश्य से की गई है।

## संक्षिप्त समाचार

### भाइयों ने बहनों को जीवन भर उनकी रक्षा का दिया वचन, अस्पताल में भर्ती मरीज ने डॉक्टर को बांधी राखी



**नवापारा राजिम ( विश्व परिवार )।** भाई बहन के अटूट प्रेम का प्रतीक पर्व रक्षाबंधन पूरे भारतवर्ष में हर्षोल्लास मनाया गया। रक्षाबंधन के अवसर पर पूरे देशभर में भाइयों की कलाई पर उनकी सगी और धर्म बहनों ने राखी बांधी। बदले में भाइयों ने भी बहनों को जीवन भर उनकी रक्षा का वचन दिया। वहीं आज स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोबरा नवापारा में डॉक्टर और मरीज के संबंध से परे, एक पवित्र रिश्ता देखने को मिला। आज यहां इलाज के लिए भर्ती एक मरीज़ शिल्पा जैन ने अस्पताल के प्रभारी डॉक्टर तेजेन्द्र साहू को राखी बांधकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। डॉक्टर साहू ने भी बदले में, आजीवन उनका भाई समान बने रहकर उनके मान-सम्मान की रक्षा का वचन दिया। अस्पताल में बने इस पवित्र रिश्ते के मौके पर मौजूद लोग भी यह देखकर खुशी व्यक्त करते रहे।

### विष्णु के सुशासन का असर : प्रधानमंत्री मातृत्व वंदन योजना का 2 साल से रूका पैसा, एक फोन पर मिला

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के सुशासन में अब एक फोन पर समस्या का समाधान मिल रहा है। कलेक्टर डॉ गौरव सिंह के मार्गदर्शन में रायपुर जिले में शिकायतों का त्वरित निराकरण हो रहा है। विकासखंड धरसींवा के दंतरेगा ग्राम सभा निवासी श्रीमती रोहनी नेताम का प्रसव रायपुर के कालीबाडी स्थित मातृ एवं शिशु चिकित्सालय (एमसीएच) अस्पताल में दिसंबर 2022 को हुआ था। उनको केंद्र सरकार द्वारा प्रधानमंत्री मातृत्व वंदन योजना के तहत मिलने वाली 5 हजार रूपए की राशि दो साल से नहीं मिली थी। जिसको लेकर उन्होंने जिला प्रशासन के जनसमस्या निवारण कॉल सेंटर में फोन किया। जिसके बाद संबंधित विभाग को प्रकरण की जानकारी दी गई। जिसके बाद मिली जानकारी के अनुसार आवेदक ने बैंक खाते की सही जानकारी नहीं दी थी। जिससे भुगतान नहीं हो पा रहा था। जिसके बाद संबंधित विभाग ने आवेदिका को इसकी जानकारी दी। आवेदक के द्वारा बैंक खाते की सही जानकारी प्रदान की गई। जिसके बाद योजना की राशि का भुगतान हो गया है। समस्या का निराकरण होने के बाद शिकायतकर्ता श्रीमती रोहनी नेताम ने संतुष्टी जताई और मुख्यमंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया।

# मुख्यमंत्री जनदर्शन के आवेदनों का सर्वोच्च प्राथमिकता से निराकरण करें : कलेक्टर

### कलेक्टर दीपक सोनी ने की विभागीय कार्यों की समीक्षा




**बलौदाबाजार ( विश्व परिवार )।** कलेक्टर श्री दीपक सोनी ने मंगलवार को संयुक्त जिला कार्यालय के सभागार में समय -सीमा की बैठक में विभागीय कार्यो की समीक्षा की। उन्होंने मुख्यमंत्री जनदर्शन अंतर्गत विभागों को प्राप्त आवेदनों का सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ गुणवत्तापूर्ण निराकरण समय-सीमा में करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। उन्होंने केंद्र एवं राज्य शासन के महत्वकांक्षी योजनाओं के क्रियान्वयन की विस्तृत समीक्षा करते हुए जरुरी निर्देश दिए।

कलेक्टर ने जल जीवन मिशन अंतर्गत हर- घर जल की प्रगति की समीक्षा करते हुए जल स्त्रोत चयन के लिए शेष 171 स्थलों का शीघ्र चयन करने तथा जिन ग्रामो में शतप्रतिशत कार्य पूर्ण हो गया है उनमे सहकारी समिति के माध्यम से संचालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने जिले में शुरू किये गए नवाचारी कार्यक्रम संपर्क के माध्यम से लोगों द्वारा बताए गए समस्याओं की जानकारी लेने तथा निराकरण की जानकारी उसी माध्यम से देने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि फ़ोन से प्राप्त समस्या को सम्बंधित विभाग को तत्काल सूचित करें। कलेक्टर ने पीएम जनमन योजना के तहत वशेष पिछडी जनजाति के लोगों को शासन की योजनाओं से शतप्रतिशत लाभान्वित करने कहा। उन्होंने बल्दाकच्छार और औराई के विशेष पिछडी जनजाति कमार परिवारों के सदस्यों का आधार कार्ड, आयुष्मान कार्ड बनाने अभियान चलाने के निर्देश दिए। राज्य शासन के निर्देशानुसार स्कूलों के युक्तियुक्तकरण की कार्यवाही के लिए एसडीएम की अध्यक्षता में गठित समिति के द्वारा मर्ज किये जाने वाले स्कूलों की जानकारी समय पर जिला कार्यालय को भेजने के निर्देश दिए गए।

बैठक में कलेक्टर जनदर्शन, सीपी ग्राम्स, जन शिकायत पीजीएन एवं लोक सेवा गारंटी आदि के माध्यम से प्राप्त आवेदनों का निराकरण के साथ ही आयुष्मान भारत, पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना, दीनदयाल अत्योदय योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, पीएम आवास योजना (ग्रामीण), पीएम उज्वला योजना, पीएम विश्वकर्मा योजना, पीएम किसान सम्मान निधि योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, पीएम पोषण अभियान, गांवों का सर्वेक्षण और ग्रामीण क्षेत्रों में तात्कालिक प्रौद्योगिकी के साथ मानचित्रण (स्वामित्व), जनधन योजना, पीएम जीवन ज्योति योजना, सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, इसके अतिरिक्त सिकल सेल एनीमिया उन्नमूलन, वन अधिकार पट्टा व्यक्तिगत एवं सामूहिक, वन धन केंद्र, पीएम स्वनिधि योजना, पीएम विश्वकर्मा योजना, पीएम मुद्रा लोन योजना, स्टार्टअप इंडिया, पीएम आवास योजना (शहरीय), स्वच्छ भारत अभियान (शहरीय) पीएम जन औषधि केंद्र, पीएम सौभाग्य योजना की समीक्षा की गई।

बैठक में सीईओ जिला पंचायत सुश्री दिव्या अग्रवाल, सभी एसडीएम, तहसीलदार, जनपद सीईओ, सीएमओ एवं विभिन्न विभागों के जिलाधिकारी उपस्थित थे।

# विधायक देवेन्द्र यादव के साथ गये असामाजिक तत्वों ने बलौदाबाजार हिंसा को अंजाम देने में मुख्य भूमिका निभाई : मंत्री दयालदास बघेल

### खाद्य मंत्री दयालदास बघेल ने बलौदाबाजार घटना के संबंध में ली प्रेसवार्ता

**रायपुर ( आरएनएस )।** खाद्य मंत्री दयाल दास बघेल ने मंगलवार को न्यू सर्किट हाउस रायपुर में बलौदाबाजार की घटना के संदर्भ में भिलाई नगर के कांग्रेसी विधायक देवेन्द्र यादव के अपराधिक कृत्यों एवं उक्त घटना में उनकी संलिप्तता के संबंध में प्रेसवार्ता ली। उन्होंने बलौदाबाजार में 10 जून की घटना के लिए भिलाई नगर के विधायक देवेन्द्र यादव को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि सतनामी समाज की असहमति के बावजूद भी वह जबरन सतनामी समाज के आयोजन में पहुंचे। मंत्री ने बताया कि विधायक यादव भिलाई से बहुत से असामाजिक और शरारती तत्वों को भी अपने साथ ले गए थे। उन्होंने लोगों को बलौदाबाजार कलेक्टोरेट परिसर और पुलिस अधीक्षक कार्यालय के घेराव और वहां तोड़-फोड़ आगजनी के लिए उकसाया। विधायक यादव के साथ गये असामाजिक तत्वों ने भी इस घटना को अंजाम देने में मुख्य भूमिका निभाई।

प्रेसवार्ता के पूर्व में मीडिया प्रतिनिधियों को वीडियो फुटेज भी दिखाया गया, जिसमें विधायक श्री यादव प्रमुखता से लोगों को भड़काते नजर आए। मंत्री श्री बघेल ने आगे कहा कि इस वीडियो में आपने देखा कि एक संगीन प्रकरण में गिरफ्तारी के बावजूद किस तरह आदतन अपराधी की तरह से विधायक देवेन्द्र यादव व्यवहार करते नजर आ रहे हैं। किस तरह वे सतनाम समाज के पवित्र झंडे को अपने पावों पर रख रहे हैं। इस तरह आप इनकी मंशा को समझ सकते हैं। उन्होंने कहा कि पिछले 10 जून को बलौदाबाजार में हुई घटना बेहद ही दुखद है। वास्तव में एक शांतिपूर्ण आन्दोलन को भड़का कर उसे हिंसक बना देना कांग्रेस के टूलकिट का हिस्सा था। यहां तक कि अमर गुफा की घटना भी इनके टूल किट का ही हिस्सा थी। प्रदेश भर में ऐसी घटनाएं हो रही है या साजिश रची जा रही है। कांग्रेस जहां भी कमजोर होती है या सत्ता में नहीं होती है वहां वह अराजकता पैदा करती है, देश भर में अलग-अलग बहानों से उपद्रव फैलाते रहने की ही एक कड़ी बलौदाबाजार की हिंसा भी थी जिसके टूल कांग्रेस विधायक देवेन्द्र यादव हैं। उन्होंने कहा कि एक सोची-समझी साजिश के तहत बिना बुलाये कांग्रेस विधायक भिलाई नगर से बलौदाबाजार पहुंचे, उन्हें मंच पर समाज के लोगों ने चढ़ने भी नहीं दिया, फिर भी वे नीचे बैठ कर दंगे के साजिश को अंजाम दिया।

मंत्री बघेल ने कहा कि आखिर समाज के बैठक में भिलाई नगर के विधायक का क्या काम हो सकता था भला। आप गौर करेंगे तो पाएंगे कि कांगेस के भी अन्य अनेक विधायक वहां मौजूद नहीं थे, लेकिन देवेन्द्र यादव वहां फसाद कराने भिलाई से पहुंच गए। बलौदाबाजार और भाटापारा के कांग्रेस विधायक भी वहां नहीं पहुंचे थे लेकिन कांग्रेस के टूल के रूप में देवेन्द्र यादव पहुंच गए। बुलावे के बिना कार्यक्रम स्थल पर जा कर अपने समर्थकों को भड़का कर व्यापक आगजनी एवं तोड़फोड़ किया गया।

# चिल्ड्रन इस्लामिक ऑर्गेनाइजेशन द्वारा फायरलैस कुकिंग कम्पटीशन में शहर के 40 बच्चों ने हिस्सा लिया और अपनी प्रतिभा दिखाई



**रायपुर ( विश्व परिवार )।** बैरन बाजार स्थित अल-फलाह टावर में को चिल्ड्रन इस्लामिक ऑर्गेनाइजेशन (CIO) द्वारा फायरलैस कुकिंग कंपटीशन का आयोजन किया गया जिसमें रायपुर शहर के 40 बच्चों ने हिस्सा लिया और अपनी प्रतिभा दिखाई।

सीईओ द्वारा आयोजित ये कंपटीशन में 7 साल से लेकर 15 साल तक बच्चों ने हिस्सा लिया और सभी बच्चों ने विभिन्न प्रकार के बिना गैस और चूल्हे के डिशेस बनाई सभी बच्चों ने बहुत ही लगन और मेहनत के साथ बोहात से डिशेस बनाए जिस में केक,दही बड़ा , विभिन्न प्रकार की मिठाइयां, भेल, पापड़ी चाट, सैंडविच, शेक, जूस, लड्डू, सूप, आदि प्रकार के डिशेस बनाकर बच्चों ने अपना हुनर दिखाया।

इस प्रतियोगिता में फर्स्ट सेकंड थर्ड विजेता को गिफ्ट हैंपर दिया गया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान नायरा फारूकी पिता फारूक लीला, दूसरा स्थान अबू बकर सिद्दीकी पिता जुनैद सिद्दीकी, तीसरा स्थान मोहम्मद हमज़ा पिता मोहम्मद महबूब ने हासिल किया।

सभी बच्चों ने बहुत ही स्वादिष्ट पकवान बनाएं साथ ही सभी बच्चों को संतावना पुरस्कार भी दिया गया इस प्रतियोगिता के जज श्रीमती साइमा और श्रीमती सन खान रहे जिन्होंने बच्चों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने पर उनकी हौसल अफ्ज़ाई की और भविष्य में इसी तरह हर फील्ड में आगे बढ़ते रहने के लिए बोहात से टिप्स दिए।

इस प्रतियोगिता के ऑर्गेनाइजर ष्ठ्वश के कोऑर्डिनेटर मोहतरमा जुवेरिया साहेबा रहे और इस प्रतियोगिता को कामयाब बनाने में ष्ठ्वश के वॉलिंटियर वायेज़ा खानम, आलिया , सफिया, सुमय्या, तौफीला आदि ने अहम भूमिका निभाई।


एनएमडीसी
NMDC

**NMDC APOLLO CENTRAL HOSPITAL**
**(Managed by Apollo Hospitals Enterprise Ltd., Hyderabad)**
**Dist. – Dantewada, Bacheli – 494 553 (Chhattisgarh)**
**Ph: 07857-230050, email- nmdcapollo@gmail.com**

Apollo HOSPITALS TOUCHING LIVES

**Employment Notification No. 01/2024** **Dated: 30.07.2024.**

**WALK-IN-INTERVIEW**

NMDC Apollo Central Hospital, Bacheli requires Medical Professionals as per the following details for its 100 bedded multi-specialty hospital which is having latest equipments and excellent infrastructure.

| S.No. | Post | Qualification & Experience | Upper Age limit | Annual CTC (in Lakhs)/Monthly Salary | Nature of appointment |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | Specialist (Gen. Surgery) | MS/DNB with experience | 55 yrs.** | MD/MS/DNB : Rs. 28.20 to Rs. 38.00<br>PG Diploma : Rs. 23.00 to Rs. 31.00 | Regular |
| 2. | Specialist (Obstetrics & Gynaecology) | MD/MS/DNB with experience | | | |
| 3. | Specialist (Medicine) | MD/DNB with experience | | | |
| 4. | Specialist (Radiology)* | MD/DNB/DMRD with experience | | | |
| 5. | GDMO # | MBBS with experience | 45 yrs. | Rs. 12.00 to Rs. 18.00 | Regular /Temporary |
| *** Additional payment up to Rs.1.00 lakh p.m. can be considered for Specialist (Radiology) having good experience.** | | | | | |

** Relaxation in age may be considered for suitable and experienced Specialist doctors.
**Note:** Higher CTC may be considered for experienced and deserving Specialist doctors as per rules.
# GDMOs will be appointed both on regular/temporary basis as per the requirement.

**Date of Walk-In-Interview : 27.08.2024 (Tuesday)**
**Time : 9.30 AM to 01.00 PM**
**Place of Interview : HR Department, Apollo Health City, Jubilee Hills, Hyderabad.**

**Important Note**: For detailed advertisement kindly visit website: www.nmdc.co.in

***Chief Medical Administrator***


# भक्ति भाव से मनाया गया तपस्वी मुनिश्री प्रियदर्शी विजयजी म.सा. का अवतरण दिवस




**रायपुर ( विश्व परिवार )।** श्री संभवनाथ जैन मंदिर विवेकानंद नगर में जारी आत्मोल्लास चातुर्मास 2024 में मंगलवार को रायपुर के कुलदीपक तपस्वी मुनिश्री प्रियदर्शी विजयजी म.सा.का 50वां अवतरण दिवस भक्तिभाव से मनाया गया। दीक्षा के 25 वर्ष बाद पहली बार मुनिश्री प्रियदर्शी विजयजी म.सा. रायपुर आए हैं। इस विशेष अवसर पर मुनिश्री के अवतरण दिवस को समाज ने उत्सव के रूप में मनाया।

इस विशेष अवसर पर रंग बिरंगे अक्षत से 50 गवली बनाई गई। श्रावक-श्राविकाओं ने मुनिश्री को जयकारों के साथ 50 गवली के मध्य से मंच तक पहुंचाया। इस बीच मुनिश्री के 50 अंतिम कदम पर रजत मुद्रा से गुरु पूजन किया गया। swag से संयम तक थीम पर बाल्यावस्था से,स्कूल शिक्षा से लेकर दीक्षा एवं दीक्षा के पश्चात अनेक वर्षों के फोटो प्रदर्शित किए गए। सभी ने मुनिश्री को अक्षत से बधाया। अनेक महिला मंडलों द्वारा जन्मोत्सव पर संगीतमय प्रस्तुति दी गई। परम पूज्य मुनिश्री तीर्थप्रेम विजयजी म.सा. ने मुनिश्री प्रियदर्शी विजयजी म.सा. की 50 पॉइंट पर उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला। 50 में से पहले छब्बीस विशेषताएं अंग्रेजी के ए से जेड अक्षर तक और शेष चौबीस विशेषताएं 24 तीर्थंकरों पर बताते हुए व्याख्यान दिया।

**संसार के सभी दुखों की जड़ जन्म है- मुनिश्री तीर्थप्रेम विजयजी :** मुनिश्री तीर्थप्रेम विजयजी म.सा. ने कहा कि हर एक व्यक्ति के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना अपना-अपना जन्म होती है। शास्त्रकार इसे दुर्घटना कहते हैं,यह जन्म नाम की घटना 14 राजलोक के अनंत अनंत जीवों के जीवन में होने वाली सबसे पहली दुर्घटना है। दुखों की लिस्ट में सबसे पहला दुख जन्म है। अगर जीव का जन्म ही ना हो तो उसके जीवन में आने वाली आदि, व्यादि, रोग, बुढ़ापा, संताप और मृत्यु आए ही नहीं। संसार के सभी दुखों की जड़ जन्म है।

मुनिश्री ने बताया कि किनका जन्म मनाने लायक है। उन्होंने कहा तीर्थंकरों का जन्म मानने लायक है क्योंकि समस्त सृष्टि के लिए कल्याणकारी है। किसी जीव के जन्म से संसार के अनंत जीव को आनंद प्राप्त हो जन्म उनका मनाना चाहिए। लाखों के जीवन में कल्याण का प्रवेश हो जन्म वह मनाना चाहिए। जन्म उसी का मानना चाहिए जिसका एक जन्म आगे आने वाले अनंत जन्मों पर पूर्ण विराम रखने का काम करें, ना की एक जन्म आने वाले जन्मों की श्रृंखला खड़ी करें। जिसके जन्म से संसार की वृद्धि नहीं संसार का क्षय हो,जो अपने जन्म मृत्यु के चक्करों को खत्म करने के लिए निकले हुए हैं, वास्तव में जन्म उनका मनाना चाहिए।

# नवविवाहिता ने की आत्महत्या, दहेज के लिए प्रताड़ित करने वाला पति भेजा गया जेल

**राजनांदगांव ( आरएनएस )।** जिले के पुलिस चौकी तुमडीबोड, थाना लालबाग पुलिस ने नवविवाहिता द्वारा आत्महत्या कर लिये जाने के मामले में उसके पति को दहेज के लिए प्रताड़ित करने तथा आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोप में गिरफ्तार किया है।

मिली जानकारी के अनुसार मृतिका नवविवाहिता 05 वर्ष पूर्व ग्राम आरगांव निवासी संदीप कुमार साहू से प्रेम विवाह किया था। विवाह के एक वर्ष बाद से पति संदीप कुमार साहू दहेज मांग को लेकर नवविवाहिता को प्रताड़ित करता था। जिस पर नवविवाहिता के परिवार वाले दहेज के रूप में आरोपी को सोना- चांदी खरीदकर दिया था। फिर भी आरोपी पति अपनी पत्नी को अपने परिवार वालों से दहेज मांगने की बात को लेकर हमेशा प्रताड़ित करता था। अपने पति के दहेज मांग की बात से प्रताड़ित होकर नवविवाहिता ने दिनांक 14 अप्रेल 2024 को ग्राम आरगांव में अपने ससुराल में अपने उपर मिटटी तेल डालकर आग लगा ली थी। जिसे पड़ोसियों की सहायता से ईलाज हेतु कालडा बर्न सेन्टर रायपुर में भर्ती किया गया था जहां ईलाज दौरान नवविवाहिता के मृत्यु हो गयी थी। जिस पर न्यू राजेन्द्र नगर थाना में मर्ग कायम कर जांच हेतु पुलिस चौकी तुमडीबोड को प्रदाय किया गया था। जिसपर चौकी तुमडीबोड द्वारा मर्ग जांच कर नवविवाहिता के पति द्वारा दहेज मांग को लेकर प्रताड़ित करना पाये जाने पर धारा 304(बी) भादवि कायम कर विवेचना कार्यवाही में लिया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा के मार्ग दर्शन में नगर पुलिस अधीक्षक पुष्पेन्द्र नायक द्वारा पुलिस चौकी तुमडीबोड स्टॉफ के माध्यम से आरोपी को पता तलाश कर आरोपी को गिरफ्तार कर पूछताछ किया गया। जिसमें आरोपी ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया जिसके बाद पुलिस ने मंगलवार को आरोपी संदीप कुमार साहू पिता स्व.देवेन्द्र कुमार साहू उम्र 27 वर्ष साकिन ग्राम आरगांव को विधिवत गिरफ्तार कर न्यायालय पेश कर जेल भेज दिया है।


**कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)**
**ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर**
**Email ID - rmczone5@gmail.com**

**पत्र क्रं./13923/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2024**
**रायपुर दिनांक : 20-08-2024**

**इश्तिहार**

**नामांतरण प्र.क्र. 13923**
**वार्ड का नाम-68-खूबचंद बघेल वार्ड**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **68** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR567C0152A** जो कि निगम अभिलेख में **श्री/श्रीमती SA.NA.JA MAMTA DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MANOJ KUMAR DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको **श्री/श्रीमती NAJUL ANKIT MAHAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. RAJENDRA NAGVANSHI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
**( जोन कमिश्नर )**
**जोन क्रं. - 5**
**नगर पालिक निगम, रायपुर ( छ.ग. )**

**कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)**
**ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर**
**Email ID - rmczone5@gmail.com**

**पत्र क्रं./13922/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2024**
**रायपुर दिनांक : 20-08-2024**

**इश्तिहार**

**नामांतरण प्र.क्र. 13922**
**वार्ड का नाम-67-भक्तमाता कर्मा वार्ड**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **67** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR567D0547A** जो कि निगम अभिलेख में **श्री/श्रीमती RAJENDRA KUMAR SEN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. DESHRAJ SEN** के नाम से दर्ज है, जिसको **श्री/श्रीमती NAJUL HEMANT SEN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. DESHRAJ SEN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
**( जोन कमिश्नर )**
**जोन क्रं. - 5**
**नगर पालिक निगम, रायपुर ( छ.ग. )**

**कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,**
**सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223**
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

***आम-सूचना***

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि अटल आवास योजनांतर्गत धनसुली रायपुर में स्थित भवन क्रमांक अटल आवास-10, **श्री राकेश कुमार यादव पिता श्री नंद कुमार यादव,** के नाम पर आबंटित था। आबंटी द्वारा उक्त भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर अपने पक्ष में दिनांक 04.08.2010 को लीजडीड पंजीकृत उपरांत आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया था। जिसके पश्चात् मूल आबंटी **श्री राकेश कुमार यादव पिता श्री नंद कुमार यादव** का मृत्यु दिनांक 03.09.2012 को हो जाने के कारण पत्नि/उत्तराधिकारी **श्रीमती मंदाकिनी यादव पति स्व. श्री राकेश कुमार यादव** के नाम पर इस कार्यालय के नामांतरण आदेश क्रमांक 2828 दिनांक 01.05.2018 द्वारा नामांतरित किया गया है। नामांतरी द्वारा दिनांक 25.07.2024 को हस्तांतरण विलेख (फ्री-होल्ड) निष्पादित करा लिया गया है, हस्तांतरण विलेख निष्पादन उपरांत उक्त भवन को क्रेता **सुश्री नेहा अग्रवाल पिता श्री रमेश अग्रवाल,** निवासी-वार्ड नं. -12, तखतपुर, बिलासपुर तहसील व जिला बिलासपुर (छ.ग.) के पक्ष में दिनांक 05.08.2024 को विक्रय कर दिया गया है। वर्तमान में सुश्री नेहा अग्रवाल पिता श्री रमेश अग्रवाल, द्वारा उक्त भवन को फ्री-होल्ड पश्चात् अपने नाम पर मण्डल अभिलेख में दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया हैं।

अतः उक्त भवन का फ्री-होल्ड उपरांत मण्डल अभिलेख में नाम दर्ज करने के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तीय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

**सम्पदा अधिकारी,**
**छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,**
**सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर ( छ.ग. )**

**कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)**
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

**-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-**
**नामांतरण प्रकरण क्र. 325 दिनांक 02.08.2024**
**वार्ड का नाम- माधव राव सप्रे वार्ड**
**वार्ड क्र. 19 वर्ष- 2024-25**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 19 मांग **पंजी क्र. 13 युआईडी 21309** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **नागेश कुमार सोनी/तपसी कुमार सोनी** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **कुलदीप शर्मा/कुंदन लाल शर्मा** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **01-09-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

**सहायक राजस्व अधिकारी**
**नगर पालिक निगम, बीरगांव**
**जिला-रायपुर ( छ.ग. )**

**कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-09)**
**पुलिस थाना के पास, दुबे कालोनी, मोवा, रायपुर**
**E-mail ID - rmczone8@gmail.com**

**पत्र क्र. /8383/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024**
**रायपुर, दिनांक 20-08-2024**

**इश्तिहार**

**नामांतरण प्र.क्र. 8383**
**वार्ड का नाम- 32 - महर्षि वाल्मिकी वार्ड**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **32** स्थित/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR328I00220** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **NUTAN SAHAY, YASH KRISHNA SAHAY, HARSH KRISHNA SAHAY** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. DHIR KRISHNA SAHAY** के नाम से दर्ज, जिसको श्री/श्रीमती **OM SONI S/O DWARIKA SONI AND DWARIKA SONI S/O SHIV NARAYAN SONI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O SHIVNARAYAN SONI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
**संतोष पाण्डेय**
**( जोन कमिश्नर )**
**जोन क्रमांक-9**
**नगर पालिक निगम, रायपुर ( छ.ग. )**

**कार्यालय नगर पालिका परिषद कुम्हारी, जिला- दुर्ग (छ.ग.)**

**।। दावा आपत्ति सूचना ।।**

**क्रं. / 641 / राज.वि. / नामां. / 2024**
**कुम्हारी, दिनांक 20/08/2024**

नगर पालिका परिषद कुम्हारी में अपने स्वयं के भवन/भूमियों को क्रय-विक्रय/वारिसान/मृत्यु आधार आदि में किया जाकर नगर पालिका अभिलेख में नाम परिवर्तन करने हेतु निम्नानुसार आवेदन प्राप्त हुआ है। उक्त प्रकरणों पर नगर पालिका अधिनियम 1961 की धारा 150 के तहत नामांतण किये जाने पर यदि किसी भी व्यक्ति/संस्था/समुदाय को आपत्ति हो तो इस सूचना के समाचार पत्र में प्रकाशन होने की तिथि से 30 दिन के अंदर लिखित में नगर पालिका कार्यालय में अपना दावा/आपत्ति आवेदन प्रस्तुत कर सकते है। भवन/भूमि नामांतरण संबंधी विवरण निम्नानुसार है -:

**हस्तांतरणकर्ता का नाम व पता-** श्रीमती रोहणी यादव, पति राम जी वार्ड क्रं.-07, राम नगर कुम्हारी, जिला- दुर्ग (छ.ग.)।
**हस्तांतरिती का नाम व पता-** श्रीमती अरूणा यादव पति श्री कमलदेव यादव, वार्ड क्रं.-07, राम नगर कुम्हारी, जिला-दुर्ग (छ.ग.)। **भवन/भूमि का विवरण-** खसरा क्रं.-344/38, रकबा 0.0400 हे., वार्ड क्रं.-07 कुम्हारी, जिला- दुर्ग (छ.ग.)।
**नामांतरण का आधार-** वसीयतनामा के आधार पर।

**मुख्य नगर पालिका अधिकारी**
**नगर पालिका परिषद कुम्हारी**

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
# विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर, बुधवार 21 अगस्त 2024



# रायगढ़ में प्रयास विद्यालय संचालन की तैयारी रखें पूरी-प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा

## प्रयास विद्यालय के नए कैम्पस के लिए एजुकेशन सिटी के तर्ज पर आधुनिक सुविधाओं से युक्त ले-आउट तैयार करने किया निर्देशित

**प्रमुख सचिव ने प्रयास आवासीय विद्यालय परिसर का निरीक्षण कर दिए जरूरी दिशा-निर्देश**

**रायगढ़(विश्व परिवार)।** रायगढ़ में प्रयास आवासीय विद्यालय शुरू होने जा रहा है। अपने रायगढ़ प्रवास के दौरान श्री सोनमणि बोरा, प्रमुख सचिव, आदिम जाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास विभाग ने लाईवलीहुड कॉलेज में शुरू होने जा रहे प्रयास आवासीय विद्यालय का निरीक्षण कर शाला संचालन की तैयारियों के बारे में जानकारी ली। प्रभारी सहायक आयुक्त श्री महेश शर्मा ने बताया कि रायगढ़ के लाइवलीहुड कॉलेज में स्कूल शुरू करने की तैयारी की गई है। यहां क्लासेज और हॉस्टल शुरू करने की व्यवस्था की गई है। शिक्षकों और हॉस्टल वार्डन की नियुक्ति की जा चुकी है। बच्चों के रहने के लिए पलंग, गद्दे इत्यादि की व्यवस्था कर ली गई है। हॉस्टल कैम्पस को अंतिम रूप दिया जा रहा है। यहां खिड़कियों में मच्छर जाली लगाने के साथ रंगाई-पोताई का काम किया गया है। साथ ही भवन में मेस संचालन सहित अन्य व्यवस्थाओं की तैयारी भी की गई है। प्रमुख सचिव श्री बोरा ने कहा कि प्रयास विद्यालय में बच्चों को सभी जरूरी सुविधाएं मिलनी चाहिए। यह पहला बैच है, अत: इनका विशेष रूप से ख्याल रखा जाए। अच्छे शैक्षणिक माहौल के साथ सुरक्षा व्यवस्था पर भी पूरा ध्यान दिया जाए। प्रयास विद्यालयों में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी अहम हिस्सा है। इसके लिए टीचिंग स्टॉफ की भी पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए। उन्होंने परिसर में छात्रों के लिए खेल-कूद की गतिविधियां भी विकसित करने की बात कही। साथ ही खाली पड़े स्थानों पर वृक्षारोपण व गार्डनिंग कर वहां बेंच लगाने के निर्देश दिए, जिससे छात्रों को एक अच्छा माहौल मिले। इसके साथ ही प्रयास आवासीय विद्यालय के लिए स्थल चयन कर आधुनिक सुविधाओं से युक्त कैम्पस निर्माण की दिशा में काम करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रयास विद्यालय का परिसर एजुकेशन सिटी की तर्ज पर हो। स्मार्ट क्लास रूम, लाईब्रेरी, लेबोरेट्री, खेल गतिविधियों जैसी तमाम सुविधाएं विकसित करने के निर्देश दिए।

# विसंगतिपूर्ण युक्तियुक्तकरण को निरस्त करवाने शिक्षक संगठन हुए लामबंद

**वाणिज्य उद्योग एवं श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन को सौंपा ज्ञापन**

**कोरबा(विश्व परिवार)।** प्रदेश में चल रही युक्तियुक्तकरण की प्रक्रिया का पूरे प्रदेश में विरोध शुरू हो गया है। अनेको शिक्षक संगठन इस मुद्दे को लेकर एकजुट होकर विरोध कर रहे हैं। इसी कड़ी में आज दिनांक 17 अगस्त को कोरबा जिले के सभी संघ एकजुट होकर छत्तीसगढ़ के कैबिनेट मंत्री श्री लखनलाल देवांगन जी के निवास पहुँचकर इस प्रक्रिया पर रोक लगाने ज्ञापन सौंपा एवं इस प्रक्रिया की ढेरों खामियां और होने वाले नुकसान से मंत्री जी को अवगत कराया। इस संबंध में छत्तीसगढ़ शिक्षक वेलफेयर एसोसिएशन के प्रांताध्यक्ष डॉ गिरीश केशकर, जिलाध्यक्ष हरि राम पटेल एवं जिला सचिव रूपनारायण पटेल ने बताया कि प्रदेश में युक्तियुक्तकरण स्कूलों को मर्ज करने के नाम पर हजारों की संख्या में विद्यालय बंद करने की तैयारी चल रही है। पूर्व में भी वर्ष 2008 में युक्तियुक्तकरण की प्रक्रिया अपना कर लगभग 4 हजार सरकारी स्कूल प्रदेश में बंद किये गए थे इस बार भी 3 हजार से ऊपर स्कूल बंद करने की तैयारी है जो प्रदेश के शिक्षकों एवं बच्चों के हित में बिल्कुल भी नहीं है। प्रांताध्यक्ष डॉ गिरीश केशकर ने बताया कि प्रदेश में बच्चों के जन्मदर में कोई अप्रत्याशित गिरावट नहीं आयी है जिससे स्कूल बंद करना पड़े। अगर स्कूल बंद किये जाते हैं तो एक तरफ बच्चों को प्राइवेट स्कूल में एडमिशन लेने विवश होना पड़ेगा वहीं 20 साल से पदोन्नति की राह देख रहे शिक्षकों के पदोन्नति के पद समाप्त होंगे जिससे शिक्षकों के मन में निराशा पनपेगी और शिक्षा गुणवत्ता प्रभावित होगी। अगर युक्तियुक्तकरण किया ही जाना है तो उसके पहले सरकार राज्य में प्राचार्य से प्रारंभ कर सहायक शिक्षक का क्रमश: प्रमोशन करे। स्थानांतरण की प्रक्रिया प्रारंभ करे उसके बाद यदि आवश्यकता पड़ती है तो प्राथमिक और माध्यमिक शाला में प्रधान पाठक के पद को बिना प्रभावित किये पर्याप्त संख्या में कक्षावार एवं विषयवार शिक्षक की व्यवस्था करे।

# पुलिस अधिकारी के भाई के घर चोरी करने वाले गिरोह का पर्दाफाश हुआ

**कोरबा(विश्व परिवार)।** पुलिस अधिकारी के भाई के घर चोरी करने वाले गिरोह का पर्दाफाश पुलिस ने किया है। तीन आरोपितों में दो को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। एक आरोपित अभी भी फरार है। जिसकी तलाश में पुलिस लगी है। पकड़े गए आरोपितों से चोरी की गई चांदी की मूर्तियां व पांच हजार नकद बरामद किया गया है। एडीशनल एसपी पूजा गोयल का भाई श्याम गोयल कोतवाली के पीछे अग्रोहा मार्ग में निवासरत है। स्वजनों के साथ वह नौ अगस्त को घर में ताला लगाकर मैनपाट अंबिकापुर घूमने गया था। 11 अगस्त की शाम को घर वापस आने पर कमरे में लगा ताला टूटा हुआ मिला, अंदर सामान बिखरे थे। अज्ञात चोरों ने भगवान गणेश व मां लक्ष्मी का चांदी का मूर्ति वजन 500 ग्राम, चांदी का सिक्का दो किलोग्राम, सोने का छोटा मंगलसूत्र, सोने का छोटा नथ, नकद 10 हजार रुपये , स्केचर्स कंपनी का एक जोड़ी जूता, सीसीटीवी कैमरा डीवीआर समेत लगभग 2.50 लाख रुपये की चोरी कर ली थी। इस मामले की जांच कोतवाली पुलिस कर रही थी। पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी ने बताया कि घर का निरीक्षण करने के साथ आसपास का सीसीटीवी कैमरा खंगाला गया। इस मामले के लिए साइबर सेल के साथ टीम का गठन किया गया था। इस दौरान चोरों का सुराग लगा और जांच में लगी टीम आरोपितों के मिले लोकेशन के आधार पर चांपा पहुंची।

# हाईकोर्ट ने पूर्व कलेक्टर समेत आधा दर्जन अफसरों को भेजा नोटिस

**बिलासपुर(विश्व परिवार)।** दो किसानों की जमीन पर बिना अधिग्रहण किए सड़क बनाने के मामले में हाई कोर्ट ने संबंधित अधिकारियों को अवमानना का दोषी ठहराया है। किसानों की याचिका पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने पूर्व कलेक्टर नूपुर राशि पन्ना समेत आधा दर्जन अधिकारियों को 3 सितंबर को व्यक्तिगत रूप से कोर्ट में उपस्थित होने का आदेश दिया है। यह मामला अविभाजित जांजगीर-चाम्पा जिले के ग्राम अंडी पोस्ट किरारी निवासी नेतराम भारद्वाज और भवानीलाल भारद्वाज से जुड़ा है। पीडब्ल्यूडी विभाग ने बिना किसी अधिग्रहण प्रक्रिया के इन किसानों की कृषि भूमि पर सड़क निर्माण कर दिया। किसानों ने जब भूमि अधिग्रहण अधिनियम के तहत मुआवजे की मांग की, तो अफसरों ने उनकी बात को अनसुना कर दिया। इसके बाद किसानों ने हाई कोर्ट में याचिका दायर कर पीडब्ल्यूडी की इस मनमानी की शिकायत की। नवंबर 2022 में, जस्टिस आरसीएस सामंत की बेंच ने इस मामले में सुनवाई की थी। कोर्ट ने पाया कि किसानों की जमीन 2012 में ली गई थी और अब तक उन्हें मुआवजा नहीं मिला है। कोर्ट ने कलेक्टर और भूमि अधिग्रहण अधिकारी को चार महीने के भीतर मुआवजा निर्धारित कर भुगतान करने का आदेश दिया था। लेकिन आदेश के बावजूद अधिकारियों ने कोई कदम नहीं उठाया, जिससे किसानों को पुन: हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाना पड़ा।

# खाद्य विभाग ने दुकान से जब्त किया 52 बोरी पीडीएस का चावल

**बिलासपुर(विश्व परिवार)।** नेहरू नगर स्थित विवेक राइस ट्रेडिंग के सामने एक निजी दुकान से 52 बोरी (13 क्विंटल) सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के तहत वितरित होने वाला चावल जब्त किया गया है। खाद्य और राजस्व विभाग की संयुक्त टीम ने शुक्रवार को यह कार्रवाई की। दुकान के प्रोपराइटर द्वारा चावल से संबंधित कोई बिल प्रस्तुत नहीं किए जाने के कारण चावल की जब्ती की गई। खाद्य एवं राजस्व विभाग को

शिकायत प्राप्त हुई थी कि उक्त दुकान में पीडीएस का चावल खरीदा और बेचा जा रहा है। इस शिकायत पर कार्रवाई करते हुए, खाद्य और राजस्व विभाग की संयुक्त टीम ने दुकान का निरीक्षण किया। दुकान के प्रोपराइटर द्वारा कोई भी वैध बिल प्रस्तुत न करने पर टीम ने चावल को जब्त कर लिया। साथ ही, निरीक्षण के दौरान दो स्थानीय निवासियों के बयान भी लिए गए, जो दुकान में पीडीएस का चावल बेचने आए थे। दुकान के प्रोपराइटर के खिलाफ आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 के तहत एफआईआर दर्ज की गई है। इसके अलावा, चावल बेचने वाले निवासियों के राशन कार्ड भी निरस्त किए जाएंगे।

# शिविर से दूर होगी अमझर सहित आसपास के गांवों की समस्या : विधायक

**योजनाओं की जानकारी रखेंगे तो लाभ भी उठा पाएंगे : कलेक्टर**

**कलेक्टर ने मांग संबंधी आवेदनों का परीक्षण कर निराकरण की बात कही**

**कोरबा(विश्व परिवार)।** जिला स्तरीय जन समस्या निवारण शिविर का पहला आयोजन आज पोड़ी-उपरोड़ा विकासखण्ड के सुदरवर्ती ग्राम पंचायत अमझर में आयोजित किया गया। शिविर में कुल 549 आवेदन प्राप्त हुए, जिसमें से 330 का मौके पर निराकरण संबंधित अधिकारियों द्वारा किया गया। लंबित 219 आवेदन मांग संबंधी होने की वजह से कलेक्टर ने परीक्षण कर आवेदनों का निराकरण करने की बात कही। शिविर में ग्रामीणों को योजनाओं से लाभान्वित भी किया गया। शिविर को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री तुलेश्वर सिंह मरकाम विधायक पाली तानाखार ने कहा कि बहुत खुशी की बात है कि पोड़ी-उपरोड़ा ब्लॉक के अंतिम छोर में स्थित ग्राम अमझर में जिलाप्रशासन द्वारा जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर का आयोजन किया गया है। इस आयोजन से इस क्षेत्र के ग्रामीणों की शिकायतों का त्वरित निराकरण हुआ है। इसके साथ ही उनकी मांगों पर विचार भी किया जा रहा है। शिविर के माध्यम से इस क्षेत्र के विकास को गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि दूरस्थ क्षेत्र होने की वजह से स्कूल भवन, पहुंच मार्ग पुल-पुलिया, सड़क, उचित मूल्य दुकान के भवन सहित अन्य कमी महसूस होती है, जिन्हें कलेक्टर के संज्ञान में लाया गया है। उन्होंने सभी समस्याओं को प्राथमिकता के साथ निराकरण की बात कही है। विधायक श्री मरकाम ने ग्रामीणों को शिविर का लाभ उठाने तथा अपने बच्चों को बेहतर भविष्य के लिए स्कूल भेजने की अपील की। उन्होंने कहा कि जिले के सभी अधिकारी-कर्मचारी का साथ है। ऐसे में इस क्षेत्र का विकास तेजी से होगा। विधायक श्री मरकाम ने जर्जर बीईओ कार्यालय पोड़ी-उपरोड़ा सहित स्कूल भवनों, आंगनबाड़ी भवन को संवारने सहित अन्य मांग करते हुए ग्राम अमझर स्कूल प्रांगण में अहाता निर्माण, सेमरा में पुलिया निर्माण विधायक मद से करने की घोषणा की। उन्होंने निर्माण कार्यों में गुणवत्ता का ध्यान देने की मांग भी की। शिविर को संबोधित करते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती शिवकला कंवर ने कहा कि ग्रामीण अपने क्षेत्र में आयोजित होने वाले शिविर का लाभ जरूर उठाएं। यहां शासन की योजनाओं की जानकारी मिलने के साथ ही वे अपनी समस्याओं का निराकरण भी संबंधित अधिकारी के माध्यम से करा सकते हैं। शिविर में उपस्थित पुलिस अधीक्षक श्री सिद्धार्थ तिवारी ने कहा कि उन्होंने सभी थाना, पुलिस चौकी प्रभारियों को निर्देशित किया है कि कोरबा व छत्तीसगढ़ पुलिस आम नागरिकों की रक्षा के लिए है, आम नागरिक को किसी प्रकार की समस्या है तो वे बेझिझक अपनी बात थाना में जाकर रख सकते हैं। उन्होंने गांव के युवाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए प्रशिक्षण का आयोजन इन क्षेत्रों में करने की मांग की। साथ ही चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने सीसीटीवी लगाने के संबंध में जानकारी दी।

## संक्षिप्त समाचार

### शुक्ला निवास में खिला ब्रह्म कमल, की गई पूजा-अर्चना

**कोरबा(विश्व परिवार)।** दीपका में ऊर्जा नगर निवासी प्रभाकर शुक्ला के घर के आंगन में ब्रह्म कमल का फूल खिला है। इस अवसर पर ब्रह्म कमल की विधिवत पूजा अर्चना कर आशीर्वाद लिया गया। ब्रह्म कमल का पौधा लगाने वाली ममता शुक्ला ने बताया कि घर में लगे पौधे में बीती रात खिला ब्रह्म कमल शांति का प्रतीक है। इस फूल से मां लक्ष्मी का वास रहता है और घर में पॉजिटिव एनर्जी बनी रहती हैं। अखंड ब्राम्हण समाज के प्रदेश मीडिया प्रभारी प्रांजल शुक्ला ने बताया कि पौराणिक मान्यताओं में ब्रह्म कमल का बड़ा महत्व है। ऐसी मान्यता है कि जहां यह ब्रह्म कमल खिलता है उस जगह को पवित्र और शुभ माना गया है। घर में सुख, शांति और समृद्धि का निवास रहता है। ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मकमल 14 साल में एक बार खिलता है। खबर मिलने के बाद आसपास से आए हुए लोगों ने भी ब्रह्मकमल का दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

### मृत व्यक्ति के नाम से निकाला लोन, आरोपी गिरफ्तार

**बलरामपुर(विश्व परिवार)।** उदयपुर थाना के ग्राम खुटिया निवासी रामअवतार की पैतृक सम्पत्ति गांव में ही है। जिस पर वह कृषि कार्य करता है। आवेदक को वर्ष 2019-20 में जमीन सम्बन्धी दस्तावेज बी-वन निकालने के दौरान अपने पैतृक जमीन में पिता रामचरण के नाम से कुल दो लाख 18 हजार रुपये का केसीसी लोन स्टेट बैंक ऑफइंडिया शाखा लखनपुर के होने की जानकारी मिली। यह भी पता चला कि जमीन , 10 वर्ष से बैंक में बंधक है। जबकि आवेदक के पिता की वर्ष 2008 में ही मृत्यु हो हो चुकी थी। आवेदक ने 2014 में बैंक ऋण लेने की जानकारी प्राप्त कर ऋण प्राप्त करने के लिए लगे दस्तावेज में अनावेदक बलराम निवासी मुटकी उदयपुर का होना पाया। बैंक में उसने अपना नाम रामचरण निवासी मुटकी लखनपुर बताकर बैंक से प्रार्थी के पिता के नाम से जमीन पर ऋण लिया था। मामले में आरोपित बलराम बसोंर द्वारा दरोगा दास एवं सीताराम कवर की सहायता से फर्जी रूप से प्रार्थी के मृतक पिता के कुटरचित दस्तावेज तैयार कर अपना फेटो लगाकर दो लाख 18 हजार रुपये का केसीसी बैंक ऋण प्रार्थी के जमीन पर निकाल कर गबन किया गया है। कूटरचना और जालसाजी के इस मामले में आखिरकार पुलिस ने दरोगा दास (53)मंहगई थाना रामानुजनगर व सीताराम कवर (65) मुटकी थाना उदयपुर को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ पर पता चला कि कमीशन के लालच में बलराम बसोर कों प्रार्थी के पिता रामचरण के जगह खड़ा कर फर्जी रूप से खाता खुलवाकर केसीसी लोन निकलवाया गया था। अपराध घटित करने से प्राप्त हुआ कमीशन में से 20 हजार दरोगा दास को प्राप्त हुआ था एवं सीताराम को पांच हजार रुपये का का कमीशन प्राप्त हुआ था। प्रकरण में शामिल अन्य आरोपितों का तलाश किया जा रहा हैं। कार्रवाई में थाना प्रभारी लखनपुर निरीक्षक अश्वनी सिंह, प्रधान आरक्षक रवि सिंह, आरक्षक दशरथ राजवाड़े, जानकी राजवाड़े, अमरेश दास शामिल रहे।

### कलेक्टर ने बुजुर्गों के साथ मनाया रक्षाबंधन पर्व

**कोरिया(विश्व परिवार)।** सचमुच यह मेरे लिए अत्यंत खुशी का पल है कि आज रक्षाबंधन पर्व आप लोगों के साथ मनाने का अवसर प्राप्त हुआ है। आप लोग हमारी विरासत हो, आप लोगों के अनुभव, समझ व त्याग का सम्मान करना हमारी संस्कृति है। यह बात रक्षाबंधन के अवसर पर बैकुंठपुर के वृद्धा आश्रम में पहुंचकर जिले के कलेक्टर श्रीमती चन्दन त्रिपाठी ने साझा की। कलेक्टर ने सभी बुजुर्गों को रक्षा सूत्र बांधकर आशीर्वाद प्राप्त की साथ ही सभी बुजुर्गों को स्वस्थ व दीर्घायु जीवन की मंगलकामनाएं की। श्रीमती त्रिपाठी ने वृद्धा आश्रम का निरीक्षण की यहां रहने वाले बुजुर्गों से स्वास्थ्य के बारे में हालचाल पूछे, रहने के दौरान किसी तरह की कोई परेशानी, समस्या के बारे में बुजुर्गों से सीधे जानकारी प्राप्त की। आश्रम में साफ-सफाई के साथ भोजन, नास्ता के बारे में जानकारी प्राप्त की। कलेक्टर श्रीमती त्रिपाठी ने अधिकारियों को भोजन व नाश्ता मेन्यू के अनुसार देने तथा स्वास्थ्य की जांच समय पर करने के निर्देश दिए। श्रीमती चंदन त्रिपाठी ने वृद्ध श्री मनोज सिन्हा से बात करते हुए, उनके लिए बुक और पेंटिंग की समान व्यवस्था करने, वृद्धा आश्रम के वृद्धजनों को साइन लेंग्वेज व इशारे से बात करने की कला को सिखाने हेतु समाज कल्याण विभाग के अधिकारी को निर्देश दिए। कलेक्टर श्रीमती त्रिपाठी ने कहा कि रक्षाबंधन भाई-बहनों का स्नेह का पर्व है, एक दूसरे को सम्मान करने का पर्व है। बहनों का रक्षा करने का पर्व है। इसलिए हर भाई-बहन संकल्प लें कि कार, बाइक वाहन चलाते समय शीट बेल्ट व हेलमेट जरूर धारण करें।

दैनिक
# विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर बुधवार 21 अगस्त 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com



## संपादकीय

# आपदा की आवाजाही, चिंताजनक हालात

**सुरेश भाई**

मुख्यमंत्री पुष्कर धामी बाढ़ पीड़ितों से मिल रहे हैं और राहत तथा पुनर्वास का आश्वासन दे रहे हैं, लेकिन इन नदियों के दोनों तरफपूर्व में आपदा से प्रभावित हुए लोग श्रीनगर, उत्तरकाशी और केदारनाथ की तर्ज पर पुनर्निर्माण की मांग कर रहे हैं। यहां हालात बहुत चिंताजनक हैं। भारी बारिश के चलते डरे हुए माहौल में लोग रातें गुजार रहे हैं, लेकिन इस क्षेत्र के पुनर्निर्माण के लिए जिस तरह की न्यूनतम राशि की घोषणाएं अब तक हुई हैं, उसके कारण लोगों में रोष है। वहीं भिलंगना नदी की सहायक नैलचामी गाड के किनारे बसे हुए गांव में मिलने वाले एक गदेरे में आई भीषण बाढ़ ने तीन जानें ले लीं हिमालय और उसके राज्यों की मौजूदा आपदाएं आत्महंता विकास के विकराल नमूने बनते जा रहे हैं। इनसान अपना अंत किस नासमझी से जानबूझकर रचता है, इसे देखना-समझना हो तो हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड राज्यों के मौजूदा हालात का जायजा लिया जा सकता है। इस बार जितनी देर से बारिश शुरू हुई है, उतनी ही जल्दी जानलेवा आपदा आ गयी है। जुलाई के अंतिम सप्ताह से चारधाम की सडक़ें ध्वस्त होने लगी थीं। आवागमन के पैदल रास्ते भी नदी में समा रहे थे। भगवान केदारनाथ इतना क्रोधित हैं कि वे भी स्वीकृति नहीं दे रहे हैं कि लोग बरसात के समय बेवजह यात्रा करें। थोड़ा इंतजार करें, लेकिन मनुष्य ने तो प्रकृति पर पूरी तरह विजय करने की सोची है। वह हर घाटी से लेकर ऊंचे से ऊंचे पर्वत पर प्रतिकूल मौसम में भी बिना सोचे-समझे जा रहा है। जहां-जहां मनुष्य के कदम पड़ रहे हैं, वहां धरती इतनी संवेदनशील बन गयी है कि अब उसे कोई नहीं बचा सकता। ध्यान रहे कि चारधाम बरसात में सुरक्षित नहीं हैं। सुरक्षा के नाम पर जितनी भी घोषणाएं करें, वे मौसम के सामने बौनी पड़ रही हैं। यहां हर साल आपदा का आकार बढ़ता ही जा रहा है। 2013 की केदारनाथ आपदा की तरह ही मंदाकिनी नदी में इस बार जल प्रलय जैसा रूप लोगों ने देखा है। स्थिति इतनी विकराल बन गई थी कि 2 अगस्त तक केदारनाथ पैदल मार्ग पर फंसे लगभग 4000 यात्रियों को रेस्क्यू किया गया, जिनमें से लगभग 700 यात्रियों को हेलीकॉप्टर सेवा से सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया। मंदाकिनी नदी में जलस्तर बढऩे से पैदल मार्ग पर रामवाड़ा में दो पुल और भीम बली में 25 मीटर

रास्ता क्षतिग्रस्त होकर बह गया। यहां से केदारनाथ जाने वाले यात्रियों को मुश्किल से बचाया जा सका है। पैदल मार्ग पर फंसे यात्रियों के लिए भोजन और पानी की व्यवस्था राज्य सरकार ने की है। यदि पहले मौसम के अलर्ट पर ऋषिकेश में ही यात्रियों को जाने से रोक देते तो समय और खर्च दोनों को रोका जा सकता था। उत्तराखंड और हिमाचल में अब तक 22 लोगों की मौतें हो चुकी हैं जिनमें से 16 लोग उत्तराखंड में मलबे में दबकर मरे हैं और पांच लोग लापता हैं। हिमाचल में 6 लोगों की मौत हो गई है और लगभग 53 लोग लापता बताए जा रहे हैं। (इन आंकड़ों में रविवार को हुई दुर्घटना के आंकड़े शामिल नहीं हैं)। अब तक वहां पर 300 करोड़ से अधिक के नुकसान का अनुमान लगाया जा रहा है। 2023 की आपदा में भी हिमाचल में 12000 करोड़ का नुकसान हुआ था और लगभग 500 लोग मारे गए थे। इस बार अभी तक यहां दो पावर प्रोजेक्ट ध्वस्त हो गए हैं जिसके कारण दर्जनों लोग लापता हैं। आपदा की यह जानलेवा घटना कुल्लू, मंडी और रामपुर में अधिक हुई है। हिमाचल की 445 सडक़ें ठप्प पड़ी हैं जिनको खोलने के लिए राज्य सरकार युद्ध स्तर पर काम कर रही है। सूत्रों का कहना है कि हिमाचल प्रदेश में बाहर से आने वाले पर्यटकों ने आपदा की स्थिति को देखकर अपनी बुकिंग कैंसिल की है जिसके कारण पर्यटन कारोबार पिछले वर्ष की तरह प्रभावित हो गया है। कुल्लू-शिमला की सीमा पर समेज खड्ड में आई बाढ़ में लगभग तीन दर्जन मकान बह गए हैं। यहां 6 बच्चों समेत 36 लोग लापता हैं। सात घंटे में सामान्य से 305 मिलीमीटर ज्यादा बारिश दर्ज की गई है। लगभग 7 पुल बह गए हैं। सतलुज और ब्यास नदियों का जलस्तर खतरे के करीब पहुंचने लगा है। यहां पर श्रीखंड महादेव मार्ग पर करीब 250 लोग फंसे हुए हैं। रामपुर में आई बाढ़ से पांच घर, तीन गाडिय़ां, पुल भी बह गए हैं। शिमला में भी कई जगह भूस्खलन और भू-धंसाव की घटनाएं हो रही हैं। हिमाचल प्रदेश में जल विद्युत परियोजनाएं सबसे अधिक विनाश का कारण बन रही हैं। 2013 की केदारनाथ आपदा के समय भी 24 जल विद्युत परियोजनाओं ने मंदाकिनी और अलकनंदा घाटी का जनजीवन बुरी तरह प्रभावित किया था, जिसमें हजारों लोग मारे गए थे। इसकी पुनरावृत्ति फिर से देखी जा रही है। जिला टिहरी गढ़वाल में बालगंगा और धर्मगंगा पर 26-27 जुलाई की भीषण बाढ़ ने जो विनाश लीला रची है, उसने केदारनाथ आपदा की याद ताजा कर दी है। यहां पर तीर्थ यात्रियों के लिए प्रसिद्ध बूढ़ा केदारनाथ मंदिर भी है जिसके दोनों तरफ यह नदी बहती है। यहां 20 किलोमीटर के क्षेत्र में नदी तटों पर निर्माण कार्यों से एकत्रित मलबे के बहने से पैदा हुए भीषण जल प्रलय से हजारों हेक्टेयर कृषि भूमि नष्ट हुई है। लोगों के होटल, मकान, गौशालाएं नदी में समा गए हैं। यहां प्रसिद्ध समाजसेवी स्व. बिहारीलाल द्वारा बड़े बांध के विकल्प के रूप में 50 किलोवाट की एक छोटी पनबिजली परियोजना बनायी गई थी जो पूरी तरह मलबे में दब गई है। इससे आगे भी तीन मेगावाट की एक लघु जलविद्युत योजना ध्वस्त हो गई है। क्षेत्र के एक दर्जन पुल जर्जर हो चुके हैं। आवागमन के रास्ते टूट गए हैं। यहां पर तोली गांव में मां और बेटी की भूस्खलन में दबकर मौत हुई है। इसी के पास तिनगढ़ गांव के घरों में मलबा जमा हुआ है। प्रशासन ने एक इंटर कॉलेज में राहत शिविर लगाया है, जहां बाढ़ प्रभावितों को भोजन, पानी, रात्रि विश्राम की व्यवस्था की जा रही है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी बाढ़ पीड़ितों से मिल रहे हैं और राहत तथा पुनर्वास का आश्वासन दे रहे हैं, लेकिन इन नदियों के दोनों तरफ पूर्व में आपदा से प्रभावित हुए लोग श्रीनगर, उत्तरकाशी और केदारनाथ की तर्ज पर पुनर्निर्माण की मांग कर रहे हैं। यहां हालात बहुत चिंताजनक हैं। भारी बारिश के चलते डरे हुए माहौल में लोग रातें गुजार रहे हैं, लेकिन इस क्षेत्र के पुनर्निर्माण के लिए जिस तरह की न्यूनतम राशि की घोषणाएं अब तक हुई हैं, उसके कारण लोगों में रोष है। वहीं भिलंगना नदी की सहायक नैलचामी गाड के किनारे बसे हुए जखन्याली नौताड गांव में मिलने वाले एक गदेरे में रात को आई भीषण बाढ़ ने पति-पत्नी और उनके बेटे की जान ले ली। गांव की खेती, पशु और घरों को बुरी तरह नुकसान हुआ है। यहां पर 10 साल पहले भी बाढ़ आई थी। तब छह लोग मारे गए थे। गांव के घर मलबे में दब गए थे। इसके बावजूद शेष गांव के हिस्से को बचाने के प्रयास नहीं होने से वही पुनरावृत्ति हुई है। उत्तरकाशी में भागीरथी और यमुना नदी के उद्गम पर भी भीषण बाढ़ के दृश्य सामने आए हैं, लेकिन बाढ़ नियंत्रण के उपायों पर गंभीरतापूर्वक विचार नहीं हो रहा है। हिमालय की भौगोलिक संरचना की अनदेखी करके अमल किए जा रहे विकास के तरीके विनाश के रास्ते पर ले जा रहे हैं। हर साल जल प्रलय की बढ़ती घटनाओं में बह रही मिट्टी, पानी, पत्थर, पेड़, लोग आदि की चिंता बरसात पूरी होने पर समाप्त हो जाती है। इसके बाद धरती-तोड़ विकास अनवरत चलता रहता है। फिर उसकी पुनरावृत्ति होती है जो भोगवादी विलासितापूर्ण विकास का परिणाम है। हिमाचल में बारिश का तांडव अभी भी जारी है। रविवार को ऊना जिला में प्राकृतिक आपदा के कारण 12 लोगों की मौत हो गई है। अगर हमने प्रकृति का नासमझी से दोहन जारी रखा, तो इस तरह की आपदाओं को रोकना मुश्किल हो जाएगा।

## वोट बैंक के तकाजे व्यवस्था

डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम सिंह को मंगलवार को 21 दिन की फरलो (अस्थायी रिहाई) दे दी गई। दुष्कर्म मामले में सजायाफ्ता राम रहीम रोहतक की सुनारिया जेल में सजा काट रहा है। नाबालिग से बलात्कार के दोष में आजीवन कारावास की सजा काट रहे आसाराम बापू को भी सात दिन के लिए जेल से बाहर निकलने का मौका मिला है। अलबत्ता, इस दौरान वह पुलिस हिरासत में पुणे के एक अस्पताल में उपचाराधीन रहेगा। राजस्थान उच्च न्यायालय ने इस बाबत अनुमति दी है। सितम्बर, 2013 में गिरफ्तार किया गया आसाराम (83) हृदय संबंधी बीमारी से ग्रस्त है। आसाराम बापू को पुलिस हिरासत में इलाज की अनुमति दिया जाना हो सकता है कि किसी को न अखरे लेकिन डेरा सच्चा प्रमुख को फरलो दिए जाने से यकीनन कोई भी सहज न होगा। दुष्कर्म का दोषी डेरा सच्चा सौदा प्रमुख चुनाव से कुछ दिन पहले 'फलरे' पर छोड़ा जाता रहा है। कुछ लोग इसके राजनीतिक मंतव्य भी निकालते हैं। डेरा सच्चा सौदा के लाखों अनुयायी देश भर में हैं, और राजस्थान के कुछ जिलों और हरियाणा के पंजाब और राजस्थान से लगते इलाकों में तो सघनता से बसे हुए हैं। डेरा सच्चा सौदा के देश भर में अनेक आश्रम हैं और इनसे जुड़े अनुयायी भी काफी संख्या में हैं। इस प्रकार उसके लाखों अनुयायी अच्छा-खासा वोट बैंक हैं। वैसे, डेरा सच्चा सौदा प्रमुख के मामले में ही ऐसा नहीं है। जितने भी डेरे-आश्रम हैं, सबके सब वोट की राजनीति के चलते राजनेताओं को प्रिय हैं। हरियाणा में अगले कुछ महीनों में विधानसभा के चुनाव होने हैं। इसलिए ऐन चुनाव से पूर्व उसे 'फरलो' दिए जाने से कोई चौंका तो नहीं लेकिन दुख जरूर हुआ कि राजनीतिक नफे-नुकसान के चलते अपराधियों के प्रति इद कदर उदारता बरती जाती है। यह कानून व्यवस्था का मजाक उड़ाने जैसा है। ऐसा नहीं है कि 'फरलो' को विवेकशील लोग अनदेखा किए हुए हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति (एसजीपीसी) ने तो बाकायदा पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय में उसको 'फरलो' दिए जाने के खिलाफ याचिका भी डाल दी थी। लेकिन इसका निपटारा किए जाने के कुछ दिन बाद ही 'फरलो' दिए जाने से पता चलता है कि वोट बैंक के तकाजे व्यवस्था पर भी भारी पड़ जाते हैं। सुप्रीम कोर्ट को इसका संज्ञान लेना चाहिए।

## आलेख

# देश में सत्ता परिवर्तन

प्रह्लाद सबनानी

किसी भी देश में सत्ता का व्यवहार उस देश के समाज की इच्छा के अनुरूप ही होने के प्रयास होते रहे हैं। जब-जब सत्ता द्वारा समाज की इच्छा के विपरीत निर्णय लिए गए हैं अथवा समाज के विचारों का आदर सत्ता द्वारा नहीं किया गया है तब-तब उस देश में सत्ता परिवर्तन होता दिखाई दिया है। लोकतंत्र में तो सत्ता की स्थापना समाज द्वारा ही की जाती रही है। साथ ही, किसी भी देश की आर्थिक प्रगति के लिए देश में शांति बनाए रखना सबसे पहली आवश्यकता मानी जाती है। समाज में विभिन्न मत पंथ मानने वाले नागरिक आपस में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाएंगे तो शांति किस प्रकार स्थापित की जा सकेगी। भारत पिछले लगभग 2000 वर्षों के खंडकाल में से अधिकतम समय (लगभग 250 वर्षों के खंडकाल को छोड़कर) पूरे विश्व में आर्थिक ताकत के रूप में अपना स्थान बनाने में सफल रहा और इसे 'सोने की चिड़िया' कहा जाता रहा। 712 ईस्वी में भारत पर हुए आक्रांताओं के आक्रमण के बाद भी भारत की आर्थिक प्रगति पर कोई बहुत फर्क नहीं पड़ा था परंतु 1750 ईस्वीं में अंग्रेजों (ईस्ट इंडिया कंपनी के रूप में) के भारत में आने के बाद से भारत की आर्थिक प्रगति को जैसे ग्रहण ही लग गया था। आक्रांताओं एवं अंग्रेजों ने न केवल भारत को जमकर लूटा, बल्कि भारत की संस्कृति पर भी गहरी चोट की थी और भारत के नागरिक जैसे अपनी जड़ों से कटकर रहने लगे थे। आक्रांताओं एवं अंग्रेजों के पूर्व भी भारत पर आक्रमण हुए थे, शक, हूण, कुषाण आदि ने भी भारत पर आक्रमण किया था परंतु लगभग 250/300 वर्षों तक भारत पर शासन करने के उपरांत उन्होंने अपने आपको भारतीय सनातन संस्कृति में ही समाहित कर लिया था। इसके ठीक विपरीत आक्रांताओं एवं अंग्रेजों का भारत पर आक्रमण का उद्देश्य भारत की लूटखसोट करने के साथ ही अपने धर्म एवं संस्कृति का प्रचार प्रसार करना भी था। आक्रांताओं ने जोरजबरदस्ती एवं मारकाट मचाकर भारत के मूल नागरिकों का धर्म परिवर्तन कर मुसलमान बनाया तो अंग्रेजों ने लालच का सहारा लेकर एवं दबाव बनाकर भारतीय नागरिकों को ईसाई बनाया। कुछ विदेशी ताकतों द्वारा भारत में आज पुन: इस प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं कि हिन्दू समाज को किस प्रकार आपस में लड़ाकर छिन्न-भिन्न किया जाए। ऐसा विमर्श खड़ा करने का प्रयास हो रहा हैं कि देश में हिन्दू हैं ही नहीं, बल्कि सिख हैं, दलित हैं, राजपूत हैं, जैन हैं आदि-आदि। जातियों के आधार पर जन गणना की मांग की जा रही है ताकि समस्त सुविधाओं को हिन्दू समाज की विभिन्न जातियों की जनसंख्या के आधार पर वितरित किया जा सके जिससे अंतत: देश में विभिन्न जातियों के बीच झगड़े पैदा हों और इस प्रकार भारत को पुन: गुलाम बनाए जाने में आसानी हो सके। विदेशी ताकतों द्वारा आज भारत के एकात्म समाज को टूटा-फूटा समाज बनाए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। एक बार पुन: भारत ऐसे खंडकाल में प्रवेश करता दिखाई दे रहा है जिसमें आर्थिक क्षेत्र में भारत की तूती पूरे विश्व में बोलती दिखाई देगी। ऐसे में कुछ देशों द्वारा भारत की आर्थिक प्रगति के सामने बाधाएं खड़ी किए जाने के प्रयास हो रहे हैं। देश में निवासरत 80 प्रतिशत आबादी हिन्दू सनातन संस्कृति की अनुयायी है एवं हिन्दू समाज में व्याप्त समस्त जातियों, मत, पंथों को मानने वाले नागरिकों में त्याग, तपस्या, देशप्रेम का भाव, स्व-समर्पण का भाव कूट-कूट कर भरा है। कहा भी जाता है कि हिन्दू जीवन दर्शन ही पूरे विश्व में शांति स्थापित करने में मददगार बन सकता है। भारतीय जीवन प्रणाली अपने आप में सर्व समावेशक है। हिन्दू सनातन धर्म का अनुपालन करने वाले नागरिक पशु, पक्षी, वनस्पति, पहाड़, नदियों आदि में भी ईश तत्त्व का वास मानते हैं, और उनकी पूजा भी करते हैं। हिन्दू संस्कारों में पला-बढ़ा नागरिक सहिष्णु होता है। इसी के चलते कहा जा रहा है कि कई देशों में बढ़ रही हिंसा को नियंत्रित करने में हिन्दू सनातन संस्कृति के अनुयायी ही सहायक हो सकते हैं। और फिर, हिन्दू जीवन दर्शन का अंतिम ध्येय तो मोक्ष को प्राप्त करना है। इस अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से भी हिंदू सनातन संस्कृति के अनुयायी कोई भी काम आत्मविचार, मनन एवं चिंतन करने के उपरांत ही करता है। इस प्रकार, इनसे किसी भी जीव को दुखाने वाला कोई गलत काम हो ही नहीं सकता। कई देशों के बीच कई प्रकार की समस्याएं व्याप्त हैं, वे आपस में लड़ रहे हैं, अपने नागरिकों को खो रहे हैं। यूक्रेन-रूस के बीच युद्ध एवं हमास-इस्त्राइल युद्ध इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। बांग्लादेश में अशांति व्याप्त हो गई है।

# उत्तरप्रदेश विधानसभा-फिलहाल ठंडे बस्ते में

रजनीश कपूर

बीते सप्ताह उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विधान सभा में नजूल संपत्ति अधिनियम पेश किया गया। इस बिल को विधान सभा में तो पास कर दिया गया परंतु उत्तर प्रदेश विधान परिषद में इसका भारी विरोध हुआ जिसके चलते बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी की मांग पर इसे सदन ने पास करने की जगह प्रवर समिति को भेजने का फैसला लेकर इसे फिलहाल ठंडे बस्ते में डाल दिया। उत्तर प्रदेश में कड़े फैसले लेने के लिए मशहूर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा लिया गया यह निर्णय सही जरूर प्रतीत होता है, परंतु जिस तरह इस विधेयक का विरोध उन्हीं की पार्टी द्वारा किया जा रहा है, तो ऐसी उम्मीद की जानी चाहिए कि आने वाले समय में शायद कुछ संशोधन के साथ इसे पुन: पेश किया जाए। उल्लेखनीय है कि जिस भी जमीन का कोई वारिस न हो और वो सरकार के अधीन हो, उसे नजूल जमीन कहते हैं। गौरतलब है कि औपनिवेशिक शासन में अंग्रेजों द्वारा भारत में बड़ी संख्या में जमीनों पर कब्जा किया गया था, लेकिन आजादी के बाद जिस भी नागरिक के पास उसकी जमीन के दस्तावेज थे उन्हें उनकी जमीन वापस मिल गई, परंतु ऐसी कई जमीनें थीं जिनकी मिल्कियत के प्रमाण या जीवित स्वामी उपलब्ध नहीं थे। ऐसी जमीनों को सरकार ने अपने पास रखा, जिसे नजूल जमीन कहा गया। आजादी के बाद इस नजूल जमीन पर यदि कोई रह रहा था तो उससे सरकार ने किराया वसूलना शुरू किया और उस जमीन को लंबे समय के लिए लीज पर देना शुरू कर दिया। इसके बावजूद ऐसी कई नजूल जमीनें हैं जिन पर लोग अवैध कब्जा कर रह रहे हैं, परंतु जैसे ही उत्तर प्रदेश में नजूल संपत्ति अधिनियम पेश हुआ, तो सरकार ने इस बात को स्पष्ट कर दिया कि जिस-जिस नजूल जमीन पर लोग गैरकानूनी ढंग से रह रहे हैं या जिन नजूल जमीनों की लीज का किराया सरकार को नहीं दिया जा रहा, उस नजूल जमीन को उत्तर प्रदेश की सरकार वापस ले लेगी और इस भूमि को सरकारी विकास कार्य के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। योगी जी द्वारा उठाया गया ये कदम सही था, परंतु विपक्ष को इस बात पर शक है कि विकास कार्य के नाम पर कहीं प्रदेश की लाखों करोड़ की हजारों एकड़ जमीन को अपने खास चुनिंदा लोगों के बीच बांट दिया जाएगा। इतना ही नहीं भाजपा के विधायक भी इस अधिनियम के विरोध में उतर आए हैं। उनका कहना है कि प्रदेश में ऐसी कई जमीनें हैं जिन पर शागिर्द-पेशा वाले परिवार रह रहे हैं, जो सदियों से वहां रह रहे हैं, परंतु उनके पास कोई भी प्रमाण नहीं है। ऐसे में उनका क्या होगा? कई भाजपा विधायकों का तो यह भी कहना है कि एक तरफ तो प्रधानमंत्री आवास योजना से बेघर लोगों को घर दिए जा रहे हैं और वहीं दूसरी ओर जो गरीब दशकों से यहां रह रहे हैं उन्हें बेघर किया जा रहा है। तो भला ऐसे बिल का क्या औचित्य? जैसे ही इस अधिनियम पर राजनीति तेज हुई विपक्ष भी खुलकर सामने आया। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया पर इसका विरोध जताते हुए लिखा, 'नजूल लैंड का मामला पूरी तरह से 'घर उजाड़ने' का फैसला है क्योंकि बुलडोजर हर घर पर नहीं चल सकता है। जनता को दुख देने में भाजपा अपनी खुशी मानती है। जब से भाजपा आई है, तब से जनता रोजी-रोटी-रोजगार के लिए भटक रही है, और अब भाजपाई मकान भी छीनना चाहते हैं। क्या भू-माफियाओं के लिए भाजपा जनता को बेघर कर देगी? अगर भाजपा को लगता है कि उनका ये फैसला सही है तो हम डंके की चोट पर कहते हैं, अगर हिम्मत है तो इसे पूरे देश में लागू करके दिखाएं क्योंकि नजूल लैंड केवल यूपी में ही नहीं पूरे देश में है।' देखा जाए तो इस अधिनियम के विरुद्ध हो रहे विवाद में भाजपा और विपक्षी नेताओं का एतराज सही है। यदि सरकार को ऐसा अधिनियम लाना ही था तो उसे नजूल भूमि पर सदियों से बसे हुए परिवारों को पुनर्वास करने की योजना भी बनानी चाहिए थी। इसके हर पहलू पर गहन विचार के बाद ही इसे पेश किया जाना चाहिए था। चूंकि उत्तर प्रदेश और केंद्र दोनों ही जगह भाजपा की सरकार है तो योगी जी को प्रधानमंत्री मोदी से इस पर चर्चा करनी चाहिए थी। इसे भाजपा शासित किसी छोटे राज्य में लागू करना चाहिए था। इस अधिनियम को लाने से पहले सरकार द्वारा यहां पर बसे लोगों को पुनर्वास करने की योजना बना लेनी चाहिए थी। सरकार को इन नजूल भूमि पर किए जाने वाले विकास कार्यों की सूची भी बना लेनी चाहिए थी। सरकार द्वारा नजूल भूमि पर अवैध रूप से पट्टे जारी करने वाले भ्रष्ट अधिकारियों को दंड देने का भी प्रावधान बनाना चाहिए था। उस नजूल जमीन को उत्तर प्रदेश की सरकार वापस ले लेगी और इस भूमि को सरकारी विकास कार्य के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। योगी जी द्वारा उठाया गया ये कदम सही था, परंतु विपक्ष को इस बात पर शक है कि विकास कार्य के नाम पर कहीं प्रदेश की लाखों करोड़ की हजारों एकड़ जमीन को अपने खास चुनिंदा लोगों के बीच बांट दिया जाएगा। इतना ही नहीं भाजपा के विधायक भी इस अधिनियम के विरोध में उतर आए हैं। उनका कहना है कि प्रदेश में ऐसी कई जमीनें हैं जिन पर शागिर्द-पेशा वाले परिवार रह रहे हैं, जो सदियों से वहां रह रहे हैं, परंतु उनके पास कोई भी प्रमाण नहीं है। ऐसे में उनका क्या होगा? यदि इन सब पहलुओं पर सरकार द्वारा नहीं सोचा गया तो ऐसा लगता है कि मुख्यमंत्री आदित्यनाथ को सलाह देने वाले अधिकारियों ने आनन-फानन में इस अधिनियम को पेश करवाया। देखना यह होगा कि आने वाले समय में प्रवर समिति इस अधिनियम पर क्या सुझाव देती है?

# प्रकृति में समृद्ध, विकास में पिछड़ा चंबा जिला

**कुलभूषण उपमन्यु**

मणिमहेश यात्रा के विकास पर भले ही ध्यान दिया गया है, किंतु यह मौसमी गतिविधि है। भरमौर पर्यटन को वर्ष भर के लिए विकसित किया जा सकता है। भटियात के कुंजर महादेव, गणेशगढ़, तारागढ़ को विकसित किया जा सकता है। कई अन्य स्थलों में भी विकास हो हिमाचल प्रदेश का जिला चंबा आजादी से पहले उत्तर पश्चिमी हिमालय का एक मुख्य रजवाड़ा हुआ करता था, जो आजादी के बाद हिमाचल प्रदेश में 1948 में शामिल हुआ और जिला चंबा कहलाया। हालांकि लाहौल का भी कुछ क्षेत्र चंबा रजवाड़े का भाग हुआ करता था जिसे चंबा लाहौल कहा जाता था। पंजाब-हिमाचल के पुनर्गठन के बाद कुल्लू-लाहौल का मुख्य भाग भी जब हिमाचल में शामिल हो गया तब चंबा लाहौल वाला क्षेत्र जिला लाहौल-स्पीति में डाल दिया गया। चंबा रजवाड़ा शासन के अंतर्गत अन्य पहाड़ी रजवाड़ों से विकसित और प्रगतिशील माना जाता था, जहां 1870 से पहले राजा श्री सिंह के समय आधुनिक चिकित्सालय का निर्माण हो चुका था, राजा शाम सिंह के समय जिसे 40 बिस्तर का अस्पताल बनाया गया। राज्य के दूरदराज हिस्सों को सडक़ों से जोड़ा गया। विद्यालय खोले गए। प्रतिभाशाली छात्रों को राज्य से बाहर पढऩे के लिए छात्रवृत्ति दने की व्यवस्था हुई। 1881 में एशिया का पहला कुष्ठ रोग चिकित्सा केंद्र खोला गया। राज्य में डाक व्यवस्था से संपर्क व्यवस्था खड़ी की गई। 1908 में भूरि सिंह संग्रहालय की स्थापना हुई। 1910 में जल विद्युत पॉवर हाउस बनाया गया। जब चंबा में बिजली थी, तब कांगड़ा और अन्य हिमाचली रजवाड़ों में कहीं भी बिजली नहीं थी। आजादी के समय पहाड़ी क्षेत्रों को पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र कह कर पंजाब में मिलाने की बात हो रही थी, जिसके पीछे तर्क छोटे राज्य के लिए आर्थिक संसाधन जुटाना संभव नहीं था। उस समय हिमाचल के पूर्वी छोर पर तीन जिले मंडी, शिमला और सिरमौर ही हिमाचल में शामिल हो रहे थे। चंबा तो अलग-थलग पश्चिमी छोर पर था। किंतु चंबा ने प्रजामंडल के माध्यम से अलग पहाड़ी प्रदेश की मुहिम में शामिल होकर हिमाचल के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और हिमाचल के गठन को संभव बनाया। बिलासपुर रजवाड़ा तो बाद में 1952 में हिमाचल में मिला। इसलिए चंबा के महत्व को उस समय के नेतृत्व ने समझा और समय के साथ चलने के लिए जरूरी विकास कार्य बखूबी हुए। बिजली को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाने का कार्य 1955 के बाद ही आरंभ हो गया। उस समय हिमाचल सी श्रेणी राज्य था जिसे पर्याप्त केन्द्रीय सहायता प्राप्त थी। चंबा की प्रमुख ग्रामीण सडक़ों का निर्माण शुरू हुआ। प्रदेश का पहला सामुदायिक विकास ब्लाक भटियात (चंबा) में खोला गया। स्कूलों के भवन, पटवारखाने आदि के भवन बनाए गए। दुर्भाग्य से राज्य पुनर्गठन के बाद चंबा का राजनीतिक कद छोटा होता गया। चंबा धीरे धीरे पिछड़ता गया। आज देश के 112 सबसे पिछड़े जिलों में इसकी गणना हो रही है। हिमाचल में भी चंबा अंतिम पायदान पर खड़ा है। हालांकि जिला के पास विकास के लिए प्राकृतिक संसाधन प्रचुरता से उपलब्ध हैं। जिला में 2952 मेगावाट जल विद्युत की क्षमता है जिसमें से 1500 मेगावाट क्षमता का दोहन वर्तमान में हो रहा है। जिला का भौगोलिक स्वरूप विविधतापूर्ण है। यहां 2000 फुट से 21000 फुट तक ऊंचाई के क्षेत्र विद्यमान हैं, जहां उष्णकटिबंधीय से लेकर शीत मरुस्थलीय जलवायु उपलब्ध है। इसमें हर प्रकार की फसलों, जड़ी-बूटियों और वन उपजों का उत्पादन होता है। जिला का क्षेत्रफल 692419 हैक्टेयर है। आबादी 519080 है, जिसमें 56.65 फीसदी कर्मकार आबादी है। वन भूमि भी काफी है। कृषि क्षेत्र 70563 हैक्टेयर है। साक्षरता दर 72.17 प्रतिशत है। वर्तमान में चंबा के पिछड़ेपन के प्रमुख तीन कारण हैं : आवागमन एवं संचार व्यवस्था में कठिनाइयां, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था का अभाव, स्वास्थ्य व्यवस्था का अभाव। इन तीन कमियों के कारण जो भी व्यक्ति समर्थवान हो जाते हैं, वे यहां से दूसरी जगहों में बस जाते हैं। स्थायी प्रवास का आंकड़ा भी जिला में काफी होगा जिसका इशारा बढ़ते गैर आबाद गांव की संख्या से भी मिल जाता है। 2001 में गैर आबाद गांव 473 थे जो अब 481 हो गए हैं। यहां की प्रशासनिक व्यवस्था भी डांवाडोल ही रहती है। चंबा में पोस्टिंग को लोग सजा के तौर पर देखते हैं और यहां से बदली करवाने के चक्कर में रहते हैं। यही कारण है कि मेडिकल कॉलेज जैसी महत्वपूर्ण संस्थाओं में भी डाक्टरों की रिक्तियां भरी नहीं जा सकती। कृषि-बागवानी आदि प्रमुख विभागों में भी ज्यादातर स्थान अमूमन खाली रहते हैं। यही कारण है कि चंबा के संसाधनों और क्षमताओं के समुचित दोहन की व्यवस्थाएं खड़ी नहीं की जा सकी हैं। अधिकांश क्षेत्र बागवानी और बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन के योग्य होने के बावजूद सलूणी तहसील को छोड़ कर कोई क्षेत्र पहचान नहीं बना सका है। देखते देखते शिमला, कुल्लू, सोलन कहां पहुंच गए और चंबा कछुआ चाल से ही चल रहा है। चंबा के पास छठी शताब्दी के मंदिरों से लेकर सुंदर पर्यटन स्थलों की भरमार है, किन्तु डलहौजी के अलावा कुछ भी विकसित नहीं कर सके। चंबा शहर के मंदिर एक हजार साल से ज्यादा पुराने हैं। संग्रहालय, पुराने महल, सुंदर चौगान, जम्मुहार, सूही, चामुंडा, छतराड़ी, भटालवा के मंदिर अपनी क्षमता के अनुरूप पहचान को तरसते हैं। खजियार भी पूरी तरह विकसित नहीं हो सका है। भरमौर के मन्दिर छठी सातवीं शताब्दी के हैं, जो शिव पंचायतन के रूप में स्थित हैं, जिसमें भगवान नृसिंह, सूर्य, चित्रगुप्त के मंदिर सामान्यत: कम ही देखे जाते हैं। मणिमहेश यात्रा के विकास पर भले ही ध्यान दिया गया है, किन्तु यह मौसमी गतिविधि है। भरमौर पर्यटन को वर्ष भर के लिए विकसित किया जा सकता है। भटियात के कुंजर महादेव, गणेशगढ़, तारागढ़ को विकसित किया जा सकता है। जोत में तो स्वत:स्फूर्त विकास हो रहा है, किन्तु ऐसे स्थलों पर जिम्मेदार पर्यटन के विचार पर भी कार्य होना चाहिए जिससे पर्यावरण को नुकसान न पहुंचे। कालाटॉप, गमगुल, कुगति वन्यप्राणी अभ्यारण्यों में पर्यटन को व्यवस्थित किया जा सकता है। चंबा जैसी स्वादिष्ट मक्की आपको कहीं नहीं मिलेगी। साहो-भरमौर के माश व भरमौर के कई पुराने खाद्य व्यंजन पर्यटन की विशिष्टता बन सकते हैं। चंबा में कई हस्तशिल्प अभी तक भी जिंदा हैं और वैश्विक पहचान बनने की ताकत रखते हैं।

दैनिक
# विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, बुधवार 21 अगस्त 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com


## संक्षिप्त समाचार

### हमें प्रभु के जैसा पुरुषार्थ प्रारंभ करना है, देह में नहीं विदेह में विराजमान होना है: मुनिश्री निर्ग्रंथ सागर जी महाराज

**कोल्हापूर ( विश्व परिवार )।** श्रमण संस्कृती के प्रमुख आचार्यो में से एक चर्या शिरोमणी आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी के शिष्य मुनिश्री निर्ग्रंथ सागर जी ने कहा कि हमें प्रभु के जैसा पुरुषार्थ प्रारंभ करना है, देह में नहीं विदेह में विराजमान होना है। मोक्ष की प्राप्ति निज आत्म प्रदेशों से होती है, कोई प्रदेश अथवा कोई भी क्षेत्र मोक्ष नहीं दिलाता। यदि संसार के क्षेत्र मोक्ष दिलाते होते तो हमने निगोध से लेकर आज तक अनंत पर्याओं को धारण किया और अनेक प्रदेशों में गमन किया, लेकिन हमें मोक्ष निर्वाण की प्राप्ति नहीं हुई। यह तीर्थ भूमिया, निर्ग्रंथ भेष भी मोक्ष नहीं दिलाएंगे, केवल भावों की विशुद्धि ही मोक्ष दिलाती है। कोटी जन्मों से हमने इस भेष को धारण किया, अनंत बार तपस्या की, लेकिन फिर भी यह परम पद निर्वाण को प्राप्त नहीं किया, जबकि आत्म ज्ञान से युक्त एक क्षण की तपस्या भी अनंत भवों के कर्मों का क्षय करा देती है और उस निर्वाण पद को प्राप्त करा देती है, लेकिन हमारी तपस्या में, हमारे भावों में कहीं न कहीं कमी थी। वस्तु की प्राप्ति का होना नियति है और जो वस्तु प्राप्त हुई है उसका कैसा प्रयोग करना या नहीं करना, यही हमारा पुरुषार्थ है। आप भी अपने जीवन में कुसंस्कारों को छोड़कर सुसंस्कारों को धारण करें। उस परम पद निर्वाण को प्राप्त करने का पुरुषार्थ करें। 'सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः।' यह जैन दर्शन का प्रसिद्ध सूत्र है, अर्थात् सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र की संयुति ही मोक्ष का मार्ग है। सम्यक् शब्द समीचीनता का द्योतक है। यह तीनों में अनुगत है। यहाँ दर्शन का अर्थ श्रद्धा है, तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप की श्रद्धा को सम्यक् दर्शन कहते हैं। वास्तविक बोध सम्यक् ज्ञान है तथा आत्म-कल्याण के लिए किया जाने वाला सदाचरण सम्यक् चारित्र है। सम्यक् श्रद्धा, ज्ञान और आचरण तीनों के योग से ही मोक्ष मार्ग बनता है। लोक में रत्नों की तरह दुर्लभ होने के कारण इन्हें रत्नत्रय भी कहते हैं, ये तीनों मिलकर ही मोक्षमार्ग कहलाते हैं। -**अभिषेक अशोक पाटील**

### भारतीय प्रशासनिक सेवा के दो अफसरों के प्रभार में फेरबदल

**रायपुर ( आरएनएस )।** राज्य शासन द्वारा भारतीय प्रशासनिक सेवा के दो अधिकारियों के प्रभार में फेरबदल किया गया है। मंगलवार शाम सामान्य प्रशासन विभाग छग द्वारा जारी आदेश के अनुसार अभिजित सिंह संयुक्त सचिव,गृह एवं जेल विभाग को उनके वर्तमान कर्तव्यों के साथ-साथ संयुक्त सचिव चिकित्सा शिक्षा विभाग का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है।

इसी तरह प्रभात मलिक मुख्य कार्यपालन अधिकारी छत्तीसगढ़ इंफोटेक प्रमोशन सोसायटी (चिप्स) रायपुर तथा अतिरिक्त प्रभार संयुक्त सचिव सुशासन एवं अभिसरण विभाग को उनके वर्तमान कर्तव्यों के साथ-साथ संयुक्त सचिव इलेक्ट्रानिकक एवं सूचना प्रोद्योगिकी विभाग का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है।

## आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज ने कहा- वात्सल्य का महापर्व है रक्षाबंधन

**दिल्ली ( विश्व परिवार )।** कृष्णानगर जैन मंदिर में परमपूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर महामुनिराज के पावन सानिध्य में मची हुई हैं आयोजनों की धूम। जैन श्रमण संस्कृति से संबद्ध रक्षाबंधन महापर्व का भव्य आयोजन आचार्य श्री के ससंघ सानिध्य में सम्पन्न हुआ। प्रात: जिनेन्द्र भगवान का मांगलिक अभिषेक एवं शान्तिधारा की गई जिसका सोभाग्य श्री टीनू, मीनू जैन परिवार को प्राप्त हुआ भगवान श्रेयांसनाथ (जैन धर्म के 11वें व तीर्थंकर) के मोक्षकल्याणक के पावन प्रसंग पर जिनपूजा एवं जैन धर्म के 19 वे तीर्थंकर भगवान मल्लिनाथ स्वामी के काल में आचार्य अकंपन स्वामी के 700 मुनिराजों के संघ पर घोर उपसर्ग हुआ था जो विष्णुकुमार मुनिराज के माध्यम से दूर हुआ। तभी से वात्सल्य का यह महापर्व रक्षाबंधन भारत में प्रचलित हुआ। आचार्य श्री ने अपने धर्मोपदेश के माध्यम से बताया है कि जैन धर्म में रक्षाबंधन पर्व वात्सल्य का पर्व है। रक्षाबंधन पर्व सिद्धान्त की प्रयोगशाला में आचरण का शंखनाद है।

आचार्य अंकपन स्वामी आदि मुनिराज एवं विष्णुकुमार मुनि आचरण के प्रस्तोता है। दिगम्बर संतों ने जिनागम कथित दृढ़ श्रद्धा, तप, त्यागमय आचरण को जगत में प्रसिद्ध किया है। आगमानुसार चर्या का पालन करने वाले आचार्य अकंपन स्वामी के संघ पर घोर उपसर्ग होता जानकर मुनिवर विष्णुकुमार ने अपनी श्रेष्ठ साधना के फल से प्राप्त विक्रिया ऋद्धि के द्वारा उपसर्ग निवारण कर जो परस्पर साधु वात्सल्य का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया वही दिन रक्षाबंधन पर्व के रूप में विख्यात हुआ है। जैन शास्त्रों के अनुसार रक्षाबंधन विशुद्ध धार्मिक पर्व है। इस दिन श्रमण संघ एवं श्रावक के मध्य वात्सल्य का मधुर संबंध स्थापित हो। इस दिन श्रावक मुनि संघ की पूजा आराधना करें एवं अपने धर्मायतनों की रक्षा का संकल्प दुहरावें। सभी साधक, पंथवाद एवं जातिवाद की दीवारों में बचकर विष्कुकुमार मुनि का आचरण अपनायें। प्रवचन के उपरान्त 700 जोड़ों के माध्यम से आचार्य संघ का भव्य पड़गाहन किया गया।

## राष्ट्र व धर्म की रक्षा सर्वोपरि : आचार्य अतिवीर मुनि

**दिल्ली ( विश्व परिवार )।** परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज ने श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर, अशोक विहार फेज़-1 में दिनांक 19 अगस्त 2024 को वात्सल्य पर्व रक्षाबंधन के अवसर पर धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि जब भी सम्यकदर्शन के वात्सल्य अंग की चर्चा करते हैं तो आज की कथा का उल्लेख अवश्य होता है। हस्तिनापुर नगरी में अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनिराजों की रक्षा हेतु विष्णु कुमार मुनि ने अपने मुनि पद का त्याग कर वात्सल्य भावना का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत किया।

श्रावकों के लिए साधुओं व साधर्मी की रक्षा करना आवश्यक है। वर्तमान में यदि किसी साधु पर कोई संकट आ जाए तो कोई भी व्यक्ति उसके निवारण के लिए आगे नहीं आता। परन्तु चर्या में कोई कमी हो तो हजारों लोग टोकने के लिए खड़े हो जाते हैं। रक्षाबंधन पर्व मनाने की सार्थकता तभी होगी जब सभी लोग अपने साधर्मीजनों की रक्षा का संकल्प लेंगे।

आचार्य श्री ने आगे कहा कि एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण तभी संभव है जब वहां का प्रत्येक नागरिक समर्पण की भावना से ओतप्रोत होगा। राष्ट्र व धर्म की रक्षा करना सभी श्रावकों का परम कर्त्तव्य है। वात्सल्य का अर्थ काफी विस्तृत है। आज हर तरफ हिंसा का तांडव चल रहा है। जगह-जगह आधुनिक बूचडखाने खुलते जा रहे हैं। शायद हमने वात्सल्य को केवल इंसानों तक ही सीमित कर दिया है। परन्तु वात्सल्य तो प्राणी-मात्र के प्रति होना चाहिए।

जैन समाज के समक्ष आज एक और चुनौती खड़ी है। हमारे पावन तीर्थ आज धीरे-धीरे हमारे हाथों से छूट रहे हैं। परन्तु अफ़सोस हमारी जैन समाज निष्क्रिय होकर हाथ पर हाथ रखे बैठी है। अहिंसा का चोला ओढ़कर हम लोग धीरे-धीरे कायर बन गए। रक्षाबंधन का यह पर्व हमें तीर्थ संरक्षण के लिए भी प्रेरित करता है। इस अवसर पर समाज की महिलाओं व बालिकाओं ने राखी सजाओ प्रतियोगिता में हिस्सा लेकर आकर्षक राखियां प्रस्तुत की जिसके पश्चात सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। -**समीर जैन**

## पट्ट गणिनी आर्यिका विमलप्रभा माताजी सानिध्य में मनाया गया रक्षाबंधन पर्व, श्रेयांश नाथ भगवान को चढ़ाया गया निर्वाण लाडू

**रामगंजमंडी ( विश्व परिवार )।** परम पूजनीय पट्ट गणिनी आर्यिका 105 विमलप्रभा माताजी एवम संघस्थ आर्यिका 105 श्री विजय प्रभा माताजी, क्षुल्लिका 105 श्री विनीतप्रभा माताजी, क्षुल्लिका 105 श्री सुमैत्री श्री माताजी संघ सन्निध्य में रक्षाबंधन पर्व मनाया गया पर्व के अंतर्गत सर्वप्रथम श्री जी का अभिषेक शांति धारा नित्य पूजन के उपरांत श्रेयांश नाथ भगवान का पूजन, अकंपनाचार्य आदि 700 मुनियों की पूजन भक्ति भाव के साथ मूल नायक शांतिनाथ भगवान के समक्ष की गई पूजन उपरांत निर्वाणकांड बोलते हुए अर्ध समर्पण कर निर्वाण लाडू समर्पित किया गया जिसे विशेष रूप से बनाया गया था। इसके उपरांत मंदिर की में विशेष रूप से सजाई गई राखी बांधी गई। मंदिर में इस आयोजन को लेकर काफी उत्साह था। इसके उपरांत पद्मावती माता को भी राखी समर्पित की गई। इस अवसर पर पूज्य गुरु मां की पिच्छिका पर भी भक्तों ने रक्षा सूत्र बांधकर गुरु मां की एवं धर्म की साधु संतों की सेवा का संकल्प लिया।

इस पुनीत बेला में पट्ट गणिनी आर्यिका 105 विमलप्रभा माताजी ने रक्षाबंधन के पर्व पर इसके महत्व को बताते हुए कहा कि हम आज रक्षाबंधन पर्व मना रहे हैं, रक्षाबंधन के साथ-साथ आत्म धर्म की भी रक्षा करो। दीपावली, महावीर जयंती व्यक्ति विशेष पर्व है लेकिन रक्षाबंधन पर्व एक विशेष पर्व है। रक्षाबंधन पर्व स्वर्णिम संस्कृति एवं इतिहास को प्रेरित करता है। जैन दर्शन में रक्षाबंधन पर्व का विशेष महत्व है इस पर्व के दिन 700 मुनियों का उपसर्ग दूर हुआ था। मुनि धर्म सुरक्षित है तो श्रावक धर्म भी सुरक्षितहै। मुनि धर्म से ही एवं मुनियों से ही श्रावक को धर्म का ज्ञान होता है। इस पर्व को राष्ट्रीय सांस्कृतिक पर्व भी कहते हैं। रक्षाबंधन पर्व वात्सल्य की भूमिका देता है भाई बहन का रिश्ता पवित्र होता है। यह पर्व हमें रोशनी देता है जिसे हम भुला नहीं सकते। यह एक महापर्व है जो सिद्धांत सामाजिक रीति से जुड़ा हुआ है। यह रक्षा सूत्र है और रक्षा सूत्र के साथ धर्म के सूत्र से साथ संयम एवं ब्रह्मचर्य के सूत्र से बंधना चाहिए वात्सल्य अंग सम्यक दर्शन का प्रतीक होता है। जो त्यागी व्रती की आराधना करता एवं नगर में उनके आने पर उनकी सेवा करता है यह वात्सल्य अंग को दर्शाता है। पूज्य माताजी ने कहा कि जिन धर्म जिन शासन वह सूत्र है उसके प्रति संकल्पित हो तभी यह रक्षाबंधन बनाना सार्थक होगा। -**अभिषेक जैन लुहाड़िया**

## छत्तीसगढ़ में अब तक 806.1 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** राज्य शासन के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा बनाए गए राज्य स्तरीय नियंत्रण कक्ष द्वारा संकलित जानकारी के मुताबिक एक जून 2024 से अब तक राज्य में 806.1 मिमी औसत वर्षा दर्ज की जा चुकी है। राज्य के विभिन्न जिलों में 01 जून 2024 से आज 20 अगस्त सवेरे तक रिकार्ड की गई वर्षा के अनुसार बीजापुर जिले में सर्वाधिक 1740.2 मिमी और सरगुजा जिले में सबसे कम 440.2 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गयी है। राज्य स्तरीय बाढ़ नियंत्रण कक्ष से प्राप्त जानकारी के अनुसार एक जून से अब तक सूरजपुर जिले में 799.1 मिमी, बलरामपुर में 1160.5 मिमी, जशपुर में 648.0 मिमी, कोरिया में 815.9 मिमी, मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में 817.5 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गयी। इसी प्रकार, रायपुर जिले में 689.8 मिमी, बलौदाबाजार में 828.5 मिमी, गरियाबंद में 766.3 मिमी, महासमुंद में 580.5 मिमी, धमतरी में 729.1 मिमी, बिलासपुर में 715.0 मिमी, मुंगेली में 789.3 मिमी, रायगढ़ में 722.9 मिमी, सारंगढ़-बिलाईगढ़ में 458.9 मिमी, जांजगीर-चांपा में 800.0 मिमी, सक्ती 677.4 मिमी, कोरबा में 1006.4 मिमी, गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही में 756.7 मिमी, दुर्ग में 512.5 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गयी। कबीरधाम जिले में 640.1 मिमी, राजनांदगांव में 836.6 मिमी, मोहला-मानपुर-अंबागढ़चौकी में 935.1 मिमी, खैरागढ़-छुईखदान-गंडई में 595.4 मिमी, बालोद में 857.1 मिमी, बेमेतरा में 464.9 मिमी, बस्तर में 886.6 मिमी, कोण्डागांव में 803.9 मिमी, कांकेर में 1039.4 मिमी, नारायणपुर में 944.1 मिमी, दंतेवाड़ा में 1025.1 मिमी और सुकमा जिले में 1118.0 मिमी औसत वर्षा एक जून से अब तक रिकार्ड की गई।

## संगम में हुआ महासंगम, मनाया गया रक्षाबंधन का त्यौहार

**जबलपुर ( विश्व परिवार )।** संगम कॉलोनी के जैन मंदिर में रक्षाबंधन पर्व पर अद्भुत दृश्य देखने को मिला जब आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं आचार्य श्री समय सागर जी के शिष्य वात्सल्य शिरोमणि प्रसादसागर जी के सानिध्य में इस त्यौहार को भक्तो द्वारा बड़े ही जोश और धूम धाम के साथ मनाया गया जिसमें भक्तो ने जैन धर्म के 11 वें तीर्थंकर श्रेयांशनाथ भगवान के मोक्ष कल्याणक अवसर पर निर्वाण लाडू समर्पित किया गया और साथ साथ कई भक्तो ने 700-700 श्रीफल उन मुनिराजो को समर्पित किए जिन पर आज ही के दिन हस्तिनापुर में उपसर्ग हुआ था जिस कथा की नाट्य प्रस्तुति हनुमानताल के बच्चो द्वारा करी गई, मुनि श्री ने अपने उद्बोधन में बताया की कैसे राजा बलि के राज्य में हस्तिनापुर में 700 मुनिराजो को जीवित जलाने का प्रयत्न किया गया था और जिस उपसर्ग को रोकने के लिए विष्णुकुमार मुनि राज ने अपने मुनि पद को त्याग कर बटुक रूप लिया था और 700 मुनिराजो की रक्षा करी थी जिसके संकल्प के रूप में उस कथा को याद करते हुए हम सभी यह पर्व मनाते है साथ ही मुनि श्री ने सभी से कहा की इस पर्व को सिर्फ भाई बहन तक सीमित नहीं रखना चाहिए अपितु इसे विश्व मैत्री संकल्प दिवस के रूप में प्रेम , वात्सल्य , जीव दया और प्राणी मात्र की रक्षा के लिए मनाना चाहिए अत: सभी को एक दूसरे से मिलकर एक दूसरे की रक्षा करनी चाहिए तभी हम पुन: राम राज्य ला सकेंगे प्रवचन के उपरांत मुनि संघ के सानिध्य में सभी ने सामूहिक रूप में मंत्र उच्चारण के साथ राखी बांधी।

## स्व. राजीव गांधी की जयंती पर कांग्रेसजनों ने दी श्रद्धांजली

**रायपुर ( आरएनएस )।** छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कार्यालय राजीव भवन रायपुर में स्व. राजीव गांधी जी की जयंती के अवसर उनके छायाचित्र में पुष्पांजली माल्यार्पण अर्पित कर स्मरण कर श्रद्धांजली दी गयी।

इस अवसर पर नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत, पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, वरिष्ठ कांग्रेस नेता रविन्द्र चौबे, पूर्व मंत्री एवं विधायक उमेश पटेल, पूर्व मंत्री एवं विधायक अनिला भेड़िया, विधायक जनक ध्रुव, इन्द्र साव, चतुरी नंद, विधायक रामकुमार यादव, विधायक संदीप साहू, विधायक बालेश्वर साहू, प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला, गुरूमुख सिंह होरा, पंकज शर्मा, शिव सिंह ठाकुर, सुबोध हरितवाल, उधोराम वर्मा, कुलदीप जुनेजा, सलाम रिजवी, पूनम पांडेय, सारिक रईस खान, प्रशांत ठेंगड़ी, दिनेश ठाकुर, कमलेश नाथवाणी, श्री निवास, पुष्पराज वैद, नवीन चंद्राकर, उमेश कश्यप, भारत यादव प्रवीण चंद्राकर सहित कांग्रेसजन उपस्थित थे।

## जिसने रसना को जीता, उसने जगत जीत लिया : विराग मुनि जी

### एमजी रोड स्थित जैन दादाबाड़ी में चातुर्मासिक प्रवचन

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** भगवान महावीर का जीवन पढ़िए। समझिए। व्यवहार में लाइए। वे एक द्रव्य से आराधना कर लेते थे। आज नाना प्रकार की चीजें मिलने के बाद भी संतुष्टि नहीं है। गलतियां निकाल रहे हैं। इस तरह से तप करेंगे तो राग घटने की जगह बढ़ेंगे। तप रखते हैं और पारणा होटल में करते हैं, ये हम कहां जा रहे हैं?

एमजी रोड स्थित श्री जैन दादाबाड़ी में श्री विनय कुशल मुनि म. सा. के पावन सानिध्य में चल रहे चातुर्मासिक प्रवचन में विराग मुनि म. सा. ने यह बातें कही। उन्होंने कहा, केवल सफेद कपड़े पहनने से मोक्ष मिल जाता तो कोई भी पहन लेता। बाहरी क्रियाओं से कुछ नहीं होगा। धर्म-त्याग हमें अपने भीतर लाना होगा। इंद्रियों के वश में होने पर कई पाप हम तन नहीं, मन से ही कर बैठते हैं। शर्म एवं पाप के डर से विचारों से पाप कर्म कर रहे हैं। कर्म सत्ता किसी को नहीं छोड़ने वाली। कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा। मनुष्य भव पाप घटाने के लिए मिला है?। हम बढ़ाने में लगे हैं। इंद्रियों की गुलामी से अपनी आत्मा को आजाद करिए।

धन पुण्य से मिलता है, पहले हाथ देने वाले थे, मुगलों-अंग्रेजों के बाद लेने वाले बन गए

मुनिश्री ने कहा कि मिलेगा उतना ही, जितना आपके भाग्य में लिखा है। धन पुण्य कमाने से मिलता है। पुराने जमाने में हमारे पूर्वजों ने खुले हाथों से धन लुटाया। धर्म के काम किए। पहले भरत-शत्रुघ्न देने के लिए लड़ते थे, आज लेने के लिए लड़ रहे हैं। मुगलों और अंग्रेजों के शासनकाल के बाद यहां भी लोग लेने वाले हो गए हैं। धन कमाने के लिए आज लोग चोरी, डाका, धोखा, हत्या से लेकर देशद्रोह जैसा गंभीर अपराध कर रहे हैं। झूठ बोलकर जिंदगीभर कमाए पैसे कहां लेकर जाएंगे? सब यहीं धरा रह जाएगा। चारित्र्य, दर्शन और ज्ञान ही असल पूंजी है। इसी से आत्मा का कल्याण होगा। पैसे कमाने के लिए पाप करेंगे तो आत्मा की गति बिगड़ेगी।

भेदभाव छोड़कर सबको एक नजर से, देखिए, कलयुग भी सतयुग बन जाएगा

मुनिश्री ने कहा कि किसी को छोटा, किसी को बड़ा नहीं आंकना चाहिए। न ही और किसी आधार पर भेदभाव किया जाना चाहिए। सब एक-दूसरे के प्रति समभाव रखें। समाज इन्हीं कुछ आदर्शों पर चल पाए तो आज कलयुग में भी हम सतयुग जिंदा कर सकते हैं। आप पूरी दुनिया को नहीं सुधार सकते, न ही ये आपकी जिम्मेदारी है। आप खुद को सुधार सकते हैं। अपने आसपास के लोगों को प्रेरित कर सकते हैं। अपनी भूमिका निभाइए।

महान सिद्धि तप में सातवीं लड़ी का पहला उपवास शुरू

आत्मस्पर्शीय चातुर्मास समिति के अध्यक्ष पारस पारख और महासचिव नरेश बुरड़ ने बताया, महान सिद्धि तप के अंतर्गत मंगलवार को सातवीं लड़ी का पहला उपवास रहा। 31 मासखमण के तपस्वी विजय संचेती ने इस बार भी 31 उपवास किया है। मंगलवार को उन्हें धर्मसभा में श्रीसंघ की ओर से सम्मानित किया गया। मुकेश निमाणी और गौरव गोलछा ने बताया कि दादा गुरुदेव इकतीसा जाप के अंतर्गत हर रात 8:30 से 9:30 बजे तक श्री जैन दादाबाड़ी में प्रभु भक्ति का क्रम जारी है।

## हिंसा और क्रोध भाई-बहन की जोड़ी है, जैसे क्रोध आगे बढ़ेगा वैसे ही हिंसा शस्त्र उठाकर उसके पीछे आएगी : श्री श्रमणतिलक विजय जी

### आत्मकल्याण वर्षावास 2024

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** न्यू राजेंद्र नगर स्थित वर्धमान जैन मंदिर के मेघ-सीता भवन में चल रहे आत्मकल्याण वर्षावास 2024 की प्रवचन श्रृंखला में मंगलवार को परम पूज्य श्रमणतिलक विजय जी ने कहा कि हमें अपनी आत्मा को श्रेष्ठ बनने के लिए भगवान महावीर के आदर्शों को जीवन में उतारने की आवश्यकता है। एक साधु भी अगर सावधानी नहीं रखता है तो परिस्थिति बदल सकती है, एक छोटी सी चूक भी मोक्ष प्राप्त करने का खेल बिगाड़ सकती है।

मुनिश्री ने बताया कि एक बार की बात है महाराज वासुदेव शयनकक्ष में सोने जा रहे थे और उस समय बाहर संगीत का आयोजन किया गया था। मधुर संगीत को सुनते हुए वासुदेव सोना चाहते थे और अपने शयनकक्ष में चले गए और उन्होंने दरबारी को कहा कि जैसे ही मैं सो जाऊं संगीत को बंद करवा देना। वासुदेव सो गए और संगीत बजता रहा क्योंकि दरबारी संगीत सुनने में मग्न था और उसने यह नहीं देखा कि वासुदेव सो गए हैं। वासुदेव नींद में तो थे लेकिन लगातार संगीत की आवाज से वह ठीक से सो नहीं पा रहे थे और ऐसे में उन्होंने बाहर आकर देखा तो दरबारी संगीत सुनने में मग्न था। इतना देखते ही वासुदेव क्रोधित हो गए, उनका क्रोध इतना बढ़ गया कि वह हिंसा पर उतर आए और उन्होंने दरबारी के कान में पिघला हुआ कांच डलवा दिया।

मुनिश्री ने कहा कि वासुदेव ने ऐसी हिंसा की क्योंकि उनके अंदर अहंकार आ गया। यह अहंकार सबसे खतरनाक कषाय है और व्यक्ति इसे पहचान नहीं पता है। यह अहंकार वैसे तो छोटे बच्चों के अंदर भी होता है लेकिन हम इसे देख नहीं सकते है। जबकि हमें अगर

गुस्सा आ जाए तो देखकर पता चल ही जाता है जबकि अहंकार किसी व्यक्ति को देखकर नहीं पहचाना जा सकता है। लोगों में इस कदर अहंकार आ चुका है कि वे मंदिर में भगवान के सामने भी झुकना पसंद नहीं करते क्योंकि ऐसा करने से उनकी कपड़ों की प्रेस खराब हो जाती है। आज लोग भगवान से मोक्ष मांगने की बजाय धन-दौलत, मान-सम्मान जैसी हल्की चीज मांगने लगे हैं। एक किसान भी खेत में मेहनत करके अनाज पैदा करता है और उसके साथ-साथ उसे खेतों से घास भी मिल जाती है। अब आपको यह तय करना होगा कि आपको घास के लिए मेहनत करनी है या अनाज के लिए। वैसे भी भगवान की कृपा से आपको वह सब कुछ मिल जाता है जिसकी जरूरत जीवन यापन करने की हो। लेकिन आज अगर किसी के पास थोड़े से पैसे आ जाए तो उसके अंदर है अहंकार आ जाता है। इस अहंकार से विवेक खत्म हो जाता है। वासुदेव ने एक क्षण भी यहां नहीं सोचा की दरबारी को यह समझ में नहीं आया होगा कि मैं सो गया हूं इसके लिए उसे माफ़ भी किया जा सकता है। क्योंकि इसी अहंकार से क्रोध आता है और फिर आवेश और उसके बाद व्यक्ति हिंसा पर उतर जाता है।

मुनिश्री ने आगे बताया कि हिंसा को क्रोध की बहन कहा गया है जैसे-जैसे क्रोध आगे बढ़ेगा वैसे यह बहन शस्त्र उठाकर उसके पीछे आने लगेगी। वासुदेव ने दरबारी के कान में पिघला हुआ कांच डाल दिया लेकिन इससे भगवान नहीं रूठेंगे, यह कर्मसत्ता रूठ जाएगी और यह कर्मसत्ता एक बार रूठ गई तो उसे मनाना आपके लिए बहुत टेढ़ी खीर साबित होगी। किसी की मजबूरी का आज आप अगर फायदा उठा रहे हो तो यह याद रखना कमसत्ता आपसे जरूर बदला लेगी और एक दिन आपको उस कृत्य का चार गुना भुगतान भुगतना होगा।

**अक्षयनिधि, समवसरण व कषाय विजय तप 23 अगस्त से :** आत्मकल्याण वर्षावास समिति 2024 के अध्यक्ष अजय कानूगा एवं ट्रस्ट के अध्यक्ष धरम राज बेगानी ने बताया कि न्यू राजेंद्र नगर स्थित वर्धमान जैन मंदिर में अक्षनिधि, समवसरण और कषाय विजय तप की शुरूआत 23 अगस्त से होने जा रही है। तपस्वियों के एकासने एवं क्रिया संबंधी समस्त व्यवस्था समिति की ओर से की जाएगी।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
# विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर, बुधवार 21 अगस्त 2024



## त्यौहारी सीजन के मद्देनजर खाद्य एवं औषधि प्रशासन की टीम द्वारा दी जा रही दबिश

### जिले के कई प्रतिष्ठानों में खाद्य पदार्थों के नमूने लेकर प्रयोगशाला भेजे गए, कालातीत सामग्रियां कराई गईं नष्ट

**कांकेर।** कलेक्टर निलेश कुमार क्षीरसागर के निर्देशानुसार खाद्य विभाग की टीम द्वारा जिले के विभिन्न होटल, मिष्ठान्न संस्थानों में औचक निरीक्षण कर खाद्य पदार्थों की जांच की गई। साथ मिठाइयों और अन्य खाद्यान्न सामग्रियों के नमूने लेकर रायपुर स्थित प्रयोगशाला में परीक्षण के लिए भेजा गया। खाद्य सुरक्षा अधिकारी विमल कुमार सिंह, खाद्य निरीक्षक अमित कश्यप और उमेश कुमार सिन्हा की संयुक्त टीम द्वारा राखी त्यौहार को दृष्टिगत रखते हुए त्यौहारी सीजन में बहुतायत उपयोग होने वाले खाद्य पदार्थों जैसे मिठाइयों, खाद्य तेल, बेसन, मैदा आदि का निरीक्षण कर विगत दिनों कुल 10 नमूने जांच हेतु लिए गए, जिन्हें राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला कालीबाड़ी रायपुर भेजे गए। खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने बताया कि इनमें मेसर्स जैन मिष्ठान टिकरापारा कांकेर से खोवा, यादव होटल भंडारीपारा कांकेर नारियल चमचम एवं

कलाकंद, जय हिन्द होटल पुराना बस स्टैंड कांकेर से बेसन लड्डू, राजस्थान स्वीट्स कांकेर से पेड़ा, दुर्गेश रेस्टोरेंट चारामा से बर्फी, सुरेश होटल चारामा कलाकंद, जोधपुर

मिष्ठान चारामा मिल्क केक, श्री श्री तारकनाथ मिष्ठान भंडार पखांजुर से चमचम एवं मोचक के नमूना लिया गया। साथ ही जैन मिष्ठान से 15 किग्रा किट एवं कचरे युक्त रसगुल्ला, कालातीत (एक्सपायरी) ब्रेड, एक्सपायरी कोल्डड्रिंक्स को मौके पर नष्ट कराया गया एवं राजस्थान स्वीट्स में 5 किग्रा खराब गुलाब जामुन एवं 3 किलो खराब जलेबी को मौके पर नष्ट कराया गया एवं आगे की कार्यवाही खाद्य सुरक्षा मानक अधिनियम 2006 के तहत की जाएगी। इसी प्रकार यादव होटल भंडारीपारा कांकेर से 2 नग घरेलू सिलेंडर, दिलदार होटल कांकेर से 1 नग घरेलू सिलेंडर, राजस्थान स्वीट्स से 1 नग घरेलू सिलेंडर, राजेश होटल पुराना बस स्टेंड कांकेर से 1 नग घरेलू सिलेंडर, मां जालवा देवी मोमोस कांकेर से 1 नग घरेलू सिलेंडर, दत्ता फास्टफूड कांकेर से 1 नग घरेलू सिलेंडर, आयुष चिकन चिल्ली कांकेर से 1 नग घरेलू सिलेंडर, रूपेश चाट कार्नर कांकेर से 1 नग घरेलू सिलेंडर, पटेल मोमोस कांकेर से 1 नग घरेलू सिलेंडर कुल 10 घरेलू सिलेंडर पर मौके में कार्यवाही की गई।

#### जुर्माने के तौर पर अब तक साढ़े तीन लाख रुपए वसूले गए

साल 2024 में अब तक अतिरिक्त जिला दण्डाधिकारी एवं न्याय निर्णयन अधिकारी जिला कांकेर द्वारा 7 प्रकरण में कार्यवाही करते हुए कुल 03 लाख 49 हजार 999 रुपये की दण्ड राशि अधिरोपित किए जा चुके हैं, जिसमें देशी मदिरा दुकान कांकेर बीस हजार रुपये, दास किराना बांदे दो लाख निनायब्बे हजार नौ सौ निन्यानबे रुपये, राजस्थान स्वीट्स अंतागढ़ दस हजार रुपये आसिफ चिकन सेंटर से पांच हजार रुपये, साहू चिकन सेंटर से पांच हजार, इंडिया चिकन सेंटर पांच हजार, न्यू आबिद भाई चिकन सेंटर से पांच हजार रुपये शामिल है। वर्तमान में अतिरिक्त जिला दण्डाधिकारी एवं न्याय निर्णयन अधिकारी जिला कांकेर 5 प्रकरण लंबित है, जिसमें जय हिन्द होटल कांकेर, सत्यानंद मिष्ठान भंडार पखांजूर, सद्दाम चिकन कांकेर, सोनू ट्रेडिंग भानुप्रतापपुर, ए.एस. बिरयानी कांकेर में दण्ड अधिरोपित किया जाएगा।

## महिला डॉक्टर के साथ हुई दुष्कर्म और हत्या के विरोध में किरंदुल के युवाओं में दिखा आक्रोश

**किरंदुल।** पश्चिम बंगाल के कोलकाता में महिला डॉक्टर मोमिता देबनाथ के साथ हुए दुष्कर्म और हत्या के विरोध में पूरे देश में जन आक्रोश फैला हुआ हैं। देश के अलग-अलग प्रांतों में विभिन्न संघ संगठन द्वारा उक्त घटने की कड़ी निंदा करने के साथ ही दोषियों को कड़ी सजा देने की मांग की जा रहीं हैं। इस घटना के विरोध में लौह नगरी किरंदुल के युवाओं में भी जन आक्रोश देखने को मिला। युवा टीम द्वारा जय स्तम्भ चौक में मोमबत्ती जलाकर पश्चिम बंगाल सरकार के विरोध में जमकर नारेबाजी किया गया और न्याय हेतु आवाज़ बुलंद की गई।

## किरंदुल कॉन्ट्रेक्टर एसोसिएशन में धूमधाम से मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

**किरंदुल।** एनएमडीसी किरंदुल परियोजना में निविदा के माध्यम से कॉन्ट्रेक्ट लेकर कार्य करने वाली ठेकेदारों की संस्था किरंदुल ठेकेदार वेलफेयर एसोसिएशन के नवनियुक्त पदाधिकारियों एवं सदस्यों की गरिमामय उपस्थित में देश का स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम ठेकेदार संघ के अध्यक्ष अतुल सिंह ने संघ के कार्यालय में ध्वजारोहण किया। इस दौरान एसोसिएशन के अध्यक्ष अतुल सिंह ,सचिव हरिशंकर मुखर्जी, उपस्थित रहे।

## भाजपा दंतेवाड़ा ने तूलिका कर्मा के आरोपों का किया खंडन, तूलिका कर्मा के सारे आरोप निराधार : भाजपा

**दंतेवाड़ा।** 15 अगस्त को दंतेवाड़ा जिला अस्पताल में पदस्थ डॉक्टरों द्वारा कमलेश नाग और संतोष साहू पर लगाये गये दुर्व्यवहार के आरोप के मामले को लेकर भाजपा कार्यालय चितालंका में आयोजित प्रेस वार्ता को सम्बोधित करते हुए भाजपा जिला महामंत्री धीरेन्द्र प्रताप एवं संतोष गुप्ता ने कहा की विगत 02 दिनों से समाचार पत्रों

में लिखा जा रहा है की भाजपा पदाधिकारियों के द्वारा 15 अगस्त को जिला अस्पताल में पदस्थ महिला डॉक्टर के साथ दुर्व्यवहार किया गया जबकि 15 अगस्त को जो डॉक्टरों के शिकायत का मामला सामने आया है वो संतोष साहू और विधायक दंतेवाड़ा चैतराम अटामी के पि ए कमलेश नाग के विरुद्ध है जिस पर जांच हो रही है और जांच होने तक कमलेश नाग को दंतेवाड़ा विधायक चैतराम अटामी ने स्वतः पि ए के पदभार से मुक्त कर दिया है, कमलेश नाग भी स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी है जिनकी पदस्थापना जिला अस्पताल में ही है इसलिए मामले पर डॉक्टरों के शिकायत उपरांत जांच हो रही है। भाजपा और विधायक चैतराम अटामी ने हमेशा डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मचारियों का सम्मान किया है और आगे भी करते रहेंग, इसलिये मामले को गंभीरता से लेते हुए विधायक चैतराम अटामी ने पि ए कमलेश नाग को पदमुक्त कर दिया है। अखबारों में लिखा जा रहा है भाजपा पदाधिकारियों द्वारा डॉक्टरों से अभद्र व्यव्हार किया गया जो सरासर गलत और निराधार है डॉक्टरों की शिकायत पि ए कमलेश नाग और संतोष साहू के विरुद्ध है वे दोनों न ही भाजपा पदाधिकारी है और न ही भाजपा के सदस्य है, अगर होते तो दोषी पाये जाने पर भाजपा उन्हें तत्काल प्रभाव से निष्काषित भी करती। इसलिए भाजपा दंतेवाड़ा इस बात का स्पष्ट तौर पर खंडन करती है और पुनः समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों से आग्रह करती है की इस बात पर कांग्रेस पार्टी और कॉग्रेसी नेता जनता को भ्रमित करने, डॉक्टरों को बरगलाकर आपातकाल स्वास्थ्य सेवाओं को बाधित करने की मंशा से बेबुनियाद ओछी राजनीति कर रही है। मामले में किसी भी भाजपा पदाधिकारी की संलिप्तता नहीं है। न ही इसकी शिकायत डॉक्टरों द्वारा की गयी है। आगे पत्रकार वार्ता को संबोधित करते भाजपा जिला महामंत्री द्वय धीरेन्द्र प्रताप एवं संतोष गुप्ता ने कहा की जिला पंचायत अध्यक्ष तूलिका कर्मा विधायक चैतराम अटामी की लोकप्रियता से बौखला गयी है, उनके पास राजनीती करने का कोई मुद्दा नहीं रहा। विधानसभा चुनाव में करारी हार के पश्चात आगे कुछ माह में प्रदेश में संपन्न होने वाले नगरीय निकाय और त्रि-स्तरीय पंचायत चुनाव में अपनी हार सुनिश्चित मानकर वे अभी से डरी हुई है। इसलिए किसी व्यक्ति विशेष के मामले को भाजपा और विधायक चैतराम अटामी से जोड़कर भाजपा और विधायक चैतराम अटामी की छवि को धूमिल करने का प्रयास कर रही है। कर्मा के सारे आरोप बेबुनियाद और निराधार है, कर्मा का बयान इस मुद्दे पर सिर्फ एक ओछी राजनीती के माध्यम से सस्ती लोकप्रियता हासिल करने का विफल प्रयास साबित हुआ है। कर्मा ने अपने बयान में कहा है कि भाजपा नेता संतोष साहू द्वारा महिला डॉक्टर के साथ दुर्व्यवहार किया गया है उन्हें पहले ये जानकारी होनी चाहिए की संतोष साहू भाजपा के न ही कार्यकर्ता पूर्व में थे न ही वर्तमान में है। इस मामले से भाजपा का दूर-दूर तक कोई लेना देना नहीं है न ही डॉक्टरों ने ये कहा है, विधायक चैतराम अटामी के पि ए स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी है वो भी भाजपा के सदस्य नहीं है और इस मामले पर दोनों पक्षों ने अपनी शिकायत दर्ज करवाई है जो जांच का विषय है। जांच हो रहा है और कमलेश नाग को दोषमुक्त पाए जाने तक विधायक चैतराम अटामी ने पि ए के पदभार से मुक्त कर दिया है। तूलिका कर्मा के द्वारा जारी बयान में ये कहना है कि विधायक चैतराम अटामी के संरक्षण में डॉक्टरों के साथ दुर्व्यवहार किया गया है।

## महिला डॉक्टर के साथ हुई दुष्कर्म और हत्या के विरोध में नर्सिंग छात्रों ने निकाला जुलूस

**किरन्दुल।** कोलकाता के आर जी कर मेडिकल में प्रशिक्षु डॉक्टर मोमिता देबनाथ के साथ हुए क्रूर दुष्कर्म और हत्या की घटना की पूरे देश में कड़ी निंदा की जा रहीं हैं साथ ही इस घृणित अपराध के दोषियों को कड़ी सजा मिले इसके लिए देश के अलग अलग प्रांतों में विभिन्न संघ संगठन व आम नागरिक आगे आकर खुलकर विरोध प्रदर्शन कर रहें हैं। इसी कड़ी में दंतेवाड़ा जिले की मोखपाल स्थित विश्व भारती इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग के छात्रों द्वारा इस घटना की कड़ी निंदा करते हुए जुलूस निकाला गया। इस जुलूस में छात्रों ने हाथों में तख्ती लिए पूरे आक्रोश के साथ वी वांट जस्टिस, नो मर्सी टू रेपिस्ट्स के नारे लगाएं। छात्रों ने बताया इस दुखद घटना ने पूरे देश के चिकित्सा समुदाय को झकझोर दिया हैं। यह स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों, विशेष रूप से महिलाओं द्वारा अपने कर्तव्य के दौरान सामना किए जाने वाले खतरनाक जोखिमों और चुनौतियों को उजागर करता है। इस कृत्य की हम कड़ी निंदा करते हैं साथ ही दोषियों को सख्त सजा देने डॉक्टरों के लिए न्याय और बेहतर सुरक्षा उपायों की मांग करते हैं। मौके पर नर्सिंग इंस्टीट्यूट के सीजा चौहान, सुमित्रा झाड़ी, साक्षी, बंसती, लक्ष्मी, प्रियंका निषाद, ममिता, सुशीला, निर्मला, मंजू, रमिता, किरण व अन्य उपस्थित थे।

## स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में श्रमिक संघ एसकेएमएस ने कराया मैराथन दौड़

**किरंदुल।** 78 वीं स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर लौह नगरी किरंदुल में एनएमडीसी परियोजना के श्रमिक संघ एसकेएमएस के सचिव राजेश संधू एवं अध्यक्ष देवरायलू के दिशा निर्देश पर नगर में 6 किलोमीटर की मैराथन दौड़ कराया गया। 15 अगस्त शाम 4:00 बजे नगर के फुटबॉल ग्राउंड से यह मैराथन दौड़ का शुभारंभ एनएमडीसी परियोजना की मुख्य महाप्रबंधक संजीव साही द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया। इस दौड़ में किरंदुल एवं किरंदुल के आसपास के क्षेत्र से लगभग 400 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया था।

जिसमें पुरुष वर्ग में 6 किलोमीटर की यह दूरी मात्र 25 मिनट 55 सेकेण्ड पूरी कर पांडुराम वट्टी ने प्रथम स्थान प्राप्त कर 11000 का नगद पुरस्कार जीता। द्वितीय स्थान पर मोहनलाल तेलाम रहे जिन हैं 7500 रुपए का नगद पुरस्कार प्राप्त हुआ वहीं तृतीय स्थान प्राप्त कर अनिल देहारी ने 5000 का नगद पुरस्कार जीता। महिला वर्ग में इस मैराथन में प्रथम स्थान बीजापुर की सुनीता कुरामी, द्वितीय स्थान पर दंतेवाड़ा की अनीता परसा एवं तृतीय स्थान पर किरंदुल की सीमा भंडारी रही।

वही प्रथम 10 प्रतिभागियों को यह मैराथन दौड़ पूरी करने के लिए हजार रुपए का नगद पुरस्कार दिया गया।

## मातृशक्तियां बचेली ने सावन झूला हरियाली तीज पर किया सावन झूला मिलन समारोह

**बचेली।** मात्र शक्तियों बचेली द्वारा सावन झूला का आयोजन किया गया जिसमें बचेली की महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया राधा कृष्ण की फोटो को झूला में रखकर पूजा अर्चना के बाद का आयोजन का प्रारंभ हुआ महिलाओं को खेल प्रतियोगिता करवाई गई साथ ही झूला भारी-बड़ी से सब ने झूला झूलने का आनंद लिया भाजन पर मात्र शक्तियों झूम के थिरकी मातृशक्ति किरण भदोरिया ने बताते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन पहले से होते रहे हैं और आगे भी सनातनी बहनों के साथ इस तरह की आयोजन होते रहेंगे इस तरह के आयोजन से हमें आपस में मेलजोल बच्चों को आगे आने वाली पीढ़ी को अपने त्योहारों के बारे में बात कर उन्हें उन्हें संस्कार देने का उद्देश्य भी शामिल है सभी को धन्यवाद आभार व्यक्त करते हुए मात्र शक्तियों ने एक दूसरे को बधाई दी आभार दिया और आपस में वादा किया कि हम इस तरह के आयोजन करते रहेंगे क्योंकि जब पहली बार आयोजन हुआ था तो कुछ कमियां थी उसके बाद कुछ और कुछ परेशानी है कुछ भी आए लेकिन इस तरह की आयोजन करने से आत्म संतुष्टि बच्चों के आगे आने वाली पीढ़ी को त्योहारों के बारे में बताने का अवसर मिलता हैं।

## 29वीं वाहिनी, आई.टी.बी.पी. ने बरामद की 2 आई.ई.डी.

**कोण्डागांव।** 29वीं वाहिनी, आई.टी.बी.पी., कोण्डागांव (छ.ग.) और डी.आर.जी. की टीम द्वारा अमदईघाटी-धनोरा-ओरछा एक्सिस में 29 बटालियन पूर्ण डिमाइनिंग ऑपरेशन चलाया जा रहा था। लगभग 40 कर्मियों की पार्टी उक्त उद्देश्य के लिए इंस्पेक्टर/जीडी राजकिशोर के नेतृत्व में धनोरा से रैनार एक्सिस तक आर.एस.ओ. एंड डिमाइनिंग ऑपरेशन में लगी हुई थी। पिकेटिंग प्वाइंट की तलाशी लेने के दौरान, सिपाही/जीडी राम कैलाश को मुरुम खदान के पास (सीओबी धनोरा से लगभग 1200 मीटर दूर) एक मैकेनिज्म से जुड़ी दो आई.ई.डी. (प्रत्येक 2 किग्रा) मिलीं।

आई.ई.डी. को सड़क के बाईं ओर 20 मीटर दूर रखा गया था। आई.ई.डी. की खोज के बाद आईटीबीपी की बीडीडीएस टीम मौके पर पहुंची और सुरक्षित तरीके से आई.ई.डी.को डिफ्यूज

किया गया। महेंद्र प्रताप, सेनानी के मार्गदर्शन में एंव द्वितीय कमान सैय्यद जावेद अली व उप सेनानी ऑप्स सुशील कुकरेती के ऑप्स एरिया में उपस्थिति से उक्त सफलता हासिल हुई और नक्सलियों के मंसूबों नाकाम करते हुए सुरक्षा बलों के विरूद्ध होने वाली बड़ी घटना को बचा लिया। यह आई.टी.बी.पी. टीम की बड़ी सफलता मानी जा रही है।

## के.रि.पु.बल के द्वारा वाहिनी मुख्यालय व सभी समवायों में स्वतंत्रता दिवस बड़े धूम-धाम के साथ मनाया गया

**सुकमा।** स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर रति कान्त बेहेरा, कमाण्डेन्ट द्वारा द्वितीय वाहिनी, के.रि.पु.बल के द्वारा वाहिनी मुख्यालय व सभी समवायों में स्वतंत्रता दिवस बड़े धूम-धाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर वाहिनी मुख्यालय के क्वार्टर गार्ड में सलामी दी गई। तत्पश्चात उनके द्वारा ध्वजारोहण किया गया व इस अवसर पर कमाण्डेन्ट ने जवानों तथा उनके परिवार वालो को हार्दिक बधाई व शुभकामनाए दी। इस मौके पर जवानों व आस-पास के लोगों व बच्चों के बीच मिठाईयां भी बाटा गया। कमाण्डेन्ट ने जवानों को संबोधित करते हुए इस आजादी को दिलाने में हमारे देस के कई शूरवीरों एवं जननायकों के त्याग व बलिदान के बारे में अवगत कराया। इस स्वतंत्रता दिवस पर 9 से 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा व विकसित भारत कार्यक्रम का आयोजन भी सुकमा के विभिन्न स्थानों में किया गया। इस अवसर पर वाहिनी मुख्यालय सबरी नगर सुकमा में साम में अंतर कम्पनी वॉलीवाल मैच का भी आयोजन किया गया था खेल कूद में भाग लेने वाले कार्मिकों को कमाण्डेन्ट के द्वारा पुरस्कृत किया गया तथा इस आजादी के इस पावन अवसर पर द्वितीय वाहिनी के ए/ई समवाय दुलेर में अनामी सरण द्वितीय कमान अधिकारी, बी/सी सवमाय मुर्कराजकोण्डा में अश्वनी कुमार सिंह सहा.

कमाण्डेन्ट, एफ समवाय रामाराम में निरी/ जी.डी भी. डी. वर्मा व जी समवाय चिंतागुफा में निरी/ जी.डी श्रीरंजन एस. के द्वारा ध्वजारोहण किया गया तथा सभी कम्पनी में खेल कूल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा उसमें सफल प्रतिभागियों को कमाण्डेन्ट के निर्देशानुसार समवाय अधिकारी द्वारा पुरस्कृत किया गया। इसके अलावा वाहिनी मुख्यालय एवं वाहिनी के सभी कम्पनीयों में रात्रि में खाने का भी आयोजन किया गया था। जिसमें सभी अधिकारियों, अधीनस्थ अधिकारीयों व जवानों ने एक साथ बैठकर रात्रि भोजन किया। रात्रि में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें कार्मिकों द्वारा ईश्वर वंदना देश भक्ति गीत, व भांगड़ा व विभिन्न प्रकार के रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस मौके पर द्वितीय वाहिनी केरिपुबल के डॉ पंकज कुमार चिकित्सा पदाधिकारी (एस. जी.), पवन कुमार द्वितीय कमान अधिकारी, टी. सैमसन राजू उप. कमाण्डेन्ट, ज्ञानेस प्रताप सिंह सहा. कमा., राकेस कुमार ठाकुर सहा. कमा. एवं अन्य अधीनस्थ अधिकारी व जवान आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर रति कान्त बेहेरा, कमाण्डेन्ट, 02 बटालियन, के.रि.पु.बल के द्वारा जवानों को संबोधित करते हुए बताया गया कि सभी अधिकारी, अधिनस्थ अधिकारी व जवान अपनी-अपनी ड्यूटियों को ईमानदारीपूर्वक, निष्ठा व हिम्मत के साथ करें, ताकि देष की एकता व अखण्डता और सुरक्षा हमेषा अक्षुण्ण बना रहे। तथा उन्होंने सभी अधिकारियों, अधिनस्थ अधिकारियों एवं जवानों तथा उनके परिवार वालों को भारत के 78वॉ स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए दी।

## डीएव्ही मुख्यमंत्री पब्लिक स्कूल रोकेल में धूमधाम से मनाया गया स्वतंत्रता दिवस समारोह

**सुकमा।** स्वतंत्रता दिवस के इस पावन पर्व को मनाने अपने देश के वीर शहीदों की शहादत को याद करने और श्रद्धा सुमन अर्पित करने हेतु बच्चों के शैक्षिक, नैतिक एवं मौलिक गुणों के विकास के लिए वचनबद्ध ग्राम रोकेल विकासखण्ड छिंदगढ जिला सुकमा स्थित डीएव्ही मुख्यमंत्री पब्लिक स्कूल में स्वतंत्रता दिवस के 78वें वर्षगांठ प्राचार्य पी.के. दास के मार्गदर्शन में धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम की शुरूआत सुखदास भट्ट के नेतृत्व में कक्षा 11वी के छात्राएं शैजल गुप्ता, अंशीला बघेल एवं छात्र आदिल रैनी व कक्षा 8वी की छात्रा साक्षी कश्यप और कक्षा 7वी के छात्रा करुणा पदामी कक्षा छटवी का छात्र हर्षित पांडे के मंच संचालन मे मुख्य अतिथि महादेव मुचाकी (जनपद सदस्य) और गणमान्य नागरिकों के उपस्थिति में ध्वजारोहण से हुआ। इसके उपरान्त विद्यालय प्रांगण मे

छात्रों द्वारा बैंड बाजे के धुन मे परेड निकाली। इस दौरान विद्यालय परिसर देशभक्ति के वातावरण से गुंज उठा। संस्था के शिक्षिका जे. शैलेजा व भावना चौहान के नेतृत्व में अतिथियो का स्वागत पुष्पगुच्छ व बैज लगाकर स्वागत गीत से किया गया। तदोपरांत विज्ञान शिक्षिका स्वरूपा व भोनेश्वरी और योगेंद्र साहू के अगुवाई में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसका मुवायना अतिथियों व अभिभावकों ने किया। इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत हमारे अतिथियों के द्वारा स्वतंत्रता सैनानियों के प्रतिमा मे दीप प्रज्वलित पुष्प गुच्छ एवं माल्य अर्पित कर किया गया। प्रियंका बिसोई व कविता बघेल और रुकसाना परवीन के अगुवाई में नन्हे-मुन्ने बच्चों ने देशभक्ति गीतों पर नृत्य प्रस्तुत किये जो बहुत ही काबिले तारीफ था एवं दर्शकों का भरपुर मनोरंजन किया। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित छिंदगढ़ थाना प्रभारी सेराज खान (निरीक्षक) ने अपने उदबोधन में संस्था का प्रशंसा करते हुए कहा कि डीएव्ही जैसे उत्कृष्ट इंग्लिश मीडियम संस्था मे प्रवेश लेकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने की बात रखे। प्राचार्य ने अपने वक्तव्य में संस्था के उपलब्धियों को बताते हुए अपने महान राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारियों उनके कर्तव्यों की महत्ता के प्रति अपने सुविचार समस्त अतिथियों, अभिभावकों, शिक्षक शिक्षिकाओं एवं छात्र छात्राओ के समक्ष प्रस्तुत कर सभी को कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए तहे दिल से आभार व्यक्त किए। इसके उपरांत कार्यक्रम का समापन डीएव्ही गान एवं मिष्ठान वितरण कर किया गया।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
# विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर, बुधवार 21 अगस्त 2024



## व्यापार समाचार

### एयरटेल पेमेंट्स बैंक ने खाते की सुरक्षा बढ़ाने के लिए फेस मैच शुरू किया

**नईदिल्ली।** एयरटेल पेमेंट्स बैंक ने फेस मैच पेश किया है। यह एक सिक्योरिटी इन्हेंसमेंट फीचर है, जो ग्राहकों के खातों की सुरक्षा करने के लिए डिज़ाईन किया गया है। फेस मैच में जटिल मशीन लर्निंग एलगोरिद्म का उपयोग किया जाता है ताकि विभिन्न इनपुट और सिग्नल्स जैसे यूज़र बिहैवियर, ट्रांज़ैक्शन पैटर्न एवं लोकेशन, समान पैटर्न, डिवाईस के ऐतिहासिक डेटा और मोबाईल ऐप आधारित सिग्नल्स के आधार पर हर बचत खाते के यूज़र के लिए एक थ्रेट स्कोर की गणना हो सके। यदि यूज़र इस थ्रेट स्कोर को पार कर लेता है, तो उसका खाता फेस मैच के साथ सुरक्षित हो जाता है और उस खाते में कोई धोखाधड़ी वाला विनिमय नहीं हो सकता। यूज़र को अपने रजिस्टर्ड मोबाईल नंबर पर तुरंत एक नोटिफिक्रेशन प्राप्त होता है, जो उन्हें सूचना देता है कि फेस मैच एक्टिवेट हो गया है और फिर उन्हें अपना विनिमय आगे बढ़ाने के लिए नोटिफिक्रेशन द्वारा लिंक की मदद से त्वरित वैरिफिक्रेशन को पूरा करने का निर्देश प्राप्त होता है। यह लिंक उन्हें एयरटेल थैंक्स ऐप के फेस मैच सेक्शन में ले जाता है, जहाँ यूज़र को एक सेल्फी लेनी होती है, जिसकी तुलना एडवांस्ड फेशियल रिकग्निशन और लिवलिनेस चेक द्वारा ऑनबोर्डिंग की प्रक्रिया के दौरान दिए गए ओरिज़नल फोटो से की जाती है। फोटो का मिलान सफलतापूर्वक पूरा हो जाने के बाद यूज़र अपना विनिमय जारी रख सकते हैं, जबकि फोटो का वैरिफिक्रेशन विफल होने पर यूज़र को वैरिफिक्रेशन के लिए नजदीकी बैंकिंग प्वाईंट पर जाने का निर्देश प्राप्त होता है।

### ब्लैकबेरीज़ ने क्रिकेट की दुनिया के धुरंदर ऋतुराज गायकवाड़ के साथ शुरू किया अपना टेकप्रो कलेक्शन

**गुड़गांव:** भारत के सबसे प्रीमियर मेन्सवेयर ब्रांड ब्लैकबेरीज़ ने फैशन इनोवेशन को एक अलग उंचाई पर ले जाते हुए अपना नवीनतम टेकप्रो कलेक्शन क्रिकेटिंग दुनिया के धुरंधर ऋतुराज गायकवाड के साथ मिलकर लॉन्च किया है। यह टेकप्रो कलेक्शन एक आधुनिक आदमी की पहचान है, जो जीवन के हर पहलु में खुद को ढालने, महत्वाकांक्षा और जीवन के हर पहलू में उत्कृष्टता प्राप्त करने की अथक इच्छा का प्रतीक है। शरीर की सभी तरह की मूवमेंट बेहतरीन आराम प्रदान करने के लिए बनाए गए इस कलेक्शन में कई आधुनिक विशेषताएं है जैसे - बेहतरीन खिंचाव, बिना-सल की डिजाइन, और स्मार्ट ड्राई टेक्नोलॉजी। टी-शर्ट और खाकी से लेकर शर्ट, ट्राउजर, ब्लेजर्स और ऑल सीजन जैकेट तक टेकप्रो कलेक्शन की यह पेशकश ऐसे विकल्प देती है जो व्यावसायिक और निजी दोनों जरूरत को पूरा करें। टेकप्रो कलेक्शन के सभी पीस अलग-अलग स्थानों पर पहनने के लिए उपयुक्त और एक शानदार अनुभव के लिए बने है। चार दिशाओं में बेहतरीन खिंचाव देने वाला यह कपड़ा आपको किसी भी तरीके से चलने-फिरने में बाधित नहीं करेगा। वहीं इसके शार्प कट और टेलर्ड फिनिश आपको बेहद सुसभ्य दिखने में भी मदद करेंगे। इसकी स्मार्ट ड्राई टेक्नोलॉजी यह सुनिश्चित करेगी कि किसी भी प्रकार के मौसम में आप पूरा समय ताजा दिखें। बिना सिलवटों वाला फैब्रिक पूरे दिन आपके शर्ट को नए जैसा बनाए रखेगा। चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान ऋतुराज गायकवाड अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की दुनिया में अपनी अलग पहचान बना चुके हैं जो टेक्नोप्रो कि तरह ही ख़ास है। ब्लैकबेरीज़ के साथ उनका समझौता उत्कृष्टता और नवाचार के प्रति दोनों की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

### एसबीआई लाइफइंश्योरेंस ने पेरिस 2024 पैरालंपिक खेल के लिए गोल्ड स्पॉन्सर के रूप में पैरालंपिक कमेटी ऑफइंडिया (पीसीआई) के साथ की साझेदारी

**मुंबई :** भारत की सबसे भरोसेमंद जीवन बीमा कंपनियों में से एक, एसबीआई लाइफइंश्योरेंस 28 अगस्त 2024 को पेरिस में शुरू हो रहे पैरालंपिक खेल के लिए गोल्ड स्पॉन्सर के रूप में पैरालंपिक कमेटी ऑफइंडिया (पीसीआई) के साथ भागीदारी करने की दिशा में अग्रसर है। इस गठजोड़ का उद्देश्य है, बीमा के महत्व और हर व्यक्ति को अपने सपनों को पूरा करने और वित्तीय रूप से सुरक्षित भविष्य बनाने में इसकी भूमिका के बारे में जागरूकता फैलाकर खेल प्रेमियों के साथ सार्थक रूप से जुड़ना। पैरालंपिक खेल वैश्विक मंच है, जिसमें दुनिया भर के असाधारण एथलीट यह प्रदर्शित करते हैं कि सीमाएं, बाधा नहीं बल्कि बड़ी उपलब्धियां हासिल करने की ओर कदम बढ़ाने में मदद करने वाली सीढ़ियां हैं। पीसीआई के साथ साझेदारी कर एसबीआई लाइफ का उद्देश्य है, सोच में आजादी को बढ़ावा देने, खेल में समावेशिता का समर्थन करने और लोगों को उनके सपनों को पूरा करने के लिए सशक्त बनाने की अपनी प्रतिबद्धता को उजागर करना, चाहे उनके सामने कैसी भी चुनौती हो। एसबीआई लाइफ इन एथलीटों के साथ मज़बूती से खड़े होकर लाखों लोगों को साहस और दृढ़ विश्वास के साथ अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करना चाहती है। इससे ब्रांड की सभी के लिए उज्जवल भविष्य सुनिश्चित करने के प्रति प्रतिबद्धता रेखांकित होती है।

### स्मार्टवर्क्स कोवर्किंग स्पेस लिमिटेड ने सेबी के पास दाखिल किया ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी)

स्मार्टवर्क्स कोवर्किंग स्पेस लिमिटेड (स्मार्टवर्क्स या कंपनी) ने बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है। स्मार्टवर्क्स एक ऑफिस एक्सपीरियंस और मैनेज्ड कैंपस प्लेटफॉर्म है। 31 मार्च, 2024 तक कुल स्टॉक के मामले में बेंचमार्क की गई कंपनियों के बीच स्मार्टवर्क्स सबसे बड़ी मैनेज्ड कैंपस ऑपरेटर है (स्रोत: सीबीआरई रिपोर्ट)। कंपनी इक्विटी शेयर कैपिटल (अंकित मूल्य 10 प्रत्येक) के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम के माध्यम से धन जुटाने की योजना बना रही है, जिसमें 5,500 मिलियन [ 550 करोड़] तक के इक्विटी शेयरों का फ्रेश इश्यू (ताजा निर्गम) और विक्रय शेयरधारकों द्वारा 6,759,480 इक्विटी शेयरों की बिक्री की पेशकश (ऑफर फॉर सेल) शामिल है ।

# वेस्टइंडीज के कप्तान ब्रैथवेट ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 40 रन की हार पर कहा- हम चूक गए

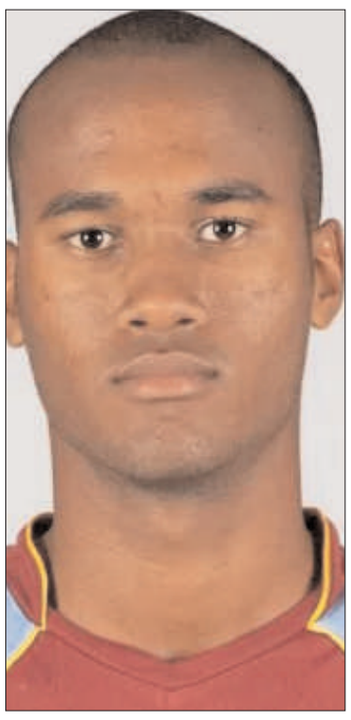

**गयाना( एजेंसी )।** वेस्टइंडीज के कप्तान क्रैग ब्रैथवेट ने प्रोविडेंस स्टेडियम में दूसरे टेस्ट में दक्षिण अफ्रीका से मिली 40 रन की हार में मजबूत गेंदबाजी प्रदर्शन का फायदा उठाने में अपनी टीम की असमर्थता पर अफसोस जताया है। पहली पारी में प्रोटियाज़ को केवल 160 रन पर आउट करने के बावजूद, वेस्टइंडीज़ पिछड़ गया, महत्वपूर्ण बढ़त लेने में असफल रहा और अंततः हार का सामना करना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप श्रृंखला 1-0 से हार गई। पहले बल्लेबाजी करने का फैसला करते हुए, शमर जोसेफ के सनसनीखेज पांच विकेटों की अगुवाई में वेस्टइंडीज के गेंदबाजों ने दक्षिण अफ्रीका को 9 विकेट पर 97 रन पर रोक दिया। हालांकि, डेन पिड्ट और नांद्रे बर्गर के बीच आखिरी विकेट के लिए 63 रन की मजबूत साझेदारी ने दक्षिण अफ्रीका को कुल 160 रन तक पहुंचा दिया। जवाब में, वेस्टइंडीज 144 रन पर आउट हो गया और दक्षिण अफ्रीका ने 16 रनों की मामूली बढ़त हासिल कर ली, जो अंत में महंगी साबित हुई। मैच पर विचार करते हुए, ब्रैथवेट ने दक्षिण अफ्रीका की आखिरी विकेट की साझेदारी के महत्व को स्वीकार किया, लेकिन इस बात पर जोर दिया कि वेस्टइंडीज की पहली पारी की बढ़त हासिल करने में विफलता निर्णायक बिंदु थी। ब्रैथवेट ने दक्षिण अफ्रीका की आखिरी विकेट की साझेदारी का जिक्र करते हुए कहा, हां, अगर आप इसे देखें, तो जाहिर तौर पर यह काफी बड़ा था। लेकिन उन्हें 160 रन पर आउट करके मैं खुश था। उनके लिए वह साझेदारी अच्छी थी। आप जानते हैं, यह क्रिकेट है जहां साझेदारी होती है। इसलिए, मैं वास्तव में उस पर ज्यादा जोर नहीं दूंगा। लेकिन मैं यह कहूंगा कि हमारी पहली पारी का स्कोर बड़ा होना चाहिए। हमें इससे बढ़त हासिल करने की जरूरत थी। मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण था। आप कभी भी गेंदबाजों के 160 रन पर आउट करने के प्रयास के बारे में शिकायत नहीं कर सकते, लेकिन हां, पहली पारी में बल्लेबाजी का प्रयास उतना बड़ा नहीं था, हमें खेल में वापसी करनी पड़ी और अंत में हम चूक गए। सीरीज में हार के बावजूद ब्रैथवेट को कई खिलाड़ियों के प्रदर्शन में सकारात्मकता नजर आई। शमर जोसेफ, जो पहले टेस्ट में नहीं खेले थे, ने पहली पारी में 33 रन देकर 5 विकेट लेकर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला और दक्षिण अफ्रीका के शीर्ष क्रम को झकझोर दिया।

# विनेश फोगाट ने दिए संन्यास वापस लेने के संकेत कहा- लोगों के प्यार से मिली है बहुत हिम्मत

**चरखी दादरी( एजेंसी )।** भारतीय पहलवान विनेश फोगाट भारत वापस लौट आई हैं। इस दौरान विनेश के स्वागत में दिल्ली एयरपोर्ट से उनके पैतृक गांव बलाली तक 135 किलोमीटर लंबा रोड शो निकाला गया। पेरिस ओलंपिक में मेडल न मिलने की निराशा के बाद विनेश ने संन्यास का ऐलान किया था। अब उन्होंने संन्यास वापस लेने के भी संकेत दिए है। भारत लौटने पर बलाली गांव में माता-पिता, खाप पंचायतों और ग्रामीणों ने विनेश फोगाट का भव्य स्वागत किया था। विनेश ने सबसे पहले हनुमान मंदिर में माथा टेका। इसके बाद गांव के खेल स्टेडियम में विनेश फोगाट को एक ओलंपिक गोल्ड मेडलिस्ट की तरह सम्मानित किया। मंच पर विनेश की तबीयत भी बिगड़ गई थी। इसके बाद

विनेश ने कुर्सी पर बैठकर ही लोगों को संबोधित किया। विनेश ने कहा, ओलंपिक मेडल का घाव गहरा है, लेकिन रेसलिंग छोड़ने पर कुछ नहीं कह सकती। मेरी लड़ाई जारी रहेगी। घाव को भरने में बहुत समय लगता है। लेकिन आज जो गांव और देश का प्यार देखा है, इससे मेरे घाव भरने में हिम्मत मिलेगी। जिस रेसलिंग को मैं छोड़ना चाहती थी, या छोड़ दिया है, मैं इस पर कुछ नहीं कह सकती। आज के प्यार से मुझे बहुत हिम्मत मिली है। विनेश ने कहा कि जिंदगी की लड़ाई बहुत लंबी है। हमारी लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। एक छोटा सा हिस्सा मैं पार कर आई हूं। यह भी अधूरा रह गया। हम एक साल से लंबी लड़ाई लड़ रहे हैं, वह आगे भी जारी रहेगी। मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानती हूं कि मैंने ऐसे देश, प्रदेश और बलाली गांव में जन्म लिया है। आज मैं गांव का कर्ज अदा करने में अपनी भूमिका निभा पाई हूं। विश्व चैंपियनशिप में दो बार की पदक विजेता विनेश ने उम्मीद जताई कि गांव का कोई खिलाड़ी उनकी विरासत को आगे बढ़ाएगा और उनसे अधिक सफलता हासिल करेगा। उन्होंने कहा, मैं चाहती हूं कि गांव के हर एक घर से मेरी एक बहन निकले जो मेरे रेसलिंग के रिकॉर्ड तोड़े।

# विश्व टेस्ट चैंपियनशिप मैच और घरेलू क्रिकेट में इन गेंदों का होगा इस्तेमाल, पीसीबी ने की घोषणा

**लाहौर( एजेंसी )।** पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने घोषणा की है कि आगामी 2024/25 सत्र में सभी लाल गेंद वाले घरेलू मैचों के लिए ड्यूक गेंदों का इस्तेमाल किया जाएगा, जबकि विश्व टेस्ट चैंपियनशिप में सात मैच कूकाबुरा गेंदों से खेले जाएंगे। पीसीबी ने अपने बयान में कहा कि यह एक रणनीतिक कदम है जिसका उद्देश्य घरेलू मैदानों की पिचों और मैदानों की स्थितियों के व्यापक विश्लेषण के बाद घरेलू खेल परिस्थितियों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप खेल की गुणवत्ता को बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि ड्यूक गेंद स्थानीय पिचों की विशेषताओं के अनुरूप बनाई

गई है। कूकाबुरा गेंदों का इस्तेमाल पाकिस्तान की घरेलू सीरीज में लंबे प्रारूप में किया जाएगा। बांग्लादेश के खिलाफ आगामी दो टेस्ट, जो क्रमशः रावलपिंडी और कराची में खेले जाएंगे, उसके बाद अक्टूबर में इंग्लैंड के खिलाफ तीन टेस्ट और अगले साल वेस्टइंडीज के खिलाफ दो टेस्ट होंगे, इन सभी मुकाबलों में आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के खेल नियमों के अनुसार, घरेलू बोर्ड के पास इस्तेमाल की जाने वाली क्रिकेट गेंदों के ब्रांड पर निर्णय लेने का विशेषाधिकार है।

# अदाणी ग्रुप की कंपनियों का मुनाफा पहली तिमाही में 50 प्रतिशत बढ़कर 10,279 करोड़ रुपये हुआ

**अहमदाबाद( एजेंसी )।** अदाणी ग्रुप की कंपनियों का मुनाफा वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में सालाना आधार पर 50.1 प्रतिशत बढ़कर 10,279 करोड़ रुपये हो गया है। वहीं, ईबीआईटीडीए पिछले साल की समान अवधि के मुकाबले 32.9 प्रतिशत बढ़कर 22,570 करोड़ रुपये हो गया है। कंपनी ने सोमवार को यह जानकारी दी। कंपनी का मुनाफा बढ़ने की वजह सोलर और विंड मैन्युफैक्चरिंग के साथ एयरपोर्ट और रोड जैसे नए कारोबार का बेहतर प्रदर्शन है। अदाणी ग्रुप की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि ग्रुप के कोर इन्फ्रास्ट्रक्चर कारोबार (अदाणी एंटरप्राइजेज के तहत आने वाले यूटिलिटी, ट्रांसपोर्ट और

इन्फ्रा बिजनेस) ईबीआईटीडीए अप्रैल-जून की अवधि में सालाना आधार पर 41.6 प्रतिशत बढ़ा है। कंपनी ने आगे कहा कि 12 महीने का ट्रेलिंग (टीटीएम) ईबीआईटीडीए सालाना आधार पर 44.9 प्रतिशत बढ़कर 79,180 करोड़ रुपये हो गया है। कंपनी ने अपने बयान में कहा कि अदाणी एंटरप्राइजेज के तहत आने वाले बिजनेस जैसे सोलर एवं विंड मैन्युफैक्चरिंग, ग्रीन हाइड्रोजन चेन, एयरपोर्ट्स और रोड सेक्टर का प्रदर्शन मजबूत बना हुआ है। ग्रुप आधार पर इनका ईबीआईटीडीए में योगदान 13.3 प्रतिशत है, जो कि एक साल पहले समान अवधि में 7.2 प्रतिशत था। अदाणी एंटरप्राइजेज के तहत आने वाले इन्फ्रास्ट्रक्चर बिजनेस का ईबीआईटीडीए सालाना आधार पर 69.98 प्रतिशत बढ़ा है। सोलर मॉड्यूल मैन्युफैक्चरिंग बिजनेस की बिक्री में जून तिमाही में सालाना आधार पर 125 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। यूटिलिटी सेगमेंट का ईबीआईटीडीए 41.44 प्रतिशत बढ़ा है। अदाणी पावर का ईबीआईटीडीए सालाना आधार पर 53.6 प्रतिशत और बिक्री 38 प्रतिशत बढ़ी है। अदाणी ग्रीन एनर्जी का प्रदर्शन भी शानदार रहा है। जून तिमाही में कंपनी के ईबीआईटीडीए में 30.3 प्रतिशत का उछाल दर्ज किया गया।

# बेंगलुरु के 16 वर्षीय अभय मोहन ने जीती फॉर्मूला 1600 नेशनल चैंपियनशिप

**चेन्नई( एजेंसी )।** बेंगलुरु के 16 साल के प्रतिभाशाली ड्राइवर अभय मोहन ने संपन्न हुए एमएमएससी इंडियन नेशनल कार रेसिंग चैंपियनशिप के चौथे और अंतिम राउंड में लगातार दस जीत दर्ज कर प्रतिष्ठित फॉर्मूला 1600 नेशनल चैंपियनशिप जीत ली। यह उनका पहला राष्ट्रीय खिताब भी है। 2022 के जूनियर नेशनल कार्टिंग चैंपियन अभय इस साल ही सिंगल सीटर रेसिंग में आए थे। उन्होंने शानदार प्रदर्शन करते हुए पूरी तरह से अपना दबदबा बना लिया। अंतिम राउंड की आखिरी रेस से पहले तक उनका हर रेस में जीत का सिलसिला कायम रहा। अपनी इस उपलब्धि के बाद अभय मोहन ने कहा, सिंगल सीटर फॉर्मूला कारों में यह मेरा पहला साल है, लेकिन यह एक यादगार सीजन रहा है। नेशनल चैंपियन बनना और लगातार 10 जीत हासिल करना वाकई बहुत अच्छा लग रहा है। इतनी मेहनत के बाद, मुझे अपने माता-पिता, परिवार, दोस्तों और जेए मोटरस्पोर्ट्स का मिला समर्थन अद्भुत रहा। मैं उन सभी और अपने मैकेनिक्स को उनके शानदार काम के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। उन्होंने लगातार 10 रेस जीती और केवल चैंपियनशिप जीतने के बाद ही अंक गंवाए। कुल 12 रेस वाली चैंपियनशिप में उन्होंने अपनी ड्राइविंग स्किल से अन्य प्रतिस्पर्धियों को पीछे छोड़ दिया। मुंबई के दो ड्राइवर जहान कमिसारियाट और राज बखरू चैंपियनशिप में दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। 2008 में जन्मे अभय ने रेसिंग पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एनआईओएस होम स्कूलिंग की ओर रुख किया था। 12 में से 11 रेस जीतकर उन्होंने 300 में से 293 अंक हासिल किए। अंतिम रेस को रेड फ्लैग किया गया और फिर से पिट लेन से शुरू किया गया। इस रेस में अभय ने अपना धैर्य बनाए रखा और अपनी पहली चैंपियनशिप के अंत में जीत हासिल की। अभय ने कहा, मुझे खुशी है कि मुझे यहां रेस करने का मौका और सुविधाएं मिली। मैं एमआरएफ और एमएमएससी को धन्यवाद देता हूं।

# सोनी ने बेहतरीन और सबसे प्रामाणिक सिनेमाई अनुभव प्रदान करने के लिए पेश किया ब्रेविया 9 जो है अब तक की सबसे शानदार 4के टेलीविज़न सीरीज़

**नई दिल्ली:** सोनी इंडिया को अपने ताज़ातरीन फ्लैगशिप मिनी एलईडी टेलीविज़न सीरीज़ ब्रेविया 9 का अनावरण करते हुए गर्व हो रहा है, जो एक्सआर बैकलाइट मास्टर ड्राइव से लैस है। यह टेलीविज़न सीरीज़ बेहतरीन इमेज, डीप ब्लैक, शानदार कंट्रास्ट और सुंदर नेचुरल कलर प्रदान कर सकती है। एडवांस्ड एआई प्रोसेसर एक्सआर से चलने वाली यह अत्याधुनिक टेलीविज़न सीरीज़ इमर्सिव अनुभव प्रदान करने के लिए तैयार की गई है, जो होम एंटरटेनमेंट में एक नया बेंचमार्क स्थापित करती है। ब्रेविया 9 सीरीज़ वैसा ही इमर्सिव अनुभव प्रदान करती है, ठीक उसी तरह जैसे फिल्म निर्माताओं के लिए सोनी के प्रोफेशनल मॉनिटर में इस्तेमाल की जाने वाली बैकलाइट कंट्रोल टेक्नोलॉजी प्रदान करती है। एक्सआर बैकलाइट मास्टर ड्राइव, अपने अनूठे लोकल डिमिंग एल्गोरिदम के साथ, हज़ारों एलईडी को सटीक रूप से नियंत्रित करता है ताकि सबसे ज़्यादा मांग वाले दृश्यों में भी सही मायने में ऑथेंटिक कंट्रास्ट और शैडो डिटेल को संरक्षित किया जा सके। ब्रेविया 9 में हाई पीक ल्यूमिनेंस के साथ, शानदार धूप से जगमगाते, बर्फ से ढके पहाड़ के परिदृश्य की कल्पना करें। ये असाधारण रूप से ब्राइट टेलीविज़न, अभूतपूर्व चमक के साथ, सबसे दिन के उजाले में भी, पूरी डिटेल के साथ प्राकृतिक दृश्यों को हू-ब-हू पेश कर सकते हैं। नई ब्रेविया 9 सीरीज़ 189 सेमी (75) और 215 सेमी (85) स्क्रीन साइज़ में उपलब्ध होगी। ब्रेविया 9 सीरीज़ में एडवांस्ड एआई प्रोसेसर एक्सआर देखने और सुनने की मानवीय धारणा को समझकर व्यूइंग में क्रांति लाता है। इस प्रोसेसर में एक सीन रेकग्निशन सिस्टम है जो सटीकता के साथ डेटा का पता लगाता है, उसका विश्लेषण करता है और ठीक उसी तरह पिक्चर दिखाता है जैसा सिनेमा बनाने वाले दिखाना चाहते हैं। इस तरह शानदार डेप्थ, कंट्रास्ट और खिले-खिले रंग दीखते हैं, जिससे फिल्म, शो और गेम अपेक्षाकृत अधिक आकर्षक बन जाते है। ब्रेविया 9 होम एंटरटेनमेंट के लिए एक नया मानक स्थापित करता है, जो आपके लिविंग रूम को सिनेमा के स्वर्ग में बदल देता है। ब्रेविया 9 सीरीज़ स्टूडियो कैलिब्रेटेड मोड के साथ आती है, जो आपके घर में ही फिल्म कंटेंट क्रिएटर की मंशा के अनुरूप इमेज क्वालिटी प्रदान करती है। पहले से मौजूद नेटफ्लिक्स अडेप्टिव कैलिब्रेटेड मोड और सोनी पिक्चर्स कोर (जिसे पहले ब्रेविया कोर था) कैलिब्रेटेड मोड के अलावा, अब प्राइम वीडियो कैलिब्रेटेड मोड भी है। यह नया मोड ग्राहकों को प्रीमियम मनोरंजन का आनंद लेने के और भी तरीके प्रदान करता है, जिसकी कल्पना कंटेंट तैयार करने वाले ने की होगी। प्राइम वीडियो कैलिब्रेटेड मोड के साथ, दर्शक बेहतरीन पिक्चर क्वालिटी का आनंद ले सकते हैं, जो मूवी, सीरीज़ और लाइव स्पोर्ट्स के लिए अपने आप एडजस्ट हो जाती है। इस क्रम में लाइव स्पोर्ट्स पहली बार शामिल हो रहा है। ब्रेविया 9 सीरीज़ आईमैक्स से बेहतर है और डॉल्बी विज़न0 और डॉल्बी एटमॉस0 दोनों को सपोर्ट करती है, जो बेहतरीन ब्राइटनेस, शार्प कंट्रास्ट, शानदार कलर और इमर्सिव साउंड का अनुभव प्रदान करती है।

# टाटा प्ले की नई सेवा - 'टाटा प्ले सुपरहिट सीरियल्स' वापस ले कर आया है स्टार प्लस के कई प्रतिष्ठित धारावाहिक

टाटा प्ले ले कर आया है एक नई सेवा, टाटा प्ले सुपरहिट सीरियल्स जो पुराने दिनों की याद दिलाएगी। यह सेवा सन 2000 के प्रतिष्ठित टीवी कार्यक्रम दर्शकों के लिए लेकर आई है। स्टार प्लस के सौजन्य से पेश की गई यह सेवा चैनल के सबसे लोकप्रिय कार्यक्रम दिखाएगी, जिन्होंने लाखों लोगों के दिलों को छू लिया था और आज भी लोकप्रिय बने हुए हैं। दर्शकों द्वारा इन्हें देखने की मांग की जा रही थी क्योंकि अब वो किसी भी टीवी चैनल पर प्रसारित नहीं होते हैं। टाटा प्ले सुपरहिट सीरियल उस दशक में राज करने वाले आकर्षक कार्यक्रमों की श्रृंखला लेकर आया है। मजबूत इच्छाशक्ति वाले महिला किरदारों और जटिल पारिवारिक कहानियों, जैसे 'कहानी घर घर की', 'कसौटी जिंदगी के', 'कुमकुम - एक प्यारा सा बंधन', 'कहीं किसी रोज' तथा 'हातिम' जैसे ऐतिहासिक किरदारों और कहानियों से लेकर प्रेम कहानी, 'नाव्या' तक इस सेवा द्वारा साल 2000 के समय के स्टार प्लस के लोकप्रिय कार्यक्रम दिखाए जाएंगे। इस लॉन्च के बारे में टाटा प्ले की चीफ कमर्शियल एवं कंटेंट ऑफिसर, पल्लवी पुरी ने कहा, ''हमारी शोध में सामने आया कि इन लोकप्रिय क्लासिक कार्यक्रमों की काफी मांग है। कसौटी, कहानी आदि जैसे प्रतिष्ठित कार्यक्रमों को बड़ी संख्या में दर्शक याद करते हैं। हमने उनकी इस जरूरत को समझा और ये दिलचस्प कार्यक्रम फिर से लेकर आए हैं, जो आज तक दर्शकों के मन में अपनी जगह बनाए हुए हैं। हमने टाटा प्ले सुपरहिट सीरियल्स के साथ परिवारों को ये सदाबहार कार्यक्रम दिखाने के लिए स्टार प्लस के साथ सहयोग किया है।''

दैनिक
# विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, बुधवार 21 अगस्त 2024

## छात्राएं आज बाल आश्रम में मनाएंगी रक्षाबंधन

**रायपुर (विश्व परिवार)।** प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी छत्रपति शिवाजी स्कूल, पुरानी बस्ती की छात्राओं द्वारा कल रक्षाबंधन का पर्व कचहरी चौक स्थित बाल आश्रम के बच्चों के साथ मनाया जाएगा। पिछले 17 वर्षों से प्रतिवर्ष यहां की छात्राएं भाई बहनों के इस पवित्र पर्व को बाल आश्रम के छात्रों के साथ मनाती हैं। छात्राओं द्वारा कल 12 बजे आश्रम में छात्रों को रक्षा सूत्र बांधकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की जाएगी। साथ ही छात्राएं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत करेंगी।



## संक्षिप्त समाचार

### 47वीं अखिल भारतीय रेलवे सुरक्षा बल योग प्रतियोगिता-2024 का शुभारंभ

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर मंडल के मंडल मुख्यालय रायपुर मे 47वीं अखिल भारतीय रेलवे सुरक्षा बल योग प्रतियोगिता-2024 का आयोजन दिनांक 20.08.2024 से किया गया है, यह योग प्रतियोगिता डब्लुआरएस रेलवे कॉलोनी स्थित सामुदायिक भवन मे हो रही है। इस प्रतियोगिता को उम्र के अनुसार 06 केटेगरीयों मे रखा गया है - 18-21 वर्ष, 22-25 वर्ष, 26-30 वर्ष, 31-35 वर्ष, 36-45 वर्ष एवं 45 वर्ष से अधिक उम्र। दिनांक 20.08.2024 को इस प्रतियोगिता के प्रतिभागियो के द्वारा अपनी कला के हुनर को सम्माननीय जूरी मेंबर और आम लोगो के सामने के प्रस्तुत किया। इसके माध्यम से रेलवे सुरक्षा बल के बल सदस्यों, रेल कर्मचारीयों एवं आम नागरिकों को अपने जीवन मे योग को अपनाकर जीवनशैली मे सुधार करने और स्वस्थ रहने का संदेश दिया जा रहा है ''करो योग रहो निरोग'। इस अवसर पर रायपुर रेल मंडल के अपर मंडल रेल प्रबंधक सहित रेलवे सुरक्षा बल के अधिकारी उपस्थित रहे।

### रायपुर मंडल में अलार्म चैन पुलिंग की घटनाओं की रोकथाम हेतु 'ऑपरेशन समयपालन'

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** रेलवे सुरक्षा बल, रायपुर मंडल के द्वारा ट्रेनो मे हो रहे अलार्म चैन पुलिंग की घटनाओं की रोकथाम हेतु ''ऑपरेशन समयपालन'' के तहत लगातार अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम मे 1 अगस्त से 19 अगस्त 2024 तक 248 ड्राईव चलाकर 68 अलार्म चैन पुलिंग का दुरूपयोग करने वाले व्यक्तियों के विरूद्ध रेल अधिनियम के तहत विधिक कार्यवाही की गई। इसी प्रकार रेल यात्रियों की सुरक्षा एवं संरक्षा हेतु ''मिशन यात्री सुरक्षा'' के तहत अभियान चलाया जा रहा है। जिसके तहत यात्री सामानो की चोरी के मामलो के अपराधियों पर नजर रखने एवं रेल परिक्षेत्र मे इनकी उपस्थिति पाये जाने पर शासकीय रेल पुलिस/स्थानीय पुलिस से समन्वय कर उनके विरूद्ध विधिक कार्यवाही किया जा रहा है। इसी क्रम मे रेलवे सुरक्षा बल रायपुर मंडल के द्वारा 1 अगस्त से 19 अगस्त 2024 तक 03 आदतन पॉकेटमार/यात्री सामानो की चोरी के अपराधियों को पकड़कर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता-2023 (बी.एन.एस.एस.) के तहत कार्यवाही हेतु संबंधित शासकीय रेल पुलिस/स्थानीय पुलिस को सुपुर्द किया गया है।

**रेल यात्रियों की सुरक्षा एवं संरक्षा हेतु 'मिशन यात्री सुरक्षा' अभियान**

# पॉवर कंपनी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु 12 विद्युतकर्मियों को राज्य स्तरीय पुरस्कार

**चेयरमेन पी. दयानंद (आईएएस) ने किया पुरस्कृत**

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए 12 विद्युत कर्मियों को चेयरमेन श्री पी. दयानंद (आई.ए.एस.) ने पुरस्कृत किया। इसमें आंधी-बारिश और रात के अंधेरे में जान जोखिम में डालकर बिजली बहाल करने वाले विद्युतकर्मी है तो अपने सूझबूझ से जनरेशन प्लांट में पानी बचाने वाले कर्मी भी शामिल हैं। उन्हें श्री पी.दयानंद ने नगद पुरस्कार के साथ पदक व प्रशस्ति-पत्र भी प्रदान किया। मुख्यालय में आयोजित अलंकरण समारोह में प्रबंध निदेशकगण श्री आर.के.शुक्ला, श्री एस.के.कटियार, श्री भीमसिंह कंवर एवं कार्यपालक निदेशक मानव संसाधन श्री अशोक कुमार वर्मा, अति. मुख्य अभियंता श्री विनोद कुमार अग्रवाल उपस्थित थे।

जनरेशन कंपनी के श्री जैनेन्द्र कुमार गायकवाड, अधीक्षण अभियंता (मड़वा) को तृतीय स्लरी लाइन के निर्माण के फलस्वरूप 5.17 लाख मीट्रिक टन वेट ऐश का निस्तारण एवं 25.93 लाख लीटर पानी को रिकवर करके खपत में अभूतपूर्व कमी के लिए पुरस्कृत किया गया। श्री आलोक रत्न सक्सेना, कार्यपालन अभियंता (कोरबा) को विद्युत गृह में इकाई क्रमांक-2 के पैनल चार्ज कर यूनिट 2 की संभावित ट्रीपिंग को बचाने के उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया।

ट्रांसमिशन कंपनी के श्री प्रवीण कुमार शुक्ला, सहायक अभियंता (भिलाई) व्दारा 220 केवी. उपकेन्द्र बेमेतरा एवं राजनांदगांव में तथा 132 केवी. उपकेन्द्र धमतरी के स्थापना परीक्षण एवं ऊर्जीकरण करने के लिए उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कृत किया गया। श्री भोजराम साहू, परिचारक श्रेणी-दो (रायपुर) को 132 केवी. भानुप्रतापुर-पंखाजूर लाइन के टावर को विषम परिस्थितियों में डिस्मेंटलिंग एवं इरेक्शन का कार्य अल्प समय में पूर्ण कर विद्युत आपूर्ति को सुचारू रूप से बहाल करने के उत्कृष्ट कार्य के लिये पुरस्कृत किया गया। डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के श्री प्रेमलाल साहू, परीक्षण सहायक श्रेणी-एक (रायपुर) को 33 केवी, 11 केवी. के 25 से अधिक पोल रिपेयर कर लगभग रू. 32 लाख 78 हजार की आर्थिक क्षति से बचाने के लिए सम्मानित किया गया। श्री साहू ने 19 जुलाई की रात को आंधी-बारिश के बीच खैरखूंट उपकेन्द्र के पॉवर ट्रांसफार्मर को ठीक करने का भी उल्लेखनीय कार्य किया है। श्री महेश कुमार जायसवाल, कनिष्ठ अभियंता (चांपा) को वितरण केन्द्र के ट्रांसफार्मर विफलता के दर को 12 प्रतिशत से घटाकर 1 प्रतिशत करने तथा विद्युत लाइन के प्रभावी ढंग से रख-रखाव लिये पुरस्कृत किया गया।

इसी तरह केन्द्रीय कार्यालय स्तर पर छह कर्मियों को उत्कृष्ट कार्य करने के लिए सम्मानित किया गया। जनरेशन कंपनी के श्री अवनीश जोशी, कार्यपालन अभियंता को गंगरेल जल विद्युत गृह के इकाई क्रमांक-2 को पुन: संचालन में लाने तथा स्थापित प्रोटेक्शन एवं इलेक्ट्रिकल सिस्टम को परीक्षण कर खामियों को दूर करने हेतु उत्कृष्ट कार्य के लिये पुरस्कृत किया गया। श्री प्रकाश प्रसाद शर्मा, अनुभाग अधिकारी द्वारा बैंक एवं वित्त प्रबंधक कार्यालय के अंतर्गत, बैंक संबंधी कार्यो को समय पर निष्पादित करने हेतु उत्कृष्ट कार्य के लिये पुरस्कृत किया गया।

ट्रांसमिशन कंपनी के श्री ओम प्रकाश, सहायक अभियंता (भिलाई) व्दारा नये 3×105 एमव्हीए. ट्रांसफॉर्मर के इरेक्शन, वॉयरिंग, टेस्टिंग एवं कमीशनिंग का कार्य अल्प समय में पूर्ण करने के लिये पुरस्कृत किया गया। श्री एम श्रीणु, कार्यालय सहायक श्रेणी-दो, अति उच्चदाब की लाइनों एवं उपकेन्द्रों के निर्माण व संधारण में लगने वाले उपकरणों एवं सामग्रियों को उपलब्ध कराने हेतु अल्पसमय में संपूर्ण करने के लिये पुरस्कृत किया गया।

डिस्ट्रीब्यशन कंपनी के श्री के.के.श्रीवास्तव, कार्यपालन अभियंता द्वारा 2023-24 के दौरान अतिशेष विद्युत के विक्रय से कंपनी को करोड़ों रूपये का राजस्व प्राप्त करने के लिये पुरस्कृत किया गया। श्री मुकेश कुमार पैकरा कार्यालय सहायक श्रेणी-तीन द्वारा कार्यालय में अनुभाग अधिकारी व कार्यालय सहायकों के पद रिक्त होते हुए भी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के वेतन देयक तथा अधिकारियों की व्यक्तिगत जानकारियों को समय पर संपादित करने के लिये पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन अतिरिक्त महाप्रबंधक श्री उमेश कुमार मिश्र ने किया।

# प्रधानमंत्री जनमन : पीवीटीजी परिवारों को योजनाओं का लाभ दिलाने मेगा ईवेंट और आईईसी कैंपेन

**आगामी सितम्बर माह में राज्य के 18 जिलों में होगा वृहद आयोजन**

**प्रधानमंत्री मोदी राज्य स्तरीय मेगा ईवेंट में होंगे वर्चुअल रूप से शामिल**

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के पहल पर छत्तीसगढ़ में विशेष पिछड़ी जनजाति बहुल बसाहटों में राज्य और केन्द्र सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए विशेष अभियान चलेगा। आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग के प्रमुख सचिव श्री सोनमणि बोरा द्वारा राज्य के 18 जिलों में आगामी सितम्बर माह में इसके लिए मेगा ईवेंट और आईईसी कैंपेन चलाने के लिए दिशा-निर्देश दिए गए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सितंबर 2024 के प्रथम सप्ताह में ऐसे आयोजनों में वर्चुअल रूप से शामिल होकर विशेष पिछड़ी जनजाति परिवारों के साथ संवाद करेंगे।

आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग के प्रमुख सचिव श्री सोनमणि बोरा ने बताया कि द्वारा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी पीएम जनमन योजना के तहत झारखंड में आयोजित किए जा रहे हैं राष्ट्रीय मेगा ईवेंट शामिल होंगे तथा देश के सभी पीवीटीजी बसाहट वाले जिलों को संबोधित करते हुए टू वे कनेक्टिविटी के माध्यम से संवाद स्थापित करेंगे। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ में विशेष पिछड़ी जनजाति वाले किसी एक जिले में राज्य स्तरीय मेगा ईवेंट के लिए चिन्हित किया जाएगा।

सोनमणि बोरा ने बताया कि मेगा ईवेंट के अतिरिक्त बाकी सभी पीएम-जनमन के जिलों में जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित होंगे। इन सभी आयोजनों में झारखण्ड राज्य से प्रधानमंत्री का संबोधन और संवाद सुचारु रुप से देखने और सुनने के लिए टू-वे-कनेक्टिविटी की आवश्यक व्यवस्थाएं की जा रही है। इन आयोजनों में स्थानीय विधायकगण और अन्य जनप्रतिनिधि शामिल होंगे। कार्यक्रम में केन्द्र और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत विशेष पिछड़ी जनजाति को लाभान्वित किया जाएगा। इस दौरान सास्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। सोनमणि बोरा ने बताया कि लाभार्थी सतृप्ति शिविरों का आयोजन 23 अगस्त 2024 से 10 सितंबर 2024 तक किया जाना है।

# राज्य सहकारी विकास समिति की बैठक सम्पन्न

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन की अध्यक्षता में आज यहां मंत्रालय महानदी भवन में राज्य सहकारी विकास समिति की बैठक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सम्पन्न हुई। बैठक में सहकारिता मंत्रालय भारत सरकार की सहकार से समृद्धि की परिकल्पना के अंतर्गत सहकारिता के क्षेत्र में संचालित विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन की प्रगति की समीक्षा की गई। बैठक में छत्तीसगढ़ राज्य में सहकारिता के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों के संबंध में विस्तृत चर्चा हुई। कृषि, मत्स्य पालन, वन सहित अन्य विभागों के अंतर्गत सहकारी समितियों के माध्यम से कार्य किए जा रहे है। मुख्य सचिव ने सहकारिता विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए है कि सहकारिता क्षेत्र के अंतर्गत काम करने वाले सदस्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए है कि सहकारी समितियों के अंतर्गत निर्मित गोदामों का उपयोग सुनिश्चित किया जाए। बैठक में अधिकारियों ने बताया कि प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों की आमदनी में इजाफा के लिए भारत सरकार द्वारा इन समितियों को कई नये काम दिए जा रहे है। जिसमें जन औषधी केन्द्र, कामन सर्विस सेंटर, पेट्रोल पंप संचालन, गैस ऐजेंसी का संचालन इत्यादि शामिल हैं। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से आयोजित इस बैठक में सहकारिता विभाग के सचिव श्री सी.आर. प्रसन्ना, कृषि विभाग की सचिव श्रीमती शहला निगार, संचालक पशुधन विकास विभाग डॉ. प्रियंका शुक्ला, विशेष सचिव वित्त श्रीमती शीतल शाश्वत वर्मा सहित सहकारिता एवं कृषि विभाग के अधिकारी शामिल हुए।

# छत्तीसगढ़िया सर्व समाज महासंघ छत्तीसगढ़ एवं सर्व समाज के पदाधिकारियों ने आरक्षण वर्गीकरण के आदेश के विरोध में भारत बंद को लेकर छत्तीसगढ़ चेम्बर से मांगा समर्थन

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, महामंत्री अजय भसीन, कोषाध्यक्ष उत्तम गोलछा, कार्यकारी अध्यक्ष राजेन्द्र जग्गी, विक्रम सिंहदेव, राम मंधान, मनमोहन अग्रवाल ने बताया कि छत्तीसगढ़िया सर्व समाज महासंघ छत्तीसगढ़ एवं सर्व समाज के पदाधिकारी आज चेम्बर भवन, बाम्बे मार्केट, रायपुर में माननीय उच्चतम न्यायालय के द्वारा जारी आरक्षण वर्गीकरण के आदेश के विरोध में भारत बंद के आव्हान को लेकर छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज से समर्थन मांगने पहुंचे।

चेम्बर प्रदेश अयक्ष श्री अमर पारवानी ने बताया कि बैठक में चेम्बर के पदाधिकारी के साथ सर्व समाज के पदाधिकारियों की गहन चर्चा हुई। चूंकि यह विषय भारत बंद को लेकर था अत: चेम्बर से संबद्ध राष्ट्रीय संगठनों से भारत बंद के विषय पर चर्चा की गई जिसमें राष्ट्रीय संगठनों ने भारत बंद को लेकर अनभिज्ञता जताते हुए समर्थन नहीं दिया।

चूंकि चेम्बर से प्रदेश के छोटे-छोटे व्यापारी, रेहड़ी पटरी, एवं व्यापारिक संगठन जुड़े हुए हैं जो फल-सब्जी, दूध एवं अन्य कच्चे सामान का व्यवसाय करते हैं। बिना पूर्व सूचना के आकस्मिक बंद से उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। चेम्बर की परंपरा के अनुसार अल्प समय में बिना पूर्व सूचना अथवा व्यापारिक संघों की बैठक लिये भारत बंद का समर्थन करने में असमर्थ हैं।

बैठक में सर्व समाज से सतजन सिंह बीपीएफ अध्यक्ष, श्याम जी प्रदेश अध्यक्ष बसपा, लता गेड़ाम प्रदेश सचिव बसपा, आर.पी.भतपहरी वरिष्ठ उपाध्यक्ष सर्व समाज, बी.एस.रावटे कार्यकारी अध्यक्ष सर्व आदिवासी समाज, एम.पी.अहिरवार, ओ.पी.बाजपेयी, बेनीराम जी, अधिवक्ता संजय गजभिये।

चेम्बर सलाहकार जितेन्द्र दोशी, परमानंद जैन, प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, कोषाध्यक्ष उत्तमचंद गोलछा, कार्यकारी अध्यक्ष राजेन्द्र जग्गी, विक्रम सिंहदेव, राम मंधान, कार्यकारी महामंत्री विकास आहूजा, उपाध्यक्ष-हीरा माखीजा, कन्हैया गुप्ता, संजय जादवानी, जय नानवानी, मंत्री-शंकर बजाज, प्रशांत गुप्ता आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

### जंगल सफारी में 24 अगस्त को होगा तितलियों पर वॉक और टॉक का आयोजन

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** नवा रायपुर स्थित नंदनवन जंगल सफारी में जैव विविधता संरक्षण सोसाइटी, छत्तीसगढ़ विज्ञान सभा, और पाथ आईएएस अकादमी के सहयोग से 24 अगस्त को तितलियों पर वॉक और टॉक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम प्रकृति प्रेमियों, छात्रों, शोधकर्ताओं और जन मानस में तितलियों की सुंदरता और उनके पर्यावरणीय महत्व के साथ-साथ जैव विविधता और पर्यावरण संरक्षण में जागरूकता के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में सुबह 7 बजे से दोपहर 10.30 बजे तक विशेषज्ञों द्वारा तितलियों की विभिन्न प्रजातियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी जिसमें प्रतिभागियों को तितलियों की पहचान और उनके संरक्षण के व्यावहारिक अनुभव से रूबरू कराया जाएगा।

# कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने नो योर आर्मी प्रदर्शनी की तैयारियों का लिया जायजा

**मंच निर्माण, आंगुतकों के ठहरने की व्यवस्था समेत अन्य सुविधाएं को सुनिश्चित करने दिए निर्देश**

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने आज साइंस कॉलेज मैदान में आयोजित नो योर आर्मी प्रदर्शनी की तैयारियों का जायजा लेने पहुंचे। कार्यक्रम स्थल पर कलेक्टर डॉ. सिंह ने मंच निर्माण के लिए स्थल चयन, आंगुतकों के ठहरने की व्यवस्थाए आमंत्रित नागरिकों के बैठने की व्यवस्था समेत अन्य तैयारियों के निर्देश दिए। कलेक्टर डॉ. सिंह ने आर्मी के जवानों के ठहरने की व्यवस्था भी देखी। साथ ही स्पोर्टस स्टेडियम में बुनियादी सुविधाओं को सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर अपर कलेक्टर श्री देवेंद्र पटेल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री दौलत राम पोर्ते समेत आर्मी के अधिकारी समेत अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे। गौरतलब है कि 5 और 6 सितंबर को नो यूअर आर्मी प्रदर्शनी का आयोजन साइंस कॉलेज मैदान में किया जाएगा। इस कार्यक्रम में प्रदर्शित टैंक, तोप, हवा में मार करने वाले हथियार, ब्रिजिंग इक्विपमेंट सहित अन्य हथियारों के बारे में यहां के लोगों को देखने और जानने का मौका मिलेगा। इसके साथ ही डॉग शो, आर्मी में बजने वाले आकर्षक बैंड शो, मार्शल म्यूजिक प्रोग्राम का भी आयोजन किया जाएगा।

# कृषि विश्वविद्यालय में कृषि अभियंताओं के राष्ट्रीय सम्मेलन एवं संगोष्ठी का आयोजन 29 और 30 अगस्त 2024 को

**दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में जुटेंगे देश भर के कृषि अभियंता**

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर में 'सतत विकास के लिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार हेतु कृषि अभियंताओं का योगदान' विषय पर 29 से 30 अगस्त 2024 को कृषि अभियंताओं का 36वां राष्ट्रीय सम्मेलन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजिनियर्स (इंडिया) छत्तीसगढ़ स्टेट सेन्टर, रायपुर एवं स्वामी विवेकानंद कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, कृषि अभियांत्रिकी संकाय, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। इस राष्ट्रीय सम्मेलन सह संगोष्ठी में वर्तमान समय में कृषि के विकास हेतु बहु प्रासंगिक विषयों जैसे - इंजीनियरिंग इनपुट का संरक्षण और प्रबंधन, फार्म मशीनरी, कृषि प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन, गैर पारंपरिक ऊर्जा स्त्रोत, मिट्टी और जल संरक्षण और प्रबंधन'' आदि पर विस्तृत चर्चा होगी एवं शोध पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे। इनमें मुख्यत: कृषि में जुताई-बुआई से लेकर कटाई-मड़ाई एवं प्रसंस्करण की क्रियाओं का मशीनीकरण, ड्रोन का उपयोग, रिमोट सेंसिंग एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग, कृषि बागवानी में अत्याधुनिक तकनीकों जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस रोबोटिक्स एवं आई.ओ.टी. का प्रयोग आदि विषयों पर सार्थक संवाद, प्रदर्शन, प्रस्तुतिकरण एवं विचारों का आदान-प्रदान होगा। जलवायु परिवर्तन एवं कृषि कार्यों के समय पर संपादन में कृषि श्रमिकों की घटती उपलब्धता के परिपेक्ष्य में कृषि अभियंताओं के बढ़ते महत्व एवं कस्टम हायरिंग जैसे क्षेत्रों में उद्यमिता विकास की असीम संभावनाओं पर प्रकाश डाला जाएगा। इस कार्यक्रम में अभियंता, उद्यमी, वैज्ञानिक, उद्योगपति, शोधकर्ता, प्रगतिशील कृषक एवं देश के विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं के विद्वत्तजन शामिल हांगे तथा किसानों की आय बढ़ाने के लिए यथोचित रणनीति को अंतिम रूप देने देंगे।

कार्यक्रम के आयोजन सचिव एवं स्वामी विवेकानंद कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. विनय कुमार पाण्डेय ने बताया कि इस राष्ट्रीय कार्यक्रम में इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), कोलकाता के उपाध्यक्ष डॉ. नूतन दास, आई.आई.टी. खड़गपुर के पूर्व प्राध्यापक एवं सी.एस.वी.टी.यू., भिलाई के पूर्व कुलपति डॉ. बी.सी. मल, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल, परभणी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. इंद्रमणी, डॉ. सिंह कुलपति मेरठ विश्वविद्यालय, डॉ. गौड़ कुलपति, वैशाली, बिहार, डॉ. अम्बष्ठ अध्यक्ष, सेन्ट्रल ग्राउंड वाटर बोर्ड, भारत सरकार, नई दिल्ली, डॉ. सयाली, सचिव और महानिदेशक, इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), कोलकाता, डॉ. ए.के. सिंह, सहायक महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, भारत सरकार, नई दिल्ली डॉ. रमना राव, निदेशक एन.आई.टी., रायपुर, डॉ. मेहता निदेशक, केन्द्रीय कृषि इंजीनियरिंग संस्थान, भोपाल, सहित देश भर के विख्यात विषय विशेषज्ञ शामिल होंगे।

# सबको अपने स्नेह के बंधन में बांध रहे हमारे विष्णु भैया

**रायपुर ( आरएनएस )।** नगर पालिक निगम रायपुर में सफ़ाई मित्र के रूप में कार्य करने वाली हेमा दीदी,सती बाई दीदी,नीलू दीदी और बाहरीन दीदी के लिए बहुत ख़ास बन गया जब मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने उनसे बड़े स्नेह से राखी रखिए बँधवाई। मुख्यमंत्री जी ने महिलाओं की सराहना करते हुए कहा कि आप सभी हमारे शहर को साफ़ रखती हैं। श्री साय ने महिलाओं के सेवा भाव के लिए उनका आभार भी जताया।

महिलाओं ने अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें मुख्यमंत्री निवास में बहुत आदर सम्मान मिला। मुख्यमंत्री जी ने बड़े स्नेह से उनसे बात की और उनका हालचाल जाना। नीलू दीदी की खुशी देखते बन रही थी उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री जी ने उनसे राखी बँधवाई उनके हाथ से मिठाई खाई और बहुत स्नेह से बात की तो उन्हें बहुत अच्छा लगा।

महिलाओं को यक़ीन नहीं हो रहा कि उन्हें रक्षाबंधन के त्योहार के दिन मुख्यमंत्री जी को राखी बांधने का मौक़ा मिलेगा। सभी महिलाओं ने बताया कि उन्हें महतारी वंदन योजना का लाभ मिल रहा है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में काफ़ी सुधार हुआ है। इस योजना के लिए महिलाओं ने मुख्यमंत्री जी का आभार जताया।

लोन लेने के लिए ITR बनवायें मात्र 500/- में
शेखर गुप्ता
ONLYTDS.COM
ITR GST
हमारे TAX Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
G.S.T. रिटर्न
Food Licence
इन्कम TAX फाईल
M.S.M.E. रजिस्ट्रेशन
TDS रिफंड
प्रोजेक्ट रिपोर्ट
IT नोटिस
डिजिटल सिग्नेचर
9300755544, 8878655544

राइनोप्लास्टी
नाक को सही (रिशेपिंग) करना
कालड़ा बर्न एवं प्लास्टिक कॉस्मेटिक सर्जरी सेंटर
आर.के.सी.के सामने, चौबे कालोनी एवं पचपेढ़ी नाका, धमतरी रोड, कलर्स मॉल के पास, रायपुर
कॉल : 9827143060/8871003060
Ajay 9827144371

सिराज इलेक्ट्रिकल्स
इलेक्ट्रिक कार्य के लिए अनुभवी लड़कों की
तत्काल आवश्यकता है
पता- : कचना, विधानसभा रोड, रायपुर
MO. : 7081177718, 9301248947

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354